सुबह सवेरे

A Daily News Magazine

इंदौर

मंगलवार, 21 जुलाई, 2026

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 289, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

'चढ़ावा चोरी कांड' का यूपी विस चुनाव पर कितना होगा असर?

प्रशांत श्रीवास्तव

सीतापुर/हरदोई/बाराबंकीः 'हर भक्त के लिए यह दुख की बात है। हम श्रद्धा से दान देते हैं। अगर वही पैसा चोरी हो जाए तो दर्द तो होगा ही।' सीतापुर जिले के पूरनपुर गांव के 28 वर्षीय राज नारायण शुक्ल अयोध्या राम मंदिर में दान की कथित चोरी के मामले पर बात करते हुए दुखी नजर आए। उन्होंने भी दो बार दान दिया था। लेकिन मंदिर में जो हुआ, उससे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर उनका भरोसा नहीं डगमगाया। उन्होंने बातचीत में कहा, 'यह मामला ट्रस्ट चलाने वाले लोगों का है, बीजेपी का नहीं। योगी कार्रवाई करेंगे। जो भी दोषी है, उसे सजा मिलनी चाहिए।'

उत्तर प्रदेश में 2017 से योगी आदित्यनाथ की सरकार है। ऐसे में शुक्ल की यह बात मुख्यमंत्री और बीजेपी के लिए राहत देने वाली हो सकती है, क्योंकि विपक्ष सरकार पर लगातार हमलावर है और बीजेपी अगला विधानसभा चुनाव 10 साल की सरकार के बाद लड़ने जा रही है। राज नारायण शुक्ल के लिए कानून-व्यवस्था ज्यादा बड़ा मुद्दा है और इस मामले में वह योगी सरकार को पूरे अंक देते हैं। उनका कहना है कि योगी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक कानून-व्यवस्था में सुधार है। कुछ ही दूरी पर रहने वाले 23 वर्षीय आशुतोष शुक्ल ने कहा कि हर गांव में लोग अयोध्या से जुड़े रील देख रहे हैं। अब हर कोई चंपत राय का नाम जानता है। गांव के लोगों ने मंदिर के लिए दान दिया था, इसलिए लोगों में गुस्सा है।'

लेकिन क्या इसका असर वोट पर पड़ेगा? आशुतोष, राज नारायण की तरह, मानते हैं कि नहीं। सीतापुर ज़िले के पूरनपुर के ग्रामीणों का कहना है कि उनके लिए कानून-व्यवस्था ज़्यादा ज़रूरी और तत्काल चिंता का विषय है। जातीय समीकरण, महंगाई और कानून-व्यवस्था ही वोटिंग के फैसले को प्रभावित करते रहेंगे।

मिश्रा, गोडवा गांव, हरदोई

सीतापुर, हरदोई और बाराबंकी के गांवों के ऊंची जाति के मतदाता भी दान की कथित चोरी पर गुस्सा होने के बावजूद बड़े पैमाने पर बीजेपी के साथ खड़े नजर आए। हालांकि कुछ लोगों ने आलोचना भी की। उनका मानना था कि मंदिर में जो हुआ, उसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, दोनों जिम्मेदार हैं। हरदोई के गोडवा गांव के 25 वर्षीय शुभम मिश्रा ने कहा कि जवाबदेही ऊपर तक तय होनी चाहिए।'

कुछ किलोमीटर दूर मीनापुर गांव में रहने वाली ओबीसी समुदाय की राम देवी ने कहा कि दान चोरी से ज्यादा उनके लिए खराब सड़कें और सरकारी योजनाओं का लाभ न मिलना बड़ा मुद्दा है। 'कई लोगों को अभी तक आवास योजना और शौचालय का लाभ नहीं मिला है। हरदोई की राम देवी से जब पूछा गया कि क्या दान 'चोरी' का मामला मतदान विकल्पों को प्रभावित करेगा, तो उन्होंने कहा कि यहां चुनाव के मुद्दे अलग हैं। सड़कें खराब हैं। कई लोगों को अभी तक आवास योजना और शौचालय का लाभ नहीं मिला है।'

जो समुदाय किसी एक राजनीतिक दल के स्थायी समर्थक नहीं माने जाते, उनके बीच भी राम मंदिर में दान की कथित चोरी का मामला चर्चा में है। लेकिन यह ऐसा मुद्दा नहीं है, जिसके आधार पर वे अपना वोट तय करेंगे। हरदोई जिले के मीनापुर गांव के 45 वर्षीय दलित किसान सुक्रू लाल ने कहा, 'राम मंदिर में कथित चोरी बड़ा मामला हो सकता है, लेकिन हमारे लिए गांव और ब्लॉक स्तर पर फैला भ्रष्टाचार उससे भी बड़ी समस्या है। चंदा चोरी छोड़िए, यहां अधिकारी चोर हैं, प्रधान चोर हैं। जनता का हक खा रहे हैं।'

उनके पड़ोस में रहने वाली 49 वर्षीय दलित महिला आशा कुमारी ने हम अपना घर तक नहीं बनवा सकते, तो मंदिर में दान कैसे दें?

उत्तर प्रदेश के इन तीनों जिलों के गांवों में लोगों से हुई बातचीत से पता चला कि दान चोरी से जुड़े रील और वीडियो उनके सोशल मीडिया पर सबसे ज्यादा दिखाई दे रहे हैं। मंदिर में जो हुआ, उससे लोग नाराज हैं। लेकिन इस मुद्दे ने अभी तक राजनीतिक रंग नहीं लिया है, जबकि विपक्षी दल, खासकर समाजवादी पार्टी, इस मामले को लेकर योगी आदित्यनाथ सरकार पर लगातार हमला कर रहे हैं। गौरतलब है कि इस साल जून की शुरुआत में दान चोरी के आरोप सामने आने के बाद श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अनुरोध पर राज्य सरकार ने मामले की जांच के लिए तीन सदस्यीय विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया था। इस के बाद दान गिनने की प्रक्रिया से जुड़े ट्रस्ट के आठ कर्मचारियों को पुलिस गिरफ्तार कर चुकी है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय और ट्रस्टी अनिल मिश्रा ने इस्तीफा दे दिया है। हालांकि पुलिस की किसी भी एफआईआर में उनके नाम नहीं हैं। लोगों का मानना है कि यह बड़े अधिकारियों को बचाने की कोशिश है।

सीतापुर के अंबरपुर गांव की एक चाय की दुकान पर लोगों ने कहा कि उन्हें इस घटना से व्यक्तिगत तौर पर ठगा हुआ महसूस हुआ। सीतापुर के अंबरापुर गांव के योगेन्द्र प्रताप ने कहा, 'हमने भी मंदिर निर्माण के समय दान दिया था। हर हिंदू को दुख हुआ है। अभी सिर्फ छोटी मछलियां पकड़ी गई हैं. बड़ी मछलियों को अभी तक छुआ भी नहीं गया।'

जब उनसे पूछा गया कि क्या इसका असर अगले साल उनके वोट पर पड़ेगा, तो उन्होंने कहा, 'हम ठाकुर हैं। समझ जाइए।' दुर्गेश सिंह ने कहा कि अब उनका मंदिर में दान देने का मन नहीं करता। उन्होंने कहा कि मुझे नहीं लगता कि सिर्फ इस मुद्दे से बीजेपी को बड़ा नुकसान होगा।

बाराबंकी जिले के हैदरगढ़ ब्लॉक में सीमा कुमारी ने बताया कि हम मोदी जी या योगी जी से क्यों नाराज होंगे? हम तो उन लोगों से नाराज हैं, जिन्होंने हमारा दान चुराया।' वहीं 45 वर्षीय कारोबारी रितेश गुप्ता ने कहा कि उन्हें भी दान चोरी से दुख हुआ है, लेकिन चुनाव सिर्फ इसी मुद्दे पर नहीं लड़ा जाएगा।लोगों को विपक्ष की राजनीति से भी दिक्कत है।'

हालांकि समाजवादी पार्टी का मानना है कि 'दान चोरी' का मुद्दा इतनी आसानी से खत्म नहीं होगा। अयोध्या के पूर्व विधायक पवन पांडे ने कहा, 'हम इस मुद्दे को हर घर तक ले जाएंगे।' उत्तर प्रदेश की राजनीतिक विश्लेषक शिल्प शिखा सिंह का कहना है कि राम मंदिर दान विवाद चुनावी मुद्दा तभी बन सकता है, जब विपक्ष 2027 के विधानसभा चुनाव तक लोगों का ध्यान इस मुद्दे पर बनाए रख सके। इसके लिए अभी से गांव-गांव जाकर लगातार संगठनात्मक काम करना होगा।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुप्रभात

जहर के घट पर लगा नवनीत है
खीर मिसरी गुलगुला कोई नहीं
हम सभी चमड़ी से दिखते साफ हैं
दूध का लेकिन धुला कोई नहीं
एक ही हैं ताल की सब मछलियाँ
एक ही बस्ती के सारे ढोर हैं
दिख रहे हैं भले राजा की तरह
हम सभी में छिपे कितने चोर हैं
कौड़ियों के दाम में बिक जाएँगे
स्वर्ण सिक्कों से तुला कोई नहीं
कर रहे दुष्कर्म सीना तानकर
हम नहीं परमात्मा से डर रहे
लग रहा अमरत्व लेकर हैं खड़े
भले तिल तिल नित्य सब हैं मर रहे
ताल पर हैं झाग जैसे हम सभी
और भ्रम है बुलबुला कोई नहीं।

– राघव शुक्ल

समान नागरिक संहिता विधेयक विधानसभा में पेश, चर्चा आज

विधानसभा घेरने निकले ओबीसी महासभा के सदस्यों की पुलिस से झड़प ; वाटर कैनन चलाई, अरेस्ट किया

भोपाल (नप्र)। मानसून सत्र के पहले दिन सोमवार को मध्य प्रदेश सरकार ने विधानसभा में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) विधेयक 2026 पेश कर दिया। स्पीकर नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि इस पर कल चर्चा कराई जाएगी। इसके बाद आगे की कार्यवाही होगी।

उधर, विधानसभा का घेराव करने निकले ओबीसी महासभा के सदस्यों को भोपाल पुलिस ने रंगमहल चौराहे पर रोक लिया। इसके विरोध में प्रदर्शनकारी नारेबाजी करते हुए बैरिकेड्स पर चढ़ने लगे। पीछे धकेलने पर वे जवानों से भिड़ गए। पुलिस को वाटर कैनन चलानी पड़ी। हल्के बल प्रयोग के बाद प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया।

जमीन खरीदी पर कार्यवाही दो बार स्थगित- विधानसभा में उज्जैन जमीन खरीदी मामले पर चर्चा को लेकर विपक्ष और सत्ता पक्ष के विधायकों का शोर-शराबा जारी रहा। इसके चलते विधानसभा की कार्यवाही दो बार स्थगित की गई। इससे पहले कांग्रेस विधायक, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान और कृषि मंत्री एदल सिंह कंसाना के मुखौटे लगाकर पहुंचे। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा- शिवराज और मोहन यादव फाइल-फाइल खेल रहे हैं। किसानों की किसी को चिंता नहीं है। मध्य प्रदेश में समय पर न खाद मिल रही है, न बीज मिल रहा है। विधानसभा के भीतर सिंघार ने कहा- बरगी क्रूज हादसे में 13 लोगों की मौत हो गई। नीट परीक्षार्थी अव्यवस्था के चलते आत्महत्या करने को मजबूर हुए किंतु उनका नाम श्रद्धांजलि सूची में शामिल नहीं किया गया। विधानसभा सचिवालय ने ऐसी गलती क्यों की?

मंत्री टेटवाल ने कहा- इससे आदिवासियों को कोई नुकसान नहीं- यूसीसी बिल के मध्य प्रदेश विधानसभा में पेश किया गया है। राज्य मंत्री गौतम टेटवाल ने सदन में बिल को पेश किया है। मंगलवार को इस विधेयक पर चर्चा होगी। इसके बाद सदन में वोटिंग करवाई जाएगी।

विधानसभा के मानसून सत्र के दौरान यूनिफॉर्म सिविल कोड बिल, 2026 को पेश किया गया है। रविवार को कैबिनेट की मीटिंग में बिल के ड्राफ्ट को मंजूरी दी गई थी। राज्य मंत्री गौतम टेटवाल ने सदन में बिल को पेश किया है।

यूसीसी बिल पेश होने के बाद सीएम यादव बोले आजादी के बाद आज का दिन सबसे अमर

मध्य प्रदेश कैबिनेट ने यूसीसी बिल को मंजूरी दे दी है। 20 जुलाई से मध्य प्रदेश विधानसभा के मानसून सत्र की शुरुआत हो गई है। सदन में पहले ही दिन सरकार यूसीसी विधेयक को पेश करने जा रही है। इससे पहले सीएम मोहन यादव ने बड़ा इशारा किया है।सीएम मोहन यादव ने 20 जुलाई को कहा कि स्वतंत्रता के बाद आज का दिन बहुत बड़ा है। यह दिन इतिहास में दर्ज होगा। लोग इसे याद रखेंगे। उन्होंने कहा कि आज एक ऐतिहासिक दिन है, जिसे हमेशा याद रखा जाएगा।

कांग्रेस विधायकों के चेहरे पर सीएम मोहन और शिवराज सिंह चौहान का मुखौटा, जोरदार हंगामा

विधानसभा परिसर में मोहन यादव और शिवराज सिंह चौहान का मुखौटा पहनकर कांग्रेस विधायक नीचे बैठ गए। इसके बाद नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने उनसे सवाल-जवाब किया है। साथ ही गेहूं खरीदी को लेकर सवाल पूछा है। उमंग सिंघार ने कहा कि दोनों सिर्फ फाइल-फाइल खेल रहे हैं। इस दौरान उमंग सिंघार ने जमकर किसानों की समस्या को लेकर कटाक्ष किया है।ओबीसी महासभा द्वारा आरक्षण में 13 प्रतिशत होल्ड समाप्त करने की मांग को लेकर धरना-प्रदर्शन किया जा रहा है। प्रदर्शन के दौरान बड़ी संख्या में समाज के लोग सड़कों पर उतरे और मोहन सरकार होश में आओ के नारे लगाए।

हम 27 सहित 52 प्रतिशत आरक्षण देंगे- सपा प्रदेश अध्यक्ष मनोज यादव ने कहा कि अगर मोहन यादव को आरक्षण देना होता तो उन्होंने बहुत पहले ही दे दिया होता। उन्होंने तो डंके की चोट पर कहा था कि वह आरक्षण देंगे, पर वह ऐसा नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि वह बीजेपी के ओबीसी हैं। हमारी सरकार आएगी तो हम 27 सहित 52 प्रतिशत आरक्षण देंगे। राजलक्ष्मी कुशवाहा ओबीसी महासभा जिलाध्यक्ष छतरपुर ने कहा कि अगर मुख्यमंत्री हमारी मांगें नहीं मान सकते तो चूड़ी पहन लें। हम उनके लिए चूड़ी भेंट लाए हैं।

भारत में पहली डेंगू वैक्सीन क्यूडेंगा को मिल गई मंजूरी

बिना किसी जांच के 4 से 60 साल तक के लोग ले सकेंगे डोज, देश में ही बनेगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में पहली बार डेंगू की वैक्सीन को मंजूरी मिल गई है। ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया ने ताकेदा बायोफार्मा स्यूटिकल्स इंडिया की वैक्सीन क्यूडेंगा को बाजार में इस्तेमाल की अनुमति दे दी है। कंपनी के मुताबिक, यह वैक्सीन चार से 60 साल तक के लोगों को लगाई जा सकेगी। इसे लगवाने से पहले यह जांच कराने की जरूरत नहीं होगी कि व्यक्ति पहले

कभी डेंगू से संक्रमित हुआ था या नहीं। भारत में मिली मंजूरी ताकेदा के वैश्विक क्लीनिकल डेवलपमेंट प्रोग्राम के आधार पर दी गई है। इसके तहत फेज-1, फेज-2 और फेज-3 के कुल 19 क्लीनिकल ट्रायल किए गए, जिनमें 28 हजार से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया। क्यूडेंगा की दो डोज दी जाती हैं। प्रत्येक डोज 0.5 मिलीलीटर की होती है और त्वचा के नीचे इंजेक्शन के जरिए लगाई जाती है। दोनों डोज के बीच तीन महीने का अंतर रखा जाता है।

देश में ही होगा वैक्सीन का उत्पादन- क्यूडेंगा असल में जापानी कंपनी टाकेडा की खोज है, लेकिन हमारे लिए सबसे बड़ी राहत की बात यह है कि मेक इन इंडिया के तहत इसका बड़े पैमाने पर उत्पादन देश में ही होगा। इसके लिए टाकेडा ने हैदराबाद की जानी-मानी फार्मा कंपनी बायोलॉजिकल ई के साथ करार किया है।

125 से ज्यादा देशों में डेंगू के मामले

यह गुणवत्ता, सुरक्षा और प्रभावशीलता के अंतरराष्ट्रीय मानकों पर खरी उतरती है।इसके बाद क्यूडेंगा और पैन अमेरिकन हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन जैसी वैश्विक एजेंसियां भी इसकी खरीदी कर सकती हैं।डेंगू मच्छरों से फैलने वाली वायरल बीमारी है, जिसके मामले 125 से ज्यादा देशों में सामने आते हैं।कंपनी के मुताबिक, दुनिया में डेंगू के कुल मामलों का करीब एक–तिहाई बोझ भारत पर है।तेजी से बढ़ते शहरीकरण, जलवायु परिवर्तन और मच्छरों के बढ़ते प्रजनन के कारण खतरा बढ़ रहा है।

वैष्णो देवी यात्रा पर संकट, 'मौसम' ने लगाया ब्रेक

● भूस्खलन से यात्रा मार्ग प्रभावित, कटरा में फंसे हजारों श्रद्धालु ● किसी ने लौटने का किया फैसला तो कोई कर रहा है इंतजार

कटरा (एजेंसी)। मौसम विभाग की चेतावनी और लगातार खराब मौसम को देखते हुए श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड ने सोमवार को भी यात्रा स्थगित रखने का निर्णय लिया। यात्रा बंद रहने के कारण आधार शिविर कटरा में करीब 15 से 20 हजार श्रद्धालु यात्रा शुरू होने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं, जबकि बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने अपने घरों की ओर लौटना शुरू कर दिया है। यात्रा स्थगित होने के चलते शनिवार से कटरा में रुके कई श्रद्धालु कटड़ा रेलवे स्टेशन और बस अड्डे से अपने गंतव्य की ओर रवाना होते देखे गए। वहीं, जो श्रद्धालु अभी भी यात्रा बहाल होने की उम्मीद में कटरा में ठहरे हुए हैं, वे नौ देवी मंदिर, बाबा धनसर, देवामाई मंदिर तथा प्रथम पड़ाव भूमिका मंदिर सहित अन्य धार्मिक स्थलों के दर्शन के लिए जा रहे हैं। दिनभर श्रद्धालु यात्रा बहाली की जानकारी लेने के लिए श्राइन बोर्ड कार्यालय और विभिन्न सूचना केंद्रों का रुख करते रहे। हालांकि मौसम की स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं होने के कारण यात्रा पुनः शुरू नहीं की जा सकी। मौसम विभाग ने भारी बारिश की चेतावनी दी है।

पारंपरिक यात्रा मार्ग पर भी कई जगह हुआ भूस्खलन

रविवार देर रात हुई तेज बारिश के कारण बैटरी कार मार्ग, भैरव घाटी मार्ग तथा पारंपरिक यात्रा मार्ग के कुछ हिस्सों में आंशिक भूस्खलन और पत्थर गिरने की घटनाएं सामने आई हैं।प्रभावित मार्गों को साफ करने और सुरक्षित बनाने के लिए आपदा प्रबंधन दल, श्राइन बोर्ड प्रशासन तथा सफाई कर्मचारी लगातार जुटे हुए हैं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

इंदौर ■ मंगलवार, 21 जुलाई 2026

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव विधानसभा में मानसून सत्र के पहले दिन आयोजित कार्य मंत्रणा समिति की बैठक में शामिल हुए। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर को मध्यप्रदेश विधानसभा में पुष्प-गुच्छ भेंट कर अभिवादन किया। **(फोटो प्रवीण वाजपेई)**

हबीबगंज जैन मंदिर में उमड़ रही श्रद्धालुओं की भीड़

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल में जैन संत 108 आचार्य श्री समय सागर महाराज के चातुर्मास कार्यक्रम की शुरुआत के साथ ही हबीबगंज जैन मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। शहर के अलावा दूसरे जिलों से भी बड़ी संख्या में अनुयायी प्रतिदिन कार्यक्रम में शामिल होने पहुंच रहे हैं। बढ़ती भीड़ को देखते हुए पुलिस ने कार्यक्रम अवधि के दौरान यातायात और पार्किंग व्यवस्था में बदलाव किया है। नई व्यवस्था के अनुसार प्रतिदिन सुबह 7 बजे से कार्यक्रम समाप्त होने तक मानसरोवर से प्रगति चौराहा के बीच यातायात पूरी तरह डायवर्ट रहेगा। इस दौरान आम नागरिकों से भी वैकल्पिक मार्गों का उपयोग करने की अपील की गई है।

इन मार्गों से होकर गुजरेगा ट्रैफिक

- मानसरोवर की ओर से आने वाले वाहन महावीर द्वार, नूतन कॉलेज, व्यापम चौराहा होते हुए बोर्ड ऑफिस की ओर भेजे जाएंगे।
- बोर्ड ऑफिस चौराहे से आगे जाने वाला यातायात ज्योति टॉकीज, चेतक ब्रिज, आईएसबीटी और आरआरएल मार्ग से संचालित किया जाएगा।
- रेलवे स्टेशन जाने वाले यात्रियों को समय रहते घर से निकलने और वैकल्पिक मार्ग अपनाने की सलाह दी गई है।
- नर्मदापुरम् और मंडीदीप की ओर जाने वाले वाहन जीजी फ्लाईओवर का उपयोग करेंगे।

संक्षिप्त समाचार

बच्चों की मोबाइल लत पर जल्द लगेगी लगाम

- केंद्र सरकार ला सकती है स्मार्टफोन्स में 'माइनर मोड'

नई दिल्ली (एजेंसी)। बच्चों में बढ़ती मोबाइल लत और ऑनलाइन खतरों को रोकने के लिए केंद्र सरकार बड़ा कदम उठाने की तैयारी में है। सरकार भारत में बिकने वाले स्मार्टफोन में डिवाइस स्तर पर

ही पाबंदियां लगाने पर विचार कर रही है। इसके तहत सभी नए फोन में एक अलग माइनर मोड देना अनिवार्य किया जा सकता है। प्रस्तावित व्यवस्था के मुताबिक माता-पिता इस मोड के जरिए कई तरह के नियंत्रण कर सकेंगे। इसमें एप डाउनलोड पर रोक लगाना, रोजाना स्क्रीन टाइम तय करना और देर रात फोन या सोशल मीडिया के इस्तेमाल को बंद करा शामिल होगा।

पुलिस हेडक्वार्टर में मृत मिले त्रिपुरा के डीजीपी

- एक साल पहले संभाला था पद,मच गया हड़कंप

अगरतला (एजेंसी)। त्रिपुरा के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) अनुराग धनखड़ का शव अगरतला पुलिस हेडक्वार्टर में मिलने से हड़कंप मच गया। उनके शव को अगरतला के जीबी अस्पताल ले जाया गया। मौत के कारणों का अभी तक पता नहीं

चल पाया है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, उनकी मौत के मामले में आत्महत्या की आशंका जताई जा रही है। हालांकि पुलिस ने अभी तक इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं की है। सूत्रों के मुताबिक, अनुराग धनकर अपने कार्यालय कक्ष में फंदे से लटके हुए मिले। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों ने उन्हें तत्काल अगरतला के अस्पताल पहुंचाया।

भाषा प्रौद्योगिकी सुविधाओं का अधिकतम उपयोग करें विद्यार्थी : डॉ. कर्नावट

भोपाल। भाषा प्रौद्योगिकी के माध्यम से आई नई तकनीक में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग को अत्यधिक सुगम बना दिया है। विद्यार्थियों को इन सभी नई तकनीक का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए। ये विचार अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र के निदेशक डॉ. जवाहर कर्णावट ने उत्तर पूर्व और दक्षिण के 10 राज्यों से शैक्षणिक यात्रा पर भोपाल आए विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहे।

उन्होंने कहा कि हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रयोग के लिए रोमन के बजाय देवनागरी लिपि का ही प्रयोग नई तकनीक के माध्यम से करना चाहिए। केंद्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार की ओर से विशेष अध्ययन के

लिए आए हिंदी के 50 विद्यार्थियों को रविंद्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय में भाषा साहित्य और भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध विषयों पर मार्गदर्शन प्रदान किया जा रहा है। इस अवसर पर कुणाल सिंह ने अनुवाद के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों को उजागर करते हुए अनुवाद के माध्यम से रोजगार की अपार संभावनाओं से विद्यार्थियों को अवगत कराया। सत्र का संचालन श्री विकास अवस्थी ने किया तथा श्री संजय सिंह राठौड़ ने आभार माना।

सीजेपी समर्थकों पर लाठीचार्ज

पुलिस ने खदेड़ा

- संसद तक पहुंच गए थे प्रदर्शनकारी
- दावा-पुलिस ने अभिजीत दीपके को जंतर-मंतर से उठाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। कॉकरोच जनता पार्टी के आंदोलनकारियों को जंतर-मंतर से हटा दिया गया है। पुलिस ने मंच खाली करा लिया है और टेंट भी निकाल दिए हैं। प्रदर्शनकारियों को भी वहां से खदेड़ा जा रहा है। इस दौरान पुलिस ने जबरदस्त लाठीचार्ज भी किया। उधर, सीजेपी का दावा है कि अभिजीत दीपके को हिरासत में ले लिया गया है। हालांकि, पुलिस ने इससे इनकार किया है। सोमवार सुबह 8 बजे से शुरू हुए प्रदर्शन में पुलिस के लाठीचार्ज और झड़प में कई

प्रदर्शनकारी घायल हो गए। मामला तब बढ़ गया, जब आंदोलनकारी सुबह 10 बजे बैरिकेड तोड़कर पार्लियामेंट की तरफ बढ़े। इस दौरान पुलिस ने उन्हें रोकने की कोशिश की। इसके बाद प्रदर्शनकारी संसद के करीब पहुंच गए। प्रदर्शनकारियों ने संसद में घुसने की कोशिश की। इसे देखते हुए संसद की सुरक्षा बढ़ा दी गई है।

डिंपल यादव समेत कई अन्य सपा सांसद हिरासत में

समाजवादी पार्टी की लोकसभा सांसद डिंपल यादव ने सोमवार को कॉकरोच जनता पार्टी के समर्थन में संसद से जंतर-मंतर तक मार्च निकाला। इस मार्च में डिंपल यादव समेत कई सपा सांसद शामिल हुए। इस दौरान डिंपल यादव ने केंद्र सरकार पर छात्रों की आवाज दबाने का आरोप लगाया और कहा कि देश में युवाओं, किसानों और पर्यावरण से जुड़े मुद्दों पर सरकार संवाद करने को तैयार नहीं है। मार्च के दौरान डिंपल यादव ने कहा,हम चाहते हैं कि छात्रों की आवाज सुनी जाए, क्योंकि अब हालात असहनीय हो चुके हैं। देशभर में किसान, पर्यावरण और युवा सभी परेशान हैं लेकिन सरकार किसी की सुनने और उनकी समस्याओं का समाधान करने को तैयार नहीं है। छात्र सिर्फ निष्पक्ष परीक्षाएं चाहते हैं लेकिन यह सरकार न निष्पक्ष परीक्षा चाहती है और न ही निष्पक्ष चुनाव।

शांतिपूर्ण विरोध में लाठीचार्ज,शशि थरूर ने सरकार को घेरा

जंतर मंतर पर कॉकरोच जनता पार्टी के प्रदर्शन और संसद मार्च के दौरान सुरक्षा बलों के लाठीचार्ज को लेकर राजनीतिक घमासान बढ़ता जा रहा है। सभी प्रमुख विपक्षी पार्टियां इस मुद्दे को उठा रही हैं। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने प्रदर्शन कारियों पर लाठीचार्ज का मुद्दा संसद में उठाया है। वहीं कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने भी लाठीचार्ज के मुद्दे पर सरकार को घेरा है। सीजेपी के विरोध प्रदर्शन पर कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने कहा कि जब शांतिपूर्ण विरोध हो रहा हो, तो लाठीचार्ज की क्या वजह है। लाठीचार्ज अहिंसा का काम नहीं है। यह हिंसा का काम है। मुझे इसके पीछे का लॉजिक समझ नहीं आता। संसद में इस पर चर्चा होनी चाहिए।

लौट रहा मानसून

अबकी जमकर बरसेंगे बदरा

- इस हफ्ते होगी झमाझम,देश का दो-तिहाई हिस्सा बादलों से ढका

नई दिल्ली (एजेंसी)। वर्षा की उम्मीद लगाए लोगों के लिए राहत की खबर है। इस हफ्ते मानसून जोरदार वापसी करने जा रहा है। बंगाल की खाड़ी में बनने वाला कम दबाव का नया सिस्टम मानसून ट्रफ को वापस अपनी जगह पर ले आएगा, जिससे आगामी कुछ दिनों में हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड और पूर्वोत्तर के कई राज्यों में भारी से बहुत भारी वर्षा होगी। दिल्ली में भी सोमवार से बुधवार के बीच आंधी-तूफान और भारी वर्षा की संभावना है, जिससे दिन का तापमान 30 डिग्री तक आ जाएगा।

- **भारत का लगभग 60-70 प्रतिशत हिस्सा बादलों से ढका-** सेटेलाइट तस्वीरों में देश के ऊपर मानसून के बादलों की एक विशाल चादर दिखाई दे रही है, जो जम्मू-कश्मीर से लेकर गंगा के मैदानी इलाकों और पूर्वोत्तर तक फैली हुई है। 19 जुलाई को ली गई इन तस्वीरों के विश्लेषण से पता चलता है कि भारत का लगभग 60 से 70 प्रतिशत हिस्सा बादलों से ढका हुआ है। सबसे घने बादल पंजाब से उत्तर प्रदेश और बिहार होते हुए बंगाल और पूर्वोत्तर के ऊपर तक हैं।

मंत्री-विधायक रहे दिग्गज दतिया में 5-5 बूथ संभालेंगे

बीजेपी ने उपचुनाव के लिए शक्ति केन्द्रों पर दो-दो दिग्गजों को दी जिम्मेदारी

भोपाल (नप्र)। बीजेपी ने दतिया विधानसभा के उपचुनाव को जीतने के लिए एक तरफ कार्यकर्ताओं को साधने और दूसरी तरफ प्रचार अभियान के लिए प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल, प्रदेश प्रभारी डॉ महेन्द्र सिंह से लेकर तमाम मंत्रियों और सीनियर लीडर्स को जिम्मेदारी दी है वहीं, चुनाव जीतने के लिए माइक्रो मैनेजमेंट पर पूर्व मंत्रियों, पूर्व विधायकों से लेकर संगठन के पदाधिकारियों को शक्ति केन्द्रों की जिम्मेदारी दी है।

बीजेपी ने पूर्व मंत्रियों, पूर्व विधायकों और वरिष्ठ नेताओं सहित अनुभवी कार्यकर्ताओं को अलग-अलग शक्ति केंद्रों की जिम्मेदारी सौंप दी है। प्रत्येक शक्ति केंद्र में एक प्रभारी और एक संगठक नियुक्त किया गया है। एक शक्ति केंद्र के अंतर्गत चार से छह बूथ शामिल किए गए हैं, जिनके संचालन, समन्वय और संगठनात्मक गतिविधियों की जिम्मेदारी इन्हीं नेताओं पर रहेगी। यानी औसतन 5 बूथों पर दो दिग्गजों को कमान दी गई है।

अनुभवी नेताओं को दी शक्ति केन्द्रों की कमान- जिला भाजपा की ओर से जारी सूची के अनुसार दतिया नगर, दतिया ग्रामीण, बड़ौनी, भांडेर, इंदरगढ़ और सेंवढ़ा मंडलों के शक्ति केंद्रों के लिए प्रभारी और संगठकों की नियुक्ति की गई है। भाजपा ने चुनावी रणनीति के तहत वरिष्ठ नेताओं के अनुभव का लाभ लेने का फैसला किया है।

अमेरिका-ईरान तनाव से ब्रेंट क्रूड 90 डॉलर पार

- एक हफ्ते में 16 फीसदी बढ़ा, भारत में महंगाई का खतरा

रुपया-विदेशी निवेश पर दबाव,एनर्जी शॉक का जोखिम बढ़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। ग्लोबल मार्केट में कच्चे तेल की कीमतों में एक बार फिर तेजी देखी जा रही है। अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ते तनाव के कारण ब्रेंट क्रूड ऑयल आज 90 डॉलर प्रति बैरल के पार पहुंच गया। तेल की बढ़ती कीमतों ने भारत में महंगाई और एनर्जी शॉक के जोखिम को बढ़ा दिया है। इससे भारतीय रुपए और विदेशी पोर्टफोलियो निवेश के फ्लो पर असर पड़ने की संभावना है। दूसरी ओर, कच्चे तेल के महंगे होने से भारत की ऑइल मार्केटिंग कंपनियों के रिटेल फ्यूल मार्जिन पर भारी दबाव पड़ा है, जिससे डीजल पर कंपनियों को प्रति लीटर 20.4 रुपए का घाटा हो रहा है। हालांकि, रिफाइनिंग मार्जिन में भारी उछाल के कारण कंपनियों का ओवरऑल मुनाफा फिलहाल संभला हुआ

है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में ब्रेंट क्रूड फ्यूचर्स 2.69 डॉलर (3.05) बढ़कर 90.79 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया, जो 11 जून के बाद का उच्चतम स्तर है।

अमेरिका में फिर बढ़ सकती हैं ब्याज दरें

बैंक ऑफ बड़ौदा की रिपोर्ट के अनुसार, क्लीवलैंड फेड अध्यक्ष के बयान के बाद अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा सितंबर 2026 की मीटिंग में ब्याज दरें बढ़ाने की संभावना बढ़ गई है। एचडीएफसी सिक्योरिटीज के प्राइम रिसर्च हेड देवर्ष वकील ने बताया कि अमेरिकी बाजारों में इस हफ्ते भारी अस्थिरता देखने को मिली है। देवर्ष वकील के मुताबिक, अमेरिका-ईरान संघर्ष में नए हमलों, टेक सेक्टर में रोटेशन और महंगाई के आंकड़ों ने प्रमुख इंडेक्स को नीचे खींच दिया, जिससे मिड-समर की बढ़त का सिलसिला टूट गया। वीकेंड पर अमेरिका और ईरान के बीच नए हमले हुए हैं। ईरान ने कहा है कि दोनों देशों के बीच सीजफायर पूरी तरह खत्म हो चुका है।

सितंबर से तैयारी,सीएम शुभेंदु अधिकारी ने की घोषणा

सरकारी कामों के लिए बंगाली भाषा होगी अनिवार्य

कोलकाता (एजेंसी)। मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने सोमवार को विधानसभा में घोषणा की कि एक सितंबर से पश्चिम बंगाल में सरकार के सभी स्तरों पर बंगाली भाषा अनिवार्य होगी। सीएम अधिकारी ने विधानसभा को बताया कि राज्य सरकार के सभी तरह के कम्युनिकेशन के लिए बंगाली मुख्य भाषा होगी। उन्होंने यह भी कहा कि केंद्र सरकार के साथ होने वाला सरकारी कामकाज बंगाली और हिंदी, दोनों भाषाओं में किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने रविवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की ओर से उन्हें भेजा गया एक पत्र सार्वजनिक किया। इसमें केंद्र ने बंगाली भाषआ के महत्व पर जोर दिया था। पत्र में शाह ने सलाह दी कि बंगाली को ज्यादा प्रमुखता दी जानी चाहिए और प्रशासनिक और आधिकारिक ढांचे में इसकी सक्रिय तैनाती की सिफारिश की गई

है। शाह ने केंद्र और राज्य सरकारों के बीच अंतरराज्यीय प्रशासनिक चैनलों के लिए हिंदी के उपयोग को बढ़ाने के महत्व पर जोर दिया। मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने कहा,यह फैसला राज्य की आधिकारिक प्रणाली में बंगाली भाषा के उपयोग को और मजबूत करने के लिए लिया गया है।

- 1993 की पुलिस फायरिंग पर रिपोर्ट- 21 जुलाई को होने वाली सालाना 'शहीद दिवस' रैली से ठीक एक दिन पहले विपक्ष के खिलाफ अपना राजनीतिक हमला तेज करते हुए मुख्यमंत्री अधिकारी ने यह भी घोषणा की कि वह सोमवार शाम को 21 जुलाई आयोग की लंबे समय से पूरी रिपोर्ट जारी करेंगे। यह जांच आयोग मूल रूप से 2011 में ममता बनर्जी के पहली बार मुख्यमंत्री बनने पर गठित किया गया था, ताकि 21 जुलाई 1993 को कोलकाता पुलिस की फायरिंग की जांच की जा सके। इसमें लेफ्ट फ्रंट सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के दौरान 13 यूथ कांग्रेस कार्यकर्ता मारे गए थे। आयोग ने दिसंबर 2014 में अपनी अंतिम रिपोर्ट सौंपी।

चढ़ावा चोरी-पेपर लीक को लेकर संसद में हंगामा

- खड़गे बोले-जंतर-मंतर पर लाठीचार्ज से बच्चों की आवाज दबा रही सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। मानसून सत्र के पहले दिन विपक्ष के हंगामे के चलते कार्यवाही नहीं चल पाई। लोकसभा और राज्यसभा को छह बार स्थगित करना पड़ा। विपक्षी सांसद नीट पेपर लीक, राम मंदिर चढ़ावा चोरी पर चर्चा की मांग कर रहे थे। कुछ सांसद पोस्टर-बैनर लेकर सदन के अंदर आए। मल्लिकार्जुन खड़गे ने राज्यसभा में जंतर-मंतर पर हुए कॉकरोच जनता पार्टी के प्रदर्शन पर चर्चा की। खड़गे ने कहा- जंतर-मंतर पर बच्चे इकट्ठा हुए, उनकी आवाज को दबाया जा रहा। सरकार ने उन पर लाठीचार्ज किया। उधर हंगामे के बीच जजों की संख्या बढ़ाने वाला बिल पेश किया गया।

नशामुक्ति का संदेश : 8600 लोगों की मानव श्रृंखला ने अपना रिकॉर्ड तोड़ा

इंदौर। स्वच्छता में देशभर में पहचान बनाने वाले इंदौर ने अब सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में भी एक नया अध्याय जोड़ दिया है। पुलिस कमिश्नरेट द्वारा चलाए जा रहे 'नशे से दूरी है जरूरी 2.0' अभियान के अंतर्गत रविवार सुबह नेहरू स्टेडियम में 8600 से अधिक लोगों ने हाथों में हाथ थामकर विशाल मानव श्रृंखला बनाई और नशामुक्त समाज का संदेश दिया। इस आयोजन के साथ शहर ने पिछले वर्ष 7100 लोगों के बनाए अपने ही रिकॉर्ड को पीछे छोड़ते हुए एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। नेहरू स्टेडियम में सुबह से ही उत्साह का वातावरण दिखाई दिया। स्कूली छात्र-छात्राएं, महाविद्यालयों के विद्यार्थी, एनसीसी कैडेट्स, नवआरक्षक, विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि, सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर और बड़ी संख्या में आम नागरिक इस अभियान का हिस्सा बने। रंग-बिरंगे गुब्बारों और जोश से भरे माहौल के बीच सभी ने नशे से दूर रहने और दूसरों को भी इसके प्रति जागरूक करने का सामूहिक संकल्प लिया।

अभियान के तहत युवाओं ने लिया संकल्प, सुबह से ही भीड़ जुटी

हर नागरिक की भागीदारी

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पुलिस आयुक्त संतोष कुमार सिंह ने कहा कि देश का भविष्य तभी सुरक्षित और मजबूत होगा, जब युवा नशे जैसी बुराई से दूर रहेंगे। उन्होंने युवाओं से अपील की कि वे स्वयं नशे से बचें और अपने परिवार, मित्रों तथा समाज को भी इसके दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करें। उन्होंने कहा कि नशामुक्त समाज के निर्माण में हर नागरिक की भागीदारी आवश्यक है। आयोजन को सफल बनाने के लिए पुलिस और प्रशासन ने व्यापक तैयारियां की थीं। सुरक्षा और यातायात व्यवस्था बनाए रखने के लिए सुबह 5 बजे से ही पुलिस बल विभिन्न स्थानों पर तैनात कर दिया गया था। पूरे कार्यक्रम के दौरान व्यवस्थाओं पर लगातार निगरानी रखी गई, जिससे आयोजन शांतिपूर्ण और सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न हुआ।

कई हस्तियों का भी समर्थन

अभियान को अधिक प्रभावी बनाने के लिए बॉलीवुड की कई जानी-मानी हस्तियों ने भी अपना समर्थन दिया। अभिनेता गोविंद नामदेव, सुधांशु पांडे, लोकप्रिय धारावाहिक 'सीआईडी' के कलाकार दयानंद शेट्टी, हास्य कलाकार सुनील पाल तथा अभिनेता नील नितिन मुकेश ने वीडियो संदेश जारी कर लोगों से नशे से दूर रहने और स्वस्थ जीवन अपनाने की अपील की। इन संदेशों ने अभियान को व्यापक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इंदौर का यह आयोजन केवल एक रिकॉर्ड बनाने तक सीमित नहीं रहा, बल्कि समाज को यह संदेश भी दे गया कि यदि प्रशासन, समाज और युवा एकजुट होकर किसी सामाजिक बुराई के खिलाफ खड़े हों, तो जागरूकता का बड़ा आंदोलन खड़ा किया जा सकता है।

7100 के मुकाबले 8600 लोग

यह उपलब्धि इसलिए भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है, क्योंकि वर्ष 2025 में इंदौर ने 7100 लोगों की मानव श्रृंखला बनाकर विश्व रिकॉर्ड बनाया था। इस बार उससे भी अधिक लोगों की भागीदारी दर्ज हुई और शहर ने अपना ही रिकॉर्ड पीछे छोड़ दिया। इस जनजागरण अभियान की तैयारी पिछले एक सप्ताह से लगातार चल रही थी। पुलिस और प्रशासन के अधिकारी स्वयं इसकी रूपरेखा तैयार करने में जुटे रहे। शहर के अलग-अलग क्षेत्रों में लोगों से संपर्क कर उन्हें नशे के दुष्प्रभावों की जानकारी दी गई और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। अभियान के दौरान उन लोगों की काउंसलिंग भी की जा रही है, जो नशे की लत छोड़ना चाहते हैं और इसके लिए सहयोग की आवश्यकता महसूस कर रहे हैं।

पांच पेज का सुसाइड नोट लिखकर लापता

इंदौर। शहर के एक हॉस्टल संचालक के पांच पेज का सुसाइड नोट लिखने के बाद रहस्यमय ढंग से लापता होने से सनसनी फैल गई। परिजनों और परिचितों ने वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों से मुलाकात कर उसकी जल्द तलाश और आरोपियों पर कार्रवाई की मांग की है। मामले की जांच अब जूनी इंदौर पुलिस को सौंपी गई है। विष्णुपुरी निवासी भगवान काग बीते सोमवार से लापता हैं। उनके परिजनों ने भंवरकुआं थाने में गुमशुदगी दर्ज कराई है। भगवान काग के छोड़े गए पांच पेज के सुसाइड नोट में विष्णुपुरी निवासी ओमप्रकाश सलूजा तथा उनके बेटों सौरभ और गौरव पर गंभीर आरोप लगाए गए हैं। नोट में दावा किया गया है कि तीनों ने सूद के जाल में फंसाकर उन्हें वर्षों तक प्रताड़ित किया और 3 करोड़ रुपए से अधिक ब्याज वसूलने के बावजूद लगातार दबाव बनाया। नोट में गुंडों से धमकाने, पुलिस और नेताओं का भय दिखाने तथा जबरन फंड चलवाकर रकम वसूलने जैसे आरोप भी लगाए गए हैं। सिर्वी समाज के प्रतिनिधिमंडल ने पुलिस अधिकारियों से निष्पक्ष जांच की मांग की है। परिजनों का कहना है कि यदि समय रहते भगवान का पता नहीं चला तो किसी बड़ी अनहोनी से इनकार नहीं किया जा सकता। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

6 माह से फरार ड्रग्स तस्कर पकड़ाया

इंदौर। एमडी ड्रग्स तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में क्राइम ब्रांच को बड़ी सफलता मिली है। छह माह से फरार चल रहे आरोपी फिरोज उर्फ महाराज को गिरफ्तार कर लिया गया। आरोपी मजदूरी की आड़ में शहर में एमडी ड्रग्स की सप्लाई करता था। डीसीपी राजेश कुमार त्रिपाठी ने बताया कि एनडीपीएस एक्ट के मामले में पहले शाहरुख की गिरफ्तारी के बाद फिरोज की भूमिका सामने आई थी। तकनीकी साक्ष्यों और मुखबिर की सूचना पर उसे दबोचा गया। पूछताछ में ड्रग्स सप्लाई नेटवर्क से जुड़े कई अहम सुराग मिले हैं, जिनके आधार पर अन्य आरोपियों की तलाश जारी है।

अनियंत्रित कार चाय की गुमटी में घुसी

इंदौर। रविवार तड़के अनियंत्रित कार रिवर्स लेते समय चाय की गुमटी में जा घुसी। इसके पहले दो बाइक को भी नुकसान पहुंचाया। हादसे के बाद कार चालक मौके से फरार हो गया। मौके पर मौजूद लोगों ने उसे पकड़ने का प्रयास किया, लेकिन सफलता नहीं मिली। घटना स्कीम नंबर-78 स्थित टेलीपरफॉर्मेंस के बाहर तड़के 4.50 बजे की है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, अर्टिगा कार तेज रफ्तार में आई और संतुलन बिगड़ने से सड़क किनारे लगी चाय की गुमटी में जा घुसी। हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। ड्राइवर नशे की हालत में था। वह विजयनगर तरफ से आ रहा था। गुमटी से कार निकालने के दौरान उसने रिवर्स लेते हुए पास में खड़ी दो बाइक को भी टक्कर मार दी। इस दौरान सड़क किनारे खड़े लोगों की ओर भी कार बढ़ गई, जिससे लोग जान बचाने के लिए इधर-उधर भागे। तफरीह करने वाले लोगों ने शोर मचाया तो आसपास रहने वाले लोग जागे और मौके पर पहुंचे। हादसे के दौरान चाय की गुमटी बंद थी। आसपास रहवासियों की बाइक खड़ी थी, जो कार की चपेट में आ गई। पुलिस ने कार चालक की तलाश शुरू कर दी है।

राहगीर को तीन बदमाशों ने पीटा

इंदौर। बाइक सवार युवक पर डंडे से हमला करने वाले दो आरोपियों को एमआईजी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। वहीं वारदात में शामिल तीसरे आरोपी की तलाश लगातार जारी है। आरोपियों तक पहुंचने के लिए पुलिस ने 250 सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली, जिसके बाद उनकी पहचान हो सकी। पुलिस के अनुसार, 17 जुलाई की तड़के 4 बजे कृष्णबाग कॉलोनी निवासी निखिल पाटिल (22) ड्यूटी समाप्त कर बाइक से सत्यसाई चौराहे से घर लौट रहे थे। बफार्नी धाम स्थित पानी की टंकी के पास पड़ी ईंट को उन्होंने बाइक पर बैठे-बैठे हटाने की कोशिश की। इसी दौरान सामने से आए तीन बाइक सवार युवकों में से एक ने अचानक डंडे से निखिल के चेहरे पर हमला कर दिया। घटना की शिकायत मिलते ही पुलिस ने मामला दर्ज कर टीम गठित की। जांच के दौरान फुटेज में दिखाई दिए आरोपियों के हुलिए और उनके कपड़ों के आधार पर पुलिस ने गौतम उर्फ गोपाल बिल्लौरे और अरुण पिता मुकेश बनिया दोनों निवासी कृष्णबाग कॉलोनी को गिरफ्तार कर लिया। वहीं तीसरा आरोपी शुभम पिता राकेश रोकड़े फरार है।

एकेडमी के छात्रों ने जाने नशे के दुष्परिणाम

इंदौर। आबकारी विभाग ने 'नशा मुक्त भारत अभियान 2.0' चलाया। इसके अंतर्गत राजीव गांधी चौराहा स्थित आकार आईएएस एकेडमी में जागरूकता कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम में अकादमी के फैकल्टी सदस्य, विभागीय अधिकारी तथा बड़ी संख्या में प्रतियोगी परीक्षा के अभ्यर्थी उपस्थित थे। कार्यक्रम में सहायक जिला अधिकारी कमलेश सोलंकी ने कहा कि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए आत्मानुशासन, सकारात्मक सोच और नशामुक्त जीवनशैली सफलता की पहली शर्त है। उन्होंने अभ्यर्थियों से खुद को नशे से दूर रहकर दूसरों को करने का आह्वान किया। उप निरीक्षक आशीष जैन ने कहा कि सफलता और व्यसन कभी साथ नहीं चल सकते। नशे की शुरुआत अक्सर 'सिर्फ एक बार' से होती है, लेकिन धीरे-धीरे यही आदत व्यक्ति की इच्छाशक्ति कमजोर कर देती है।

ऑटो से 72 पेटी अंग्रेजी शराब जब्त

इंदौर। नशे से दूरी है जरूरी अभियान में कनाड़िया पुलिस ने बड़ी सफलता हासिल की है। पुलिस ने ऑटो से 72 पेटी अंग्रेजी शराब के साथ दो लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस को सूचना मिली थी कि ऑटो रिक्शा क्रमांक एमपी-09-बीएम- 9857 में बैठकर दो व्यक्ति अंग्रेजी शराब लेकर फिनिक्स मॉल की तरफ जा रहे हैं। सूचना पर पुलिस ने वाहन को नियोन पांडा गेम जोन के पास घेराबंदी कर रोका। चेक करने पर रिक्शा में पीछे की तरफ कार्टून रखे थे। कार्टून में 72 पेटी शराब भरी थी। मामले में पुलिस ने जगदीश पिता सूरजमल वर्मा निवासी शिवमंदिर के पास ग्राम कनाडिया तथा हरदेवसिंह पिता सुखसिंह परमार निवासी लाहर जिला भिण्ड हाल मुकाम स्कीम नंबर 134 वसुन्धरा अपार्टमेन्ट के पीछे को पकड़ा। जब्त शराब की कीमत 70 हजार रुपए और रिक्शा की कीमत 5 लाख रुपए हैं। पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर रही है।

दुकान से ग्राहक ने मोबाइल चुराया

इंदौर। ग्राहक बनकर आए युवक ने दुकानदार की नजर से बचते हुए मोबाइल चुरा लिया। एमजी रोड पुलिस को फरियादी कृष्णा पिता अवधेश कुमार ओझा निवासी संगम नगर ने बताया कि वह डॉलर मार्केट स्थित दुकान में ग्राहक को मोबाइल दिखा रहा था, तभी युवक काउंटर से मोबाइल उठाकर ले गया। कुछ देर बाद फरियादी ने देखा कि मोबाइल गायब हो गया तो उसने सीसीटीवी फुटेज देखे और उसे व्हाट्सएप ग्रुप में डाल दिया। इसके बाद मोबाइल ले जाने वाले युवक की पहचान यश सोनी निवासी छत्रीपुरा के रूप में हुई।

विवाद में मां-बेटे पर हमला - इलियास कॉलोनी में तात्कालिक विवाद में मां के साथ मारपीट की गई। इस दौरान बीच बचाव करने आए बेटे से भी विवाद किया। खजराना पुलिस को फरियादी अली पिता आरिफ पठान निवासी इलियास कॉलोनी ने बताया कि इरफान, इलू और अयान लोहार ने उन्हें किसी बात पर अपशब्द कहे। जब उन्हें मना किया तो उन्होंने मारपीट की।

डीएनए जांच से सुलझेगी उर्मिला हत्याकांड की उलझी गुत्थी, ट्रैक पर मिला संदिग्ध धड़

फरार पति के दस्तावेज शव के पास मिले, शिनाख्त को लेकर उलझा परिवार

इंदौर। डाक सहायक उर्मिला सैनी की सनसनीखेज हत्या के मामले में एक नया मोड़ आ गया है। वारदात के बाद से फरार चल रहे मुख्य आरोपी और मृतका के पति अखिलेश सैनी का शव घटना के 10वें दिन इंदौर से करीब 300 किलोमीटर दूर पवई स्टेशन के पास रेलवे ट्रैक पर पाए जाने का दावा किया जा रहा है। रविवार की अलसुबह गंजबासौदा के नजदीक मिले इस शव की स्थिति ने पुलिस और परिवार दोनों को उलझा दिया। क्योंकि, मौके से सिर्फ धड़ बरामद हुआ है और सिर गायब है। शव के पास से मिले पहचान पत्रों के आधार पर प्राथमिक रूप से इसकी शिनाख्त 45 वर्षीय अखिलेश सैनी के रूप में की गई है। रेलवे ट्रैक पर मिले धड़ की जेब से पुलिस को पैन कार्ड, आधार कार्ड और एक सुसाइड नोट भी मिला है। इस कथित सुसाइड नोट में अखिलेश ने अपनी अंतिम इच्छा जताते हुए लिखा है कि मेरी चिता को मुखाग्नि मेरा बेटा प्रायु ही दे। गौरतलब है कि उर्मिला सैनी की हत्या उनके घर के लिविंग रूम में बेहद बेरहमी से की गई थी, जहां आरोपी ने भारी चाकू से उनके गले, सीने और बाजू पर कई वार किए थे। पुलिस जांच में हत्या की वजह चरित्र पर शक करना सामने आई थी। वारदात को अंजाम देने के बाद आरोपी ने नए कपड़े पहने थे और वह सीसीटीवी कैमरे में भी कैद हुआ था। पुलिस ने उसकी गिरफ्तारी पर 20 हजार रुपए इनाम भी घोषित कर रखा था।

पिता ने पहचाना, बेटी का इंकार

पवई स्टेशन पर मिले धड़ की सूचना जब इंदौर पुलिस के जरिए परिजनों को दी गई, तो अखिलेश के पिता और बेटी गंजबासौदा पहुंचे। शव की हालत को देखकर परिवार में पहचान को लेकर मतभेद पैदा हो गए हैं। जहां एक तरफ पिता ने कपड़ों और कद-काठी के आधार पर इसे अपने बेटे अखिलेश का धड़ मान लिया है, वहीं दूसरी तरफ बेटी ने बिना सिर के शव को पहचानने से साफ इनकार कर दिया है। बेटी की इसी आपत्ति के बाद अब गंजबासौदा सिटी थाना पुलिस और इंदौर पुलिस संयुक्त रूप से इस मामले की कड़ियों को जोड़ने में जुट गई हैं।

असल पहचान डीएनए से होगी

इस संवेदनशील मामले में स्थानीय पुलिस अधिकारियों का कहना है कि शव का पोस्टमार्टम सोमवार सुबह कराया गया। चूंकि शव का सिर अभी तक लापता है, जिसकी तलाश गंजबासौदा पुलिस सरगर्मी से कर रही है, इसलिए शत-प्रतिशत शिनाख्त के लिए डीएनए टेस्ट का सहारा लिया जाएगा। एसीपी नीति दंडोतिया के मुताबिक, शव के पास से मिले दस्तावेजों के आधार पर इसे अखिलेश सैनी का ही माना जा रहा है, लेकिन वैज्ञानिक पुष्टि के लिए डीएनए जांच की औपचारिकता पूरी की जाएगी। इस जांच की रिपोर्ट आने और वहां से केस डायरी इंदौर ट्रांसफर होने के बाद ही उर्मिला मर्डर केस की इस अंतिम मिस्ट्री का पूरी तरह से पर्दाफाश हो सकेगा।

उस दिन यह घटना हुई

इस पूरे घटनाक्रम की शुरुआत 11 जुलाई को हुई थी, जब दोपहर के समय उर्मिला सैनी का खून से लथपथ शव उनके घर में मिला था। वारदात का पता तब चला जब उनके दोनों बच्चे स्कूल से वापस लौटे। घर का मुख्य दरवाजा खुला हुआ था और भीतर टेलीविजन की आवाज बहुत तेज थी। अंदर जाने पर बच्चों ने अपनी मां को मृत अवस्था में देखा, जिसके बाद उन्होंने अपने नाना सत्यनारायण मालाकार को फोन किया। बच्चों की रोने की आवाज सुनकर पड़ोसी भी जमा हो गए और पुलिस को सूचना दी गई। बेटी प्रेक्षा ने पुलिस को दिए बयानों में बताया था कि उसका पिता लंबे समय से मां पर शक करता था और पहले भी उनका गला दबाने का प्रयास कर चुका था।

नौकरी का सपना, मार्कशीट बाधा, 313 छात्रों के मूल दस्तावेज जब्त

पैसों के लिए धमकाया, कंसल्टेंसी संचालक गिरफ्तार किया

इंदौर। नौकरी दिलाने का झांसा देकर युवाओं से लाखों रुपए की उगाही करने वाले एक बड़े फर्जीवाड़े का खुलासा विजयनगर पुलिस ने किया है। ऑर्बिट मॉल स्थित अल्फा कंसल्टेंसी के संचालक मयंक सराफ को गिरफ्तार कर पुलिस ने उसके कब्जे से 10वीं और 12वीं कक्षा की 313 छात्रों की मूल अंकसूचियां (मार्कशीट) बरामद की हैं। शुरुआती जांच में सामने आया है कि आरोपी नौकरी दिलाने के नाम पर छात्रों से मूल दस्तावेज जमा कराता था और बाद में उन्हें लौटाने के बदले 5 से 10 हजार रुपये तक की मांग करता था। पुलिस के अनुसार कई छात्रों ने शिकायत की थी कि रोजगार दिलाने का भरोसा देकर उनसे मूल मार्कशीट जमा कराई गई, लेकिन नौकरी नहीं मिली। जब छात्रों ने अपने दस्तावेज वापस मांगे तो उनसे मोटी रकम मांगी गई। आरोप है कि पैसे नहीं देने पर उन्हें धमकाया भी जाता था। डीसीपी अमर सिंह राठौर ने बताया कि शिकायतों के आधार पर विजयनगर पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आरोपी मयंक सराफ को गिरफ्तार किया। पूछताछ के दौरान उसके कार्यालय से 313 छात्रों की मूल मार्कशीट बरामद हुईं। पुलिस ने आरोपी को रिमांड पर लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। जांच एजेंसियां अब यह पता लगाने में जुटी हैं कि इस फर्जीवाड़े का दायरा कितना बड़ा है और इसमें अन्य लोग भी शामिल हैं या नहीं। बरामद दस्तावेजों के आधार पर पीड़ित छात्रों से संपर्क किया जा रहा है। यह भी जांच की जा रही है कि कितने युवाओं से नौकरी के नाम पर रुपए वसूले गए और कितनों के मूल दस्तावेज अब तक रोके गए हैं।

पुलिस का मानना है कि पूछताछ में इस गिरोह से जुड़े कई और अहम खुलासे हो सकते हैं। वहीं पुलिस ने ऐसे युवाओं से भी सामने आने की अपील की है, जिन्होंने अल्फा कंसल्टेंसी के माध्यम से नौकरी के लिए आवेदन किया था या अपने मूल दस्तावेज जमा कराए थे। मामले में अन्य आरोपियों की भूमिका और वित्तीय लेनदेन की भी बारीकी से जांच की जा रही है।

अलमारी कारखाना संचालक की खून से लथपथ लाश, पास में चाकू मिला

इंदौर। चंदन नगर थाना क्षेत्र के राज नगर में रविवार सुबह एक कारखाना संचालक का घर की पहली मंजिल पर खून से लथपथ शव मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई। मृतक की पहचान 50 वर्षीय कमल कुमावत के रूप में हुई है। उनके शरीर पर चोट के कई निशान मिले हैं। शव के पास खून से सना चाकू भी बरामद हुआ है। पुलिस ने हत्या की आशंका के आधार पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार, रविवार सुबह कमल काफी देर तक कमरे से बाहर नहीं आए तो उनके भाई शेखर उन्हें देखने पहली मंजिल पर पहुंचे। कमरे का दरवाजा खोलते ही अंदर खून फैला हुआ था और कमल का शव पड़ा मिला। सूचना मिलते ही चंदन नगर थाना पुलिस और एफएसएल टीम मौके पर पहुंची और साक्ष्य जुटाए। परिजनों ने बताया कि कमरे का सामान भी बिखरा हुआ था, जिससे घटना से पहले संघर्ष होने की आशंका जताई जा रही है। कमल कुमावत अलमारी बनाने का कारखाना संचालित करते थे। उनकी पत्नी का पहले ही निधन हो चुका है, जबकि दोनों बच्चे घटना के समय गांव गए हुए थे। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

चने चुराने वाले तीन आरोपी गिरफ्तार

इंदौर। ट्रक से डालर चने चुराकर उसमें पानी की बोतल और पत्थर रखकर बेचने वाला युवक पुलिस के हत्थे चढ़ा है। पुलिस ने चना खरीदने वाले युवक को भी सहआरोपी बनाया है। भंवरकुआं पुलिस ने 24 घंटे में चोरी की वारदात का खुलासा कर दिया है। थाना प्रभारी संतोष दूधी के मुताबिक, 17 जुलाई को फरियादी राजुल पिता गोपाल दास सारडा ने समीर से 29 टन चना ट्रांसपोर्ट करवाया था, किंतु समीर अपने साथियों के साथ मिलकर चना की जगह पानी की बोतल और पत्थर रखकर 15 टन चना चोरी कर ट्रक लेकर भाग गया। जानकारी मिलने पर फरियादी ने आरोपी समीर के खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। शिकायत पर पुलिस ने आरोपी पर धारा 303(2) का केस दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी थी। आरोपी को पकड़ने टीम गठित की थी। टीम ने मुखबीर की सूचना पर आरोपी समीर पिता वाहिद खान निवासी डबलचौकी, सहआरोपी सतीश उर्फ सल्ला उर्फ आईडिया पिता रामबक्श निवासी हीरापुर बांध कांटाफोड़ जिला देवास और चना खरीदने वाले धर्मेन्द्र पिता संतोष राठौर निवासी अकबरपुर थाना डबलचौकी को गिरफ्तार कर लिया। आरोपियों के कब्जे से 28 बोरी चना जब्त किया गया है। पुलिस तीनों आरोपियों से कड़ाई से पूछताछ कर रही है।

ताऊ की मौत का मातम मनाने वाला ही आरोपी, नशे की लत में हत्या की

आरोपी ने स्वीकारा कि वह नशे का आदी, ताऊ ने पैसे नहीं दिए

इंदौर। राजनगर की एक शांत रात उस समय खौफनाक मंजर में बदल गई, जब 50 वर्षीय कमल कुमावत अपने ही घर में लहूलुहान मिले। सुबह होते ही घर में चीख-पुकार मच गई। सबसे ज्यादा विलाप करने वाला उनका 19 वर्षीय भतीजा चेतन कुमावत था। किसी को अंदाजा नहीं था कि जिस युवक की आंखों में आंसू दिखाई दे रहे हैं, उन्हीं हाथों ने कुछ घंटे पहले अपने सगे ताऊ की जान ले ली थी। घटना की सूचना मिलते ही चंदन नगर थाना प्रभारी तिलक कारोले अपनी टीम, डॉग स्क्वॉड, फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट, एफएसएल और साइबर सेल के साथ मौके पर पहुंचे। शुरुआती जांच में पुलिस को मामला रहस्यमय लगा। घर में जबरन प्रवेश के स्पष्ट संकेत नहीं मिले, लेकिन दीवारों पर खून के निशान और बिखरा सामान कई सवाल खड़े कर रहे थे। जांच आगे बढ़ी तो शक घर के भीतर ही सिमट गया।

परिजनों से अलग-अलग पूछताछ के दौरान चेतन के बयान बार-बार बदलने लगे। पुलिस ने जब वैज्ञानिक साक्ष्यों और परिस्थितिजन्य तथ्यों के आधार पर उससे गहन पूछताछ की तो वह टूट गया। उसने स्वीकार किया कि वह ब्राउन शुगर की लत का आदी है। नशे के लिए उसने ताऊ से रुपए मांगे थे, लेकिन मना करने पर उसके मन में बदले की भावना घर कर गई। आरोप है कि रात करीब ढाई बजे उसने रसोई से चाकू उठाया और सो रहे ताऊ पर ताबड़तोड़ वार कर दिए। हत्या के बाद अलमारी से नकदी तलाशने की कोशिश की, लेकिन रुपए नहीं मिले। पुलिस को गुमराह करने के लिए उसने खून से दीवार पर निशान बनाए, पड़ोसी की ओर जाने का झूठा सुराग तैयार किया और खून से सने कपड़े रोशनदान से बाहर फेंक दिए। सुबह वह सामान्य दिनचर्या का दिखावा करते हुए घर से निकला और कुछ देर बाद लौटकर खुद ही शोर मचाकर लोगों को बुलाने लगा।

घायल कमल को अस्पताल पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने हत्या में प्रयुक्त चाकू, आरोपी के कपड़े और अन्य महत्वपूर्ण साक्ष्य जब्त कर चेतन को गिरफ्तार कर लिया है।

मेट्रो स्टेशन के निर्माण से कंपन विवाद, जीएम प्रभावित इमारत में खुद रहेंगे

रहवासियों की शिकायत पर फ्लैट में लगाए गए निगरानी उपकरण

इंदौर। मल्हारगंज क्षेत्र में अंडरग्राउंड मेट्रो स्टेशन के निर्माण के दौरान कंपन और भूकंप जैसे झटके महसूस होने की शिकायतों ने नया मोड़ ले लिया। रहवासियों की आशंकाओं और मेट्रो प्रबंधन के दावों के बीच मेट्रो के जनरल मैनेजर रणवीर सिंह राजपूत ने स्वयं प्रभावित क्षेत्र की महंत कॉम्प्लेक्स में एक फ्लैट किराए पर लेकर वहीं से स्थिति की निगरानी करने का निर्णय लिया है। निर्माण कार्य पूरा होने तक वे इसी फ्लैट में रहकर कंपन संबंधी शिकायतों की वास्तविक स्थिति पर नज़र रखेंगे। फ्लैट में इसके लिए तकनीकी उपकरण भी लगाए गए हैं, जो निर्माण के दौरान होने वाले प्रभावों का लगातार परीक्षण करेंगे। मल्हारगंज में अंडरग्राउंड मेट्रो स्टेशन की खुदाई का काम जारी है। इसी दौरान आसपास रहने वाले लोगों ने कई बार शिकायत की कि निर्माण के समय उनके घरों में कंपन महसूस होता है, तेज आवाजें आती हैं और कुछ मकानों में दरारें भी दिखाई देने लगी हैं। इन शिकायतों के चलते कुछ समय के लिए निर्माण कार्य भी रुकवाया गया था। रहवासियों का कहना है कि वे कई महीनों से लगातार अपनी समस्या प्रशासन और मेट्रो अधिकारियों के सामने रख रहे हैं, लेकिन उनकी बातों को गंभीरता से नहीं लिया गया। उनका यह भी कहना है कि यदि स्थिति सामान्य थी तो अब अधिकारियों को स्वयं फ्लैट लेकर रहने की आवश्यकता क्यों महसूस हुई।

ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिला- दूसरी ओर मेट्रो प्रबंधन अपने रुख पर कायम है। अधिकारियों का कहना है कि शनिवार को निर्माण कार्य के दौरान सभी आवश्यक तकनीकी परीक्षण किए गए, लेकिन कहीं भी ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिला जिससे कंपन जैसी स्थिति की पुष्टि हो सके। उनका कहना है कि भूमिगत खुदाई की वर्तमान प्रक्रिया से इस प्रकार का कंपन तकनीकी दृष्टि से संभव नहीं है। अधिकारियों के अनुसार खुदाई के दौरान जेसीबी के पंजे से मिट्टी हटाने पर हल्की आवाज अवश्य होती है, जिसे कुछ लोग कंपन समझ रहे हैं।

कुछ लोग विरोध कर रहे- मेट्रो अधिकारियों का यह भी कहना है कि परियोजना की शुरुआत से ही कुछ लोग इसका विरोध कर रहे हैं और इसी कारण भ्रम की स्थिति पैदा की जा रही है। उनका कहना है कि रहवासियों को कम से कम असुविधा हो, इसलिए रात के समय केवल कंक्रीट डालने का कार्य किया जाता है, जबकि खुदाई और बोरिंग का काम केवल दिन में होता है।

संपादकीय

फीफा कप : स्पेन फिर बादशाह

एक अनजान से युवा खिलाड़ी फेर्रान टोरेस ने कशमकश भले विश्व कप फुटबॉल के फाइनल में अचानक प्रकट होकर ऐसा गोल दागा कि सारी दुनिया हैरान रह गई और स्पेन 16 साल बाद फिर फुटबॉल का बादशाह बन गया। इस युवा खिलाड़ी ने फुटबॉल की महाशक्ति अर्जेंटीना के नामवर खिलाड़ी लियोनेल मैसी का सपना भी तोड़ दिया, जो संभवतः इसी विश्व कप के साथ अपने फुटबॉल कॅरियर को विराम देना चाहते थे। न्यूयॉर्क के मेटलाइफ स्टेडियम में खेले गए रोमांचक खिताबी मुकाबले को पूरी दुनिया देख रही थी। मैच में दोनो टीमें एक दूसरे पर हमले कर रही थीं, लेकिन स्पेन की रक्षा पंक्ति अभेद्य साबित हुई। जब मैच टाइम में भी कोई फैसला न हो सका तो एक्सट्रा टाइम दिया गया। मैच के 106 वें मिनट में बतौर सब्स्टीट्यूट आए टोरेस गजब का गोल दागा और अर्जेंटीना की अनुभवी टीम हतप्रभ रह गई। मैच में स्पेन के पेड्रो पोरो के क्रॉस को निको विलियम्स ने हेडर से टोरेस की ओर बढ़ाया। बॉक्स के अंदर मौजूद फेर्रान टोरेस ने बिना समय गंवाए पहला ही शॉट गोलपोस्ट में पहुंचा दिया। यही गोल मैच का विजयी गोल साबित हुआ। वैसे पूरे मैच पर स्पेन की टीम का ही दबदबा रहा, जबकि अर्जेंटीना की टीम में केवल गोलकीपर एमिलियानो मार्टिनेज ही ढंग से खेलते दिखे। उन्होंने 12 गोल बचाए।

अर्जेंटीना खिताब भले ही नहीं जीत पाई हो, लेकिन उसके स्टार खिलाड़ी 39 साल 25 दिन की उम्र में लियोनेल मेसी विश्व कप फाइनल खेलने वाले सबसे उम्रदराज आउटफील्ड खिलाड़ी बने। वह विश्व कप के तीन फाइनल खेलने वाले इतिहास के केवल दूसरे खिलाड़ी बने। हालांकि फाइनल में हार ने मैसी को बहुत दुखी कर दिया और उनकी आंखों से आंसुओं की धार बह निकली। स्टेडियम में मौजूद हजारों दर्शकों ने उनका नाम लेकर उनका सम्मान किया और तख्तियां दिखाकर उन्हें आदराजंलि व्यक्त कर विदाई दी। इस जीत के साथ स्पेन ने कई रिकॉर्ड अपने नाम किए। पूरी प्रतियोगिता में स्पेन ने केवल एक गोल खाया और ऐसा करने वाली विश्व कप इतिहास की पहली चैंपियन टीम बनी। इसके अलावा स्पेन दो अलग-अलग मौकों पर लगातार यूरो कप और विश्व कप जीतने वाला दुनिया का पहला देश भी बन गया। उधर अर्जेंटीना फाइनल तो हारी ही, साथ ही उसके खिलाड़ियों का व्यवहार भी खेल भावना के अनुरूप नहीं था। अर्जेंटीना के मिडफील्डर लिएंड्रो परेडेस का गुस्सा फूट पड़ा। उन्होंने स्पेन के एरिक गार्सिया से भिड़ंत की और बीच-बचाव करने आए गावी के चेहरे पर भी मुक्का जड़ दिया। घटना के बाद परेडेस को रेड कार्ड दिखाया गया इस मैच को देखने अमेरिका के बड़बोले राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भी पहुंचे थे। मैच के बाद ट्रॉफी समारोह के दौरान उन्हें दर्शकों की हूटिंग का सामना करना पड़ा। स्पेन के कप्तान रोड्री को ट्रॉफी सौंपने के बाद वह खिलाड़ियों के बीच ही खड़े रहे, जिसके बाद अधिकारियों ने उन्हें मंच से हटने का इशारा किया। तनाव बढ़ता देख अर्जेंटीना के मुख्य कोच लियोनल स्कालोनी तुरंत मैदान में पहुंचे और अपने खिलाड़ियों को पीछे हटाया। अधिकारियों ने घटना की गंभीरता को देखते हुए परेडेस को रेड कार्ड दिखाया। इसके बाद दोनों टीमों के खिलाड़ी अलग हुए और मामला शांत हुआ। मैच में परेडेस के अलावा एंजो फर्नांडीज को भी रेड कार्ड दिखाया गया था। यहां तक कि हार के लिए अर्जेंटीना के रैफरी स्लावको विन्चिच भी सोशल मीडिया पर खूब ट्रोल हुए। मैच की खास बात यह भी रही कि स्पेन ने पूरे मुकाबले में दबदबा बनाए रखा और विश्व कप इतिहास में ऐसा करने वाली पहली टीम बनी जिसने पूरे टूर्नामेंट में सिर्फ एक गोल खाया। स्पेन टीम ने साबित कर दिया कि खिताब की सही हकदार वही थी।

नजरिया

अरुण कुमार त्रिपाठी

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

व्यक्तिगत रूप से ज्यादा असरदार होता है सत्याग्रह

जंतर मंतर के शिक्षा सत्याग्रह ने अजीब स्थिति पैदा कर दी है। यह स्थिति अन्यायी निजाम ने तो पैदा ही कि कि लेकिन अन्याय का विरोध करने वालों ने भी पैदा की है। कुछ लोग कह रहे हैं कि पर्यावरणविद् और शिक्षाविद् सोनम वांचुक का आमरण अनशन वास्तव में गांधीवादी है ही नहीं। क्योंकि अपने सत्रह बार के सत्याग्रह में गांधी ने कभी कुछ पाने और सत्ता का विरोध करने के लिए अनशन किया ही नहीं। दूसरी तरफ वे लोग हैं जो हंसी मजाक में विदेश की धरती से आए काकरोच जनता पार्टी के विचार को ही अन्यायियों द्वारा प्रायोजित एक नाटक के रूप में देख रहे हैं। यह दोनों तर्क नैष्कर्म्य (कुछ न करने) की ओर ले जाते हैं इसलिए इन पर समाज में बात होनी चाहिए। लेकिन यहां एक बात जरूर कहना चाहिए कि साजिश के सिद्धांत की कल्पना शक्ति और कुतर्कों की कोई सीमा नहीं होती इसलिए साजिश के आख्यान का एक सीमा तक ही प्रति उत्तर दिया जा सकता है।

सबसे पहले इस बात पर विचार होना चाहिए कि सोनम वांचुक का अनशन गांधीवादी है या नहीं। इसी के साथ यह भी प्रश्न है कि क्या गांधी ने कभी सरकार के विरुद्ध कोई अनशन किया था या नहीं? पहली बात यह है कि अनशन, सत्याग्रह या सिविल नाफरमानी को महज गांधी तक सीमित करना ठीक नहीं है। इसकी एक परंपरा है मानव इतिहास में। कुछ ऐतिहासिक तथ्यों के तौर पर दिखती है तो कुछ पौराणिक कथाओं के रूप में। गांधी पौराणिक कथाओं से लेकर ऐतिहासिक प्रसंगों से समान प्रेरणा ग्रहण करते थे। गांधी ने प्रहलाद, सुकरात, ईसा मसीह, मीरा और थोरो सभी से प्रेरणाएं ग्रहण कीं। गांधी की विशेषता यह थी कि वे चीजों को उनके उच्च स्तरीय दार्शनिक अर्थों में समझते थे। न की उनके शाब्दिक अर्थों में। आज के विध्नसंतोषी प्रवक्ता (विशेष कर कांग्रेस समर्थक वौद्धिक) वैसा समझने के लिए तैयार नहीं हैं। इस स्तंभकार ने एक बार 'वर्शिपिंग फाल्स गॉड' के बहाने अरुण शौरी पर एक आलेख तैयार किया। उसमें प्रीतीश नंदी की टिप्पणी यह थी कि अरुण शौरी चीजों को शाब्दिक अर्थों में लेते हैं। उसका भावार्थ नहीं समझते। जैसे कि अगर कह दिया जाए कि राजा सगर के साठ हजार पुत्र थे वे उसे गिनने लगेंगे और गिन कर बताएंगे कि, नहीं उसमें तो दस कम पड़ रहा है। ऐसा ही एक बौद्धिक वर्ग सत्याग्रह की परंपरा को महज गांधी तक बांध देना चाहता है जबकि गांधी स्वयं उसे हजारों साल पुरानी परंपरा बताते हैं।

इस विषय को बौद्ध विद्वान, अर्थशास्त्री और समाजवादी चिंतक कृष्णनाथ 'जनतंत्र और सत्याग्रह' नामक एक पुस्तिका में बेहद खूबसूरत ढंग से स्पष्ट करते हैं। वे लिखते हैं कि प्रहलाद पुराण की परंपरा का पहला ज्ञात सत्याग्रही है। संभव है कि दूसरे देशों की पौराणिक कथाओं में कोई ऐसा निकल आए जो कालक्रम के हिसाब से प्रहलाद से पहले का साबित हो और उसे स्वीकार करने में हमें खुशी ही होगी। लेकिन यहां कालक्रम का सवाल ही नहीं उठाना चाहिए। फिर वे सुकरात का जिक्र करते हुए कहते हैं कि सुकरात ने जहर का प्याला पिया, लेकिन जीभ का निरादर न होने दिया। उन्होंने अपनी वाणी पर कोई

पाबंदी नहीं मानी। ग्रीस का वह बूढ़ा सुकरात दुनिया के इतिहास का पहला ज्ञान सत्याग्रही है।

वे उन्नीसवीं सदी के दार्शनिक सत्याग्रही हेनरी डेविड थोरो के सत्याग्रह का वर्णन करते हुए कहते हैं कि अमेरिका मेक्सिको में लड़ाई लड़ रहा था। थोरो ने उस अमेरिकी सरकार को टोल टैक्स देने से इंकार किया जो गुलामी कायम रखती है और लड़ाई करती है। इसके लिए थोरो ने एक रात जेल में काटी। इसी अनुभव से निकला उसका लेख–रेजिस्टेंस टू सिविल गवर्नमेंट(1849)। जो बाद में सिविल डिसओबिडियंस के नाम से ज्यादा लोकप्रिय हुआ। थोरो से इमर्सन ने पूछा–तुम जेल में क्यों आए हो? थोरो ने इसके जवाब में सवाल किया...तुम जेल से बाहर क्यों हो? उसका तात्पर्य यह था कि जिस राज्य में एक भी आदमी अन्यायपूर्वक जेल में बंद हो उस राज में न्यायपूर्ण आदमी की न्याय संगत जगह जेल में है।

गांधी प्रहलाद से लेकर थोरो तक के तमाम सत्याग्रहियों का बार बार उल्लेख करते हैं। थोरो के लेख का तो गांधी जी ने इतनी बार उल्लेख किया कि वह मशहूर हो गया। यहां सवाल सत्याग्रह को शाब्दिक अर्थों में लेते हुए उसकी नकल करने का नहीं है। सवाल उसके भावार्थ को समझते हुए उससे प्रेरणा लेने की है। गांधी ने उन्हीं सत्याग्रहों से प्रेरणा लेते हुए अपने सत्याग्रह के हथियार की खोज की थी। लेकिन यहां यह बात गौर करने की है कि हर सत्याग्रही निजी ज्ञान, प्रतिबद्धता, क्षमता और परिस्थितियों के लिहाज से अपने सत्याग्रह की खोज स्वयं करता है। यह एक सतत होने वाला नवीन प्रयोग है न कि नकल जैसी पुनरावृत्ति। सभी कुछ जानते हुए गांधी ने अपने सत्याग्रह की खोज 11 सितंबर 1906 को ट्रांसवाल में काले कानूनों के विरुद्ध एक सभा में तब किया जब एक मुस्लिम भाई ने कहा कि हम अल्लाह के नाम पर इन कानूनों का विरोध करेंगे और कोई भी कष्ट उठाने के लिए तैयार हैं।

रही सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह की बात तो यह कहना तथ्यात्मक रूप से ठीक नहीं है कि गांधी ने ऐसा नहीं किया। गांधी ने जब सितंबर 1932 में दोहरी मतदान प्रणाली के कम्युनल अवार्ड के विरुद्ध येरवदा जेल में अनशन (20 से 24 सितंबर तक) किया और जिस पर प्यारेलाल जी ने 'द इपिक फास्ट' जैसी मशहूर पुस्तक लिखी। उसका निशाना कौन था? इसकी व्याख्या करते हुए राजमोहन गांधी लिखते हैं कि उसके निशाने पर तीन शक्तियां थीं। एक शक्ति भारतीय समाज की वह वर्ण व्यवस्था थी जो छुआछूत पर टिकी थी। दूसरी शक्ति के तौर पर वह ब्रिटिश साम्राज्य था जो हिंदू समाज को बांटने पर तुला हुआ था और गांधी इसमें हिंदू समाज का हित नहीं देखते थे। तीसरी शक्ति डॉ. आंबेडकर थे जो इस बात की जिद पकड़े थे कि अनुसूचित जाति के लोगों को कल्याण इसी में है चाहे गांधी की जान चली जाए। गांधी के इस अनशन (सत्याग्रह) पर पूरी दुनिया में बेचैनी थी। उसी सबका प्रभाव था कि जेल की चाहरदीवारी के भीतर से गांधी ने तीनों मोर्चों पर कामयाबी हासिल की। गांधी की जान बचाने को डॉ आंबेडकर राजी हुए, परिणामस्वरूप पूना समझौता हुआ, ब्रिटिश सरकार ने कम्युनल अवार्ड वापस लिया और हिंदू समाज अपनी छुआछूत पर लज्जित होते हुए उसे मिटाने में लग गया। 1932 वाला अनशन तो छोटा था लेकिन गांधी ने दूसरा अनशन 1943 में 21 दिन का किया क्योंकि अंग्रेज सरकार ने भारत छोड़ो आंदोलन के बाद उत्पन्न हिंसा की जिम्मेदारी कांग्रेस पर डाल दी थी। उसके विरुद्ध गांधी ने अनशन किया और कहा कि हिंसा की जिम्मेदारी अंग्रेज सरकार की है।

लेकिन इन सबसे बड़ा सवाल यह है कि आजकल सत्याग्रह असरदार क्यों नहीं हो रहा है। तमाम लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया है कि वो अंग्रेजों का जमाना था जो कि संघ परिवार से अधिक सभ्य थे इसलिए उन्होंने गांधी के सत्याग्रह पर ध्यान दिया। आज की सरकार अधिक क्रूर है। इसलिए उस पर किसी सत्याग्रह का असर नहीं होगा। ऐसे लोग क्रूर शक्तियों का गुस्सा और उनके कठोर कदमों की ओर ध्यान नहीं देते। वास्तव में इतिहास का नियम यह है कि जो जितना बड़ा अहिंसक हुआ है उसने सामने वाले अन्यायी में उतना ही बड़ा क्रोध पैदा किया है। प्रहलाद ने हिरण्यकश्यप में, बुद्ध ने देवदत्त में, सुकरात ने एटिनस में, ईसा ने यरुशलम के पुजारियों में, थोरो ने अमेरिकी गोरों में गांधी ने गोडसे में जबरदस्त क्रोध पैदा किया। वह ऐसा था कि सत्याग्रही की जान लेने से कम पर राजी नहीं था। इस लिहाज से भगत सिंह भी 'सत्याग्रह' ही कर रहे थे और ब्रिटिश सरकार ने उन्हें मृत्यु से कुछ कम देकर संतुष्ट हो नहीं सकती थी। क्योंकि भगत सिंह ने न तो अपनी जान बचाने की कोशिश की और न ही जेल से बाहर आने की।

वास्तव में जंतर मंतर की सिविल नाफरमानी (सत्याग्रह) को गैर-गांधीवादी बताने और सत्याग्रह की श्रेणी से बाहर रखने वाले एक किस्म के विघ्नसंतोषी हैं। उनका लक्ष्य निष्कर्म्य (कुछ न करने का) है। उनका यह तर्क समझ से परे है कि यह आंदोलन कांग्रेस पार्टी और उसकी जमीन छीनने के लिए है। वास्तव में यह अन्यायी की जमीन छीनने के लिए है और कांग्रेस पार्टी इस आंदोलन को अपने से क्यों नहीं जोड़ सकती या इससे खुद क्यों नहीं जुड़ सकती? या कांग्रेस और यह दोनों आंदोलन साथ साथ क्यों नहीं चल सकते? जीन शार्प, रिचर्ड ग्रेग, ग्लेन डी पेज, जोहान गाल्तुंग जैसे तमाम विदेशी विद्वानों ने गहरे शोध से यह प्रमाणित किया है कि हिंसा, अन्याय और युद्ध के विरोध में मानव व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से सदियों से सक्रिय है। अभी सत्याग्रह का सामूहिक रूप विकसित नहीं हुआ है इसलिए वह व्यक्तिगत रूप से ज्यादा असरदार होता रहा है और सामूहिक रूप विकसित होने तक उसे मुअत्तल करने का सुझाव ठीक नहीं है। दुनिया के तमाम देशों में उसका प्रभाव रहा है। इसलिए भारत में कुछ विघ्न संतोषियों के कुतर्क के चलते यह मान लेने का कोई कारण नहीं है कि वह सफल नहीं होगा।

समाज

प्रो. मनोज कुमार

लेखक मीडिया शिक्षा से संबद्ध हैं।

लिव-इन रिलेशनशिप : स्वतंत्रता नहीं, स्वच्छंदता

जब हम कानून के परिप्रेक्ष्य में चर्चा करते हैं तो कानून समाज में सभी के अधिकारों की बात करता है और इसे उसका दायित्व माना जा सकता है। जैसा कि लिव-इन रिलेशनशिप के लिए व्यक्तिगत स्वतंत्रता और संविधान के अनुच्छेद 21 के अंतर्गत जीवन एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हिस्सा माना है। इस पर समाज में लंबे समय से विमर्श चल रहा है और बातें आगे भी होती रहेंगी। इस संबंध में मध्यप्रदेश सरकार ने प्रस्तावित यूनिफॉर्म सिविल कोड (यूसीसी) के अंतर्गत लिव-इन रिलेशनशिप को लेकर कई महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं। यह कानून वर्तमान समय में सामाजिक और कानूनी दृष्टि से चर्चा का प्रमुख विषय बना हुआ है। सरकार का उद्देश्य लिव-इन संबंधों को कानूनी मान्यता प्रदान करने के साथ-साथ महिलाओं और बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

लिव-इन रिलेशनशिप क्या भारतीय समाज और उसकी व्यवस्था के अनुरूप है? क्या इससे सामाजिक ताना-बाना छिन्न-भिन्न नहीं हो रहा है? बिल्कुल इस नए किस्म के रिश्ते से कई तरह की समस्या उत्पन्न हो रही है। आए दिन अपराध के जो नए-नए मामले आ रहे हैं, वह कानूनी दृष्टि से एक बड़ी समस्या बन चुकी है तो समाज में अविश्वास का भाव उत्पन्न हो रहा है। जिस सनातनी समाज की हम कल्पना करते हैं, वहाँ वसुधैव कुटुंबकम की बात करते हैं, वहाँ इस तरह के नए रिश्तों को कोई जगह नहीं है। अलग-अलग किस्म के सर्वे में इस बात पर जोर दिया जा रहा है कि अब लड़कियाँ जल्द शादी नहीं करना चाहती हैं या नहीं करना चाहती हैं। कई ऐसे सेलिब्रेटी हैं जिन्होंने पिछले दिनों भारतीय विवाह संस्था को बेकार और बेकाम साबित करने वाले बयान दिए हैं। भारतीय वैवाहिक संस्था किसी धर्म के आधार पर नहीं बल्कि सुविचारित अनादिकाल से बनी हुई है। विवाह का अर्थ केवल संतान उत्पन्न करना नहीं है अपितु दो परिवार आपस में मिलते हैं और समग्र विकास, सहयोग और विश्वास का रिश्ता बनता है। यही भारतीयता का मूल आधार है लेकिन लिव-इन रिलेशनशिप ने जैसे इसे ताक पर रख दिया है।

जब हम कानून के परिप्रेक्ष्य में चर्चा करते हैं तो कानून समाज में सभी के अधिकारों की बात करता है और इसे उसका दायित्व माना जा सकता है। जैसा कि लिव-इन रिलेशनशिप के लिए व्यक्तिगत स्वतंत्रता और संविधान के अनुच्छेद 21 के अंतर्गत जीवन एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हिस्सा माना है। इस पर समाज में लंबे समय से विमर्श चल रहा है और बातें आगे भी होती रहेंगी। इस संबंध में मध्यप्रदेश सरकार ने प्रस्तावित यूनिफॉर्म सिविल कोड (यूसीसी) के अंतर्गत लिव-इन रिलेशनशिप को लेकर कई महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं। यह कानून वर्तमान समय में सामाजिक और कानूनी दृष्टि से चर्चा का प्रमुख विषय बना हुआ है। सरकार का उद्देश्य लिव-इन संबंधों को कानूनी मान्यता प्रदान करने के साथ-साथ महिलाओं और बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। संभव है कि जल्द ही प्रस्तावित प्रावधान अमल में लाया जा सके। सरकार जो कर सकती है, वह कर रही है। प्रस्तावित नए कानून में सबसे महत्वपूर्ण प्रावधान यह है कि लिव-इन संबंध में रहने वाले जोड़ों को अपने संबंध का पंजीकरण एक निर्धारित समय सीमा, अर्थात् एक महीने के भीतर कराना अनिवार्य होगा। सरकार का मानना है कि इससे संबंधों में पारदर्शिता आएगी तथा भविष्य में उत्पन्न होने वाले विवादों को कम किया जा सकेगा। प्रस्तावित कानून के अनुसार यदि कोई व्यक्ति निर्धारित समय में अपने लिव-इन संबंध का पंजीकरण नहीं कराता है, तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जा सकती है। कुछ रिपोर्टों के अनुसार नियमों के उल्लंघन पर दंड और कारावास का प्रावधान भी प्रस्तावित किया गया है। इसका उद्देश्य लोगों को कानून का पालन करने के लिए प्रेरित करना है। सरकार की चिंता इस बात से जाहिर होती है कि इस कानून का एक महत्वपूर्ण पहलू महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा है। कई बार लिव-इन संबंधों में महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक और कानूनी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। संबंध टूटने की स्थिति में महिलाओं के लिए भरण-पोषण, संपत्ति और बच्चों की देखभाल से जुड़े प्रश्न उत्पन्न होते हैं। प्रस्तावित कानून इन समस्याओं के समाधान के लिए एक कानूनी ढांचा प्रदान करने का प्रयास करता है। महिलाओं को सुरक्षा देने के लिए इसके अतिरिक्त, लिव-इन संबंधों से जन्म लेने वाले बच्चों को भी समान अधिकार देने का प्रावधान किया गया है। सरकार का मानना है कि किसी बच्चे के अधिकार उसके माता-पिता की वैवाहिक स्थिति पर निर्भर नहीं होने चाहिए। इसलिए ऐसे बच्चों को उत्तराधिकार और अन्य कानूनी अधिकार प्रदान करने की दिशा में कदम उठाए गए हैं। उपरोक्त बिंदु से सरकार की मंशा साफ है कि वह हर स्थिति में ऐसे रिश्ते में रहने वाली स्त्री को सुरक्षा दिलाना चाहती है। अब इसके बाद समाज का दायित्व होता है कि कानूनन लिव-इन रिलेशनशिप भले ही नाजायज ना हो लेकिन समाज की दृष्टि में वह जायज नहीं है। भारतीय कानून ने ही विवाह के लिए लड़के और लड़की की उम्र का निर्धारण कर उसे वयस्क अथवा अवस्यक बताया है। रूढ़िवादी भारतीय समाज का मानस बदलने के लिए राजा राममोहन राय ने विधवा विवाह परंपरा की शुरूआत की। जो लोग अकेले हो गए हैं, उसे सनातनी संस्कृति में नवजीवन शुरू करने का प्रावधान है फिर यह लिव-इन रिलेशनशिप जैसे रिश्तों में उलझने की जरूरत ही क्या है। जब लोग लिव-इन रिलेशनशिप के खतरे को समझ जाएंगे या मानने लगेंगे तो सरकार और कानून पर पडने वाला अतिरिक्त दबाव स्वयमेव समाप्त हो जाएगा। कथित विकासवादी सोच के लोगों के लिए लिव-इन रिलेशनशिप जरूरी हो सकता है औवे राज्य शासन के प्रस्तावित प्रावधान के खिलाफ हैं। प्रावधान पर कुछ आलोचकों का कहना है कि लिव-इन संबंध व्यक्तिगत स्वतंत्रता का विषय है और अनिवार्य पंजीकरण से निजता के अधिकार पर प्रभाव पड़ सकता है। उनका मानना है कि राज्य को व्यक्तिगत संबंधों में अत्यधिक हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। वहीं कुछ लोग इसे महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा के लिए आवश्यक कदम मानते हैं। कानूनी विशेषज्ञों का मत है कि यदि इस कानून को संतुलित तरीके से लागू किया जाए, तो यह सामाजिक न्याय की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है। विशेष रूप से उन महिलाओं के लिए, जिन्हें लिव-इन संबंध टूटने के बाद कानूनी संरक्षण प्राप्त नहीं हो पाता, यह कानून सहायक सिद्ध हो सकता है। दूसरी ओर, कानून बनाते समय व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निजता के संवैधानिक अधिकारों का भी ध्यान रखना आवश्यक है।

कुछ सामाजिक विचारकों और पारंपरिक दृष्टिकोण रखने वाले लोगों के अनुसार लिव-इन रिलेशनशिप को कानूनी मान्यता मिलने से विवाह संस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। विवाह भारतीय समाज की एक प्राचीन और महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था रही है, जो केवल दो व्यक्तियों का नहीं बल्कि दो परिवारों का भी संबंध मानी जाती है। यदि बिना विवाह के साथ रहने को कानूनी संरक्षण प्राप्त होता है, तो युवाओं में विवाह के प्रति प्रतिबद्धता और उसकी सामाजिक महत्ता कम हो सकती है। लिव-इन संबंध अपेक्षाकृत कम औपचारिक और आसानी से समाप्त किए जा सकने वाले संबंध माने जाते हैं। इससे दीर्घकालिक पारिवारिक स्थिरता प्रभावित होने की आशंका व्यक्त की जाती है। कुछ लोगों का मानना है कि इससे विवाह, परिवार और पारंपरिक सामाजिक मूल्यों के प्रति लोगों की आस्था कमजोर हो सकती है। इसके अतिरिक्त, पारिवारिक जिम्मेदारियों, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा बच्चों के पालन-पोषण से जुड़ी पारंपरिक धारणाओं में भी परिवर्तन आ सकता है। यह एक दृष्टिकोण मात्र है। कई विशेषज्ञों का मत है कि किसी भी संबंध की मजबूती केवल कानूनी व्यवस्था पर नहीं, बल्कि आपसी विश्वास, जिम्मेदारी और सामाजिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है। इसलिए विवाह संस्था पर वास्तविक प्रभाव समय के साथ सामाजिक परिवर्तनों के आधार पर ही स्पष्ट हो सकेगा। कहा जा सकता है कि मध्य प्रदेश में लिव-इन रिलेशनशिप से संबंधित प्रस्तावित कानून भारतीय समाज और कानूनी व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का संकेत देता है। यह कानून एक ओर महिलाओं और बच्चों के अधिकारों को मजबूत करने का प्रयास करता है, वहीं दूसरी ओर व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निजता के अधिकार को लेकर नई बहस उत्पन्न हो गई है। समय-समय पर डॉक्टर भी सजग करते रहे हैं कि अधिक उम्र में विवाह अनेक शारीरिक समस्या का कारण बनता है, खासतौर पर माँ-बाप बनने में वहीं लिव-इन रिलेशनशिप में आप संतान उत्पत्ति के लिए स्वतंत्र हैं लेकिन बच्चे के कानूनी अधिकार पर सब खामोश हैं और ऐसे में राज्य सरकार का प्रावधान अनुकूल है। भारतीय समाज में यह अंधानुकरण भविष्य के लिए खतरा साबित हो रहा है। रिश्तों में अविश्वास उत्पन्न हो गया और युवा वर्ग लिव-इन रिलेशनशिप में स्वतंत्रता को स्वच्छंदता समझ बैठा है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

शांतिलाल जैन

लेखक व्यंग्यकार हैं।

मृत्यु का प्रमाणपत्र और नागरिकता का संकट

मेरी एक विनम्र सलाह है श्रीमान। अपने परिजनों से कह कर रखें कि आपका अंतिम समय जब भी आए तो आपका मृत्यु प्रमाणपत्र आपके सिरहाने रख दिया जाए। साथ में ले जाने में सुभीता रहे। ट्रेवल डॉक्यूमेंट है श्रीमान्, इहलोक से परलोक तक की यात्रा का वैध दस्तावेज। हालाँकि यह आपके आर्यावर्त के नागरिक होने का प्रमाण नहीं है, तब भी यात्रा के दौरान लगता है।

क्या!! पासपोर्ट के बाबत नहीं सुना आपने? पासपोर्ट आपके नागरिक होने का प्रमाण नहीं है - ट्रेवल डॉक्यूमेंट है। मृत्यु प्रमाणपत्र में इतना तो लिखा है कि आप मरे हैं मगर यह नहीं लिखा कि आप आर्यावर्त के नागरिक के तौर पर मरे हैं।

क्या कहा आपने? मरने से पहले मरने का प्रमाणपत्र कैसे बनेगा? तो या तो आप बहुत भोले हैं या बेवकूफ़। रिश्वत के बाबत नहीं सुना आपने? इसे दिए जाने के बाद आप हर उस सज्जन का डेथ सर्टिफिकेट बनवा सकते हैं जो कभी जन्मा ही नहीं। प्रॉविजिनल डेथ सर्टिफिकेट भी बनवाकर रख सकते हैं - सब्जेक्ट टू बी इफेक्टिव फ्रॉम दी एक्चुअल टाईम ऑफ़ डेथ। मेरी बात को सिंसियरली लीजिए श्रीमान्, इस बार आप झूमरीतलैया तक नहीं जा रहे, बैकुंठधाम व्हाया अंतरिक्ष जा रहे हैं। वैतरणी पड़ेगी रास्ते में। हो सकता है डेथ सर्टिफिकेट के अभाव में कामधेनु पूँछ पकड़वाने से मना कर दे। कागज़ दिखाए बगैर वैतरणी पार नहीं कर पाएँगे आप।

अब आप पूछेंगे कि मुझे कैसे पता परलोक यात्रा के बारे में? तो मैं बताना चाहता हूँ कि मैं अभी अभी जाकर वापस आया हूँ। वापस क्या आया हूँ वापस भेज दिया गया हूँ। वो तो अच्छा है मैंने अपना डेथ सर्टिफिकेट पहले से बनवाकर रखा था, रास्ते में दिक्कत नहीं आई। लेकिन पहुँचने पर मुझे बैकुंठधाम के दरवाजे से ही बैक-टू-पेवेलियन कर दिया गया। हालाँकि मेरे पास आधार कार्ड भी था। बोले - आधार केवल आपकी पहचान और पते का दस्तावेज़ है, नागरिकता का नहीं। बैकुंठ में प्रवेश की अनुमति आर्यावर्त के नागरिक शांतिलाल जैन वल्द मोतीलाल जैन, उम्र 66 वर्ष, हाल मुकाम उज्जैन के नाम की है। आपकी पहचान तो साबित हो रही है नागरिकता साबित नहीं होती। उसके बिना आप अंदर नहीं जा सकते।

'हे देव, मैं आया नहीं हूँ, आपके प्रतिनिधि ही मुझे लाए हैं। क्या वे सिर्फ पहचान का प्रमाणपत्र देखकर लाते हैं?'

उन्होंने कहा - 'नागरिकता साबित करने की जिम्मेदारी आपकी स्वयं की है।'

'हे देव, मेरे पास मतदाता पहचान पत्र भी है।'

वे बोले - 'मतदाता पहचान पत्र सिर्फ मतदान करने का अनुमति पत्र है, नागरिकता का दस्तावेज़ नहीं है। आपने 2003 में वोट दिया था? यदि हाँ, तो विधान सभा क्रमांक, बूथ क्रमांक, वोटर सीरियल नंबर बताईए।'

'वो तो याद नहीं है।'

'तब तो कुछ नहीं हो सकता।'

'हे देव, मैंने अपना जन्म प्रमाणपत्र संभालकर रखा है। कुछ देर के लिए भैंसा दिलवा दें तो जाकर ले आता हूँ।'

'अकेले आपके जन्म प्रमाणपत्र से नहीं होगा। आपके माता-पिता का, उनके माता-पिता का, उनके भी माता-पिता का बर्थ सर्टिफिकेट लगेगा।'

'वो तो नहीं है हमारे पास।'

'तब तो आप आर्यावर्त के नागरिक नहीं हैं। जल्दी वापस निकल जाईए।'

'हे देव, मैं उस दुखियारी दुनिया में वापस जाना नहीं चाहता जहाँ मुझे बार-बार अपनी नागरिकता साबित करनी पड़े।'

देखिए बैकुंठधाम केवल आर्यावर्त के नागरिकों के लिए आरक्षित है। विवश होकर हमें आपको डिटेंशन सेंटर में रखना पड़ेगा जो पहले ही भरा पड़ा है, पाँव रखने की भी जगह नहीं है। आप तुरंत लौट जाएँ - यही बेहतर होगा आपके लिए। मरता क्या न करता! बल्कि मरा हुआ क्या ही करता!! परिजनों को भनक लगे उससे पहले आकर शरीर में दाख़िल हो गया हूँ और अब आपसे मुख़ातिब हूँ।

न्याय और कानून

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

मध्य प्रदेश में धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम का पालन

देश के प्रत्येक नागरिक को अधिकार है, कि वह अपनी पसंद के धर्म का प्रचार-प्रसार, अभ्यास करने के लिए स्वतंत्र है। यह कानून सरकार के हस्तक्षेप के भय के बिना सभी को अपने धर्म का प्रचार करने के अधिकार का अवसर प्रदान करता है। लेकिन, साथ ही राज्य द्वारा यह अपेक्षा की जाती है कि वह देश के अधिकार क्षेत्र के भीतर सौहार्द्रपूर्ण ढंग से इसे लागू करें। क्योंकि, भारत विभिन्न धर्मों का पालन करने वाले और विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोगों का देश है। इतनी विविधतापूर्ण आबादी के साथ विभिन्न धर्मों और विश्वासों का पालन करते हुए प्रत्येक धर्म की आस्था के संबंध में अधिकारों की रक्षा और उन्हें सुरक्षित करना आवश्यक हो जाता है।

सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में एक ऐसे व्यक्ति के खिलाफ आगे की आपराधिक कार्यवाही पर रोक लगाई, जो हिंदू धर्म का पालन करने वाला बताया जाता है। इस पर मध्य प्रदेश में एक परिवार को इस्लाम अपनाने के लिए मजबूर करने का आरोप है। न्यायालय ने इस याचिका पर नोटिस जारी किया। इस याचिका में मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के उस आदेश को चुनौती दी गई, जिसमें मध्य प्रदेश धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम की धारा 3 और 5 और भारतीय दंड संहिता की धारा 506 के तहत दर्ज पुलिस रिपोर्ट रद्द करने से इंकार कर दिया था। पुलिस रिपोर्ट के अनुसार, शिकायतकर्ता के पति ने याचिकाकर्ता की सलाह पर आठ साल पहले इस्लाम अपना लिया था। सुनवाई के दौरान, याचिकाकर्ता के वकील ने कहा कि पुलिस रिपोर्ट दर्ज करने में आठ साल की देरी हुई है। शिकायतकर्ता के पति ने आठ साल पहले ही इस्लाम अपना लिया था। उन्होंने यह भी बताया कि याचिकाकर्ता और उसका परिवार हिंदू धर्म का पालन करते हैं।

सरकार की ओर से याचिका का विरोध किया गया। जांच के दौरान दर्ज बयानों का भी हवाला दिया गया। इसमें शिकायतकर्ता के नाबालिग बेटे का बयान भी शामिल था। उसने याचिकाकर्ता को दोषी ठहराया था। यह तर्क दिया गया कि जांच पूरी हो चुकी है और आरोपों को साबित करने के लिए पर्याप्त सबूतों के आधार पर चार्जशीट दाखिल की गई। उच्च न्यायालय ने अपने आदेश में कहा था कि याचिकाकर्ता को कथित अपराध से जोड़ने वाले प्रथमदृष्टया सबूत मौजूद हैं। न्यायालय ने गौर किया कि शिकायतकर्ता और उसके नाबालिग बेटे के बयानों में विशेष रूप से शिकायतकर्ता के परिवार पर दबाव डालने में याचिकाकर्ता की भूमिका का उल्लेख किया गया है। न्यायालय ने 'निहारिका इंफ्रास्ट्रक्चर बनाम महाराष्ट्र राज्य'' मामले का हवाला दिया, जिसमें सर्वोच्च न्यायालय ने उच्च न्यायालयों को कहा था कि वे दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 482 और भारत के संविधान के अनुच्छेद 226 के तहत मामले रद्द करने की याचिकाओं पर विचार करते समय ऐसे आदेश न दें जिनमें जांच पूरी होने और अंतिम रिपोर्ट दाखिल होने तक गिरफ्तारी न करने या ''कोई सख्त कार्रवाई न करने'' की बात कही गई हो।

इन गाइडलाइन का पालन करते हुए उच्च न्यायालय ने इस बात पर जोर दिया कि याचिकाकर्ता की भूमिका की जांच ट्रायल के दौरान ठोस सबूतों के आधार पर की जानी चाहिए। यह कहा गया कि याचिकाकर्ता को अभियोजन पक्ष के गवाहों से जिरह करने और अपना बचाव पेश करने का मौका मिलेगा। न्यायालय ने निष्कर्ष निकाला कि कार्यवाही को रद्द करना जल्दबाजी होगी। इसलिए याचिका खारिज कर दी गई। इससे असंतुष्ट होकर याचिकाकर्ता सर्वोच्च न्यायालय पहुंचा था। उसका कहना था कि प्रत्येक नागरिक को अधिकार है कि वह अपनी पसंद के धर्म का प्रचार-प्रसार, अभ्यास करने के लिए स्वतंत्र है। यह कानून सरकार के हस्तक्षेप के भय के बिना सभी को अपने धर्म का प्रचार करने के अधिकार का अवसर प्रदान करता है। लेकिन, साथ ही राज्य द्वारा यह अपेक्षा की जाती है कि वह देश के अधिकार क्षेत्र के भीतर सौहार्द्रपूर्ण ढंग से इसे लागू करें। भारत विभिन्न धर्मों का पालन करने वाले और विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोगों का देश है। प्यू रिसर्च सेंटर के वर्ष 2021 के आंकड़ों के अनुसार, 4, 641, 403 लोग ऐसे हैं जो छह प्रमुख धर्मों हिंदू धर्म, जैन धर्म, इस्लाम, बौद्ध धर्म, सिख धर्म और ईसाई धर्म के अलावा अन्य धर्मों का पालन करते हैं। इतनी विविधतापूर्ण आबादी के साथ विभिन्न धर्मों और विश्वासों का पालन करते हुए प्रत्येक धर्म की आस्था के संबंध में अधिकारों की रक्षा और उन्हें सुरक्षित करना आवश्यक हो जाता है।

धर्मनिरपेक्षता, 1976 में 42वें संविधान संशोधन द्वारा संविधान की प्रस्तावना में 'धर्मनिरपेक्ष शब्द को जोड़ा गया। भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य होने के नाते इसका कोई राज्य धर्म नहीं है। इसका अर्थ है कि यह किसी विशेष धर्म का पालन नहीं करता है। अहमदाबाद सेंट जेवियर्स कॉलेज बनाम गुजरात राज्य (1975) मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि धर्मनिरपेक्षता का अर्थ न तो ईश्वर विरोधी है और न ईश्वर समर्थक। उक्त धर्मनिरपेक्षता सिर्फ यह सुनिश्चित करती है कि, राज्य के मामलों में ईश्वर की अवधारणा को समाप्त करते हुए धर्म के आधार पर किसी को अलग नहीं किया जाए। अनुच्छेद 25 धार्मिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है, जिसमें किसी धर्म को स्वतंत्र रूप से मानने, अभ्यास करने और प्रचार करने का अधिकार शामिल है। अनुच्छेद 26 धार्मिक मामलों के प्रबंधन की स्वतंत्रता देता है। अनुच्छेद 27 किसी धर्म विशेष के प्रचार के लिए करों के भुगतान के रूप में स्वतंत्रता निर्धारित करता है। साथ ही अनुच्छेद 28 कुछ शैक्षणिक संस्थानों में धार्मिक शिक्षा अथवा धार्मिक पूजा में उपस्थिति होने की स्वतंत्रता देता है।

मध्य प्रदेश राज्य द्वारा भी मध्य प्रदेश धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम, 2020 पारित किया गया है। मध्य प्रदेश धर्म स्वतंत्रता अध्यादेश, 2020 को 7 जनवरी, 2021 को लागू किया गया था। इस अध्यादेश में धर्मांतरण की प्रक्रिया निर्दिष्ट की गई है और अवैध धर्मांतरण पर रोक लगाई गई है। यह अध्यादेश मध्य प्रदेश धर्म स्वतंत्रता अधिनियम, 1968 को निरस्त करता है, जो पहले राज्य में धर्मांतरण को नियंत्रित करता था। धर्मांतरण की प्रक्रिया, अधिनियम के अनुसार, धर्मांतरण के इच्छुक व्यक्तियों, धर्मांतरण कराने पुजारियों और धर्मांतरण का आयोजन करने वाले व्यक्तियों को प्रस्तावित धर्मांतरण की सूचना जिला मजिस्ट्रेट (डीएम) को साठ दिन पहले देनी होगी। इस प्रक्रिया का उल्लंघन करने पर तीन से पांच वर्ष तक का कारावास और कम से कम पचास हजार रुपए का जुर्माना हो सकता है।

जबरदस्ती, बल प्रयोग, गलत बयानी, अनुचित प्रभाव और प्रलोभन, धोखाधड़ी या विवाह आदि माध्यमों से धर्म परिवर्तन को प्रतिबंधित करता है। साथ ही किसी व्यक्ति को ऐसे धर्म परिवर्तन में सहायता करने और षड्यंत्र रचने से भी रोकता है। इनमें से किसी भी माध्यम से किया गया धर्म परिवर्तन अमान्य माना जाएगा। हालांकि, किसी व्यक्ति द्वारा अपने पैतृक धर्म में पुनः परिवर्तित होना धर्म परिवर्तन नहीं माना जाएगा। पैतृक धर्म वह धर्म है जिसका पालन व्यक्ति के जन्म के समय उसके पिता करते थे। धार्मिक रूपांतरण से जुड़े विवाह। धार्मिक रूपांतरण से जुड़ा विवाह अमान्य घोषित किया जाएगा। यदि यह किसी व्यक्ति को परिवर्तित करने के इरादे से किया गया हो और यदि रूपांतरण उपरोक्त निषिद्ध साधनों में से किसी के माध्यम से हुआ हो।

अधिनियम के अंतर्गत, गैरकानूनी धार्मिक धर्मांतरण के विरूद्ध पुलिस में शिकायत दर्ज कराई जा सकती है। ऐसे मामलों में ऐसे धर्मांतरण के शिकार व्यक्ति द्वारा उसके माता-पिता या भाई-बहनों द्वारा या रक्त संबंध, विवाह संबंध, दत्तक ग्रहण संबंध और न्यायालय की अनुमति से अभिभावक या संरक्षक के रूप में संबंधित किसी अन्य व्यक्ति द्वारा कराई जा सकती है। ऐसी शिकायतों की जांच करने का अधिकार सब-इंस्पेक्टर और उससे ऊपर की रैंक के पुलिस अधिकारी के पास है। उत्तराधिकार और भरण-पोषण का अधिकार। अवैधधार्मिक रूपांतरण से जुड़े विवाह से जन्मा बच्चा वैध माना जाएगा। ऐसे बच्चों को केवल पिता की संपत्ति पर अधिकार होगा और पिता के उत्तराधिकार संबंधी कानून के अनुसार ही उन्हें संपत्ति मिलेगी। इसके अतिरिक्त अधिनियम के अंतर्गत ऐसी महिला जिसका विवाह अधिनियम के तहत अवैध माना गया है और ऐसे विवाह से जन्मे उसके बच्चों के भरण पोषण देने का प्रावधान है।

अध्यादेश में तालिका 1 में निर्दिष्ट अनुसार अवैध, धार्मिक धर्मांतरण कराने या उसमें सहायता करने पर दंड का प्रावधान है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक बार अपराध दोहराने पर जुर्माना और पांच से दस वर्ष तक की करावास की सजा भी होगी। अधिनियम के अंतर्गत सभी अपराध संज्ञेय, गैर-जमानती और सत्र न्यायालय द्वारा विचारणीय है। अधिनियम में यह भी प्रावधान है कि सत्र न्यायालय किसी अभियुक्त व्यक्ति पर दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 के अंतर्गत लगाए गए अन्य अपराधों के लिए भी एक ही सुनवाई में मुकदमा चला सकता है।

क्योंकि सिर्फ पढ़ना नहीं, जरूरी है तो बस समझना

विचार

गरिमा विजयवर्गीय

लेखक पत्रकार हैं।

पिछले कुछ दिन खूब बरकत में बीते। बच्चों को दादी-नानी, दोनों का या किसी एक का लगातार सानिध्य बना रहा। लंबी थका देने वाली कई यात्राओं के बीच भी बच्चे भरपूर आनंद में रहे। लड्डू-मठरी से लेकर इडली-डोसा तक, दादी-नानी के पिटारे से सब कुछ फटाफट निकल आता है। न केवल परंपरागत चीजें, बल्कि अब नए जमाने के साथ चलने नए प्रयोगों से भी कोई गुरेज़ नहीं इस पीढ़ी को। और मेरी पीढ़ी की स्त्रियां बस यही सोच कर हैरान रह जाती हैं कि किस मिट्टी की बनी हैं, जो न केवल अपने बच्चों को, बल्कि उनके भी बच्चों की हर ख्वाहिशों को पूरा करने हमेशा आतुर रहती हैं।

किचन, कथित प्रगतिशील लोगों का बेहद पसंदीदा विषय, जिसे महिलाओं के पिछड़ेपन से जोड़ना सबसे आसान लगता है उन्हें। इस वर्ग को न जाने क्यों यह लगता है अगर महिला पढ़ ली है, अच्छी नौकरी कर रही है, तो वह सबसे पहले किचन से ही दूरी बनाएगी। जबकि ज़्यादातर मामलों में होता ये है कि जो हाथ अपने कार्यक्षेत्र में जितने हुनर से कागज़ और क़लम थामे रहते हैं, वो उसके कुछ ही घंटों बाद उतनी ही सहजता और स्नेह से कड़ाही और करछी भी पकड़ लिया करते हैं। कुछेक अपवाद छोड़ भी दें, तो दोहरे मोर्चे के ये चयन खुद से ही होते हैं, किसी दबाव के चलते नहीं।

अब आएं उन स्त्रियों पर जिन्होंने तमाम उम्र सिर्फ और सिर्फ किचन में ही बिताई है। ये दावे से कहा जा सकता है कि भारी भरकम चार किताबें नहीं पढ़ी होंगी उन्होंने, लेकिन किताबी ज्ञान रोजमर्रा की जिंदगी में कैसे अप्लाई होता है, यह उनसे बेहतर शायद ही कोई जानता हो। सिविल इंजीनियरिंग का नाम तक नहीं पता होगा उन्हें, पर ये बखूबी जानती हैं वो कि दरदरी सी सूजी में चुटकी भर अपेक्षाकृत महीन मैदा मिलाने से ही बनी हुई चीज में मजबूती आती है। सेंट्रीफ्यूजन फोर्स क्या बला है, इसका इल्म कतई नहीं हो सकता उन्हें, बस इतना पता है कि मक्खन में से घी जल्दी निकालने के लिए चम्मच घुमाने में किस तरफ ताक़त लगानी चाहिए। रोज़मर्रा के खर्च के तनाव में डूबी वो स्त्रियां नहीं जानती होंगी कि किसी भी द्रव्य में पृष्ठ तनाव नाम का कोई गुण भी होता है। वे तो बस इतना जानती हैं कि बाती की लौ पतली रखने से वो घी कम पीती है और भगवान का दीपक ज़्यादा देर तक जलता है।

एक नहीं, ऐसे तमाम उदाहरण बिखरे पड़े हैं, जो बताते हैं कि कभी चार अक्षर भी ना पढ़ीं घरेलू स्त्रियां उन चीजों का कितनी बारीकी से प्रैक्टिकल इंप्लीमेंट करती हैं, जिनकी हम सिर्फ भारी भरकम परिभाषाएं रटते हैं, किताबों से।

ब्याह के बाद जब मैं ससुराल गई तो सासु मां ने कहा, 'चौका एक चक्की है, जिसमें नौकरी के साथ बहुत ज्यादा ना सही, पर थोड़ा बहुत भी पिसोगी, तभी पार पाओगी'। ठीक ही तो कहा था उन्होंने, गेहूं, बाजरा हो या मक्का, अपनी गति को पाने की प्रक्रिया कुटने, पिसने और तपने की राह से गुज़रे बिना पूरी हो सकती है क्या?

अमृत के लिए खोदे जा रहे हैं गड्ढे

वक्रोक्ति

यशवंत गोरे

लेखक व्यंग्यकार हैं।

हिंदू पौराणिक कथाओं की एक अत्यंत प्रसिद्ध घटना है अमृत मंथन (समुद्र मंथन)। देवताओं और असुरों ने अमरता का अमृत पाने के लिए समुद्र का मंथन किया था। इस प्रक्रिया से चौदह दिव्य रत्न निकले और अंत में अमृत प्राप्त हुआ।

लगता है सरकार ने इसी से प्रेरित होकर नगरों के विकास के लिए एक योजना 'अमृत' शुरू की जो सरकार की इस योजना का संक्षिप्त नाम हैं। हालांकि इसका नाम पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर रखा है। इस योजना का पूरा नाम अटल कायाकल्प एवं शहरी परिवर्तन मिशन (अमृत) हैं। इस योजना में शहरों के सीवेज नेटवर्क और पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करने वाले बुनियादी ढांचे की स्थापना करना है। इस 'सीवेज' योजना को 'अमृत' नाम देना बड़ा हास्यास्पद लगता है। इस योजना को अमली जामा पहनने में सोसाइटियों और कालोनियों में खुदाई के कारण 'अमृत' मिले या ने मिले रहवासियों के जीवन में एक विष सा जरूर घोल दिया हैं।

जिस प्रकार पौराणिक कथा में असुरों और देवताओं में लड़ाई शुरू कर दी और सारा अमृत छीनकर भागने लगे थे। उसी प्रकार इस 'अमृत' योजना के लिए भी जन प्रतिनिधि अपने अपने क्षेत्र में शासन ने लड़ाई कर छीनने में लगे हुए हैं। जन प्रतिनिधियों को लगता है कि इससे उनके राजनीतिक जीवन में अमरता मिलेगी। काम करने वाला ठेकेदार भी 'मोहिनी' रूप धारण कर विश्वास दिलाता है कि वह निष्पक्ष रूप से अपने हिस्से के कमीशन रूपी 'अमृत' शासन में ऊपर बैठे नेताओं और अफसरों के साथ जन प्रतिनिधियों को भी पिलाएगा।

इस अमृत को योजना का लाभ लेने शायद ही कोई शहर बचा हो जहां पाइप लाइन बिछाने के लिए गड्ढे नहीं खोदे गए हो। पुरे देश में सनातन की गूंज है पर जहां देखो वहां निर्माण के नाम पर 'खुदा ही खुदा' नजर आता है। समुद्र मंथन में देवताओं और असुरों के बीच लड़ाई हुई थी परन्तु यहाँ तो ठेकेदार और कालोनियों/रहवासियों के बीच लड़ाइयाँ हो रही हैं। ठेकेदार अधूरा और मनमाने ढंग से काम करने से लोगों के दैनिक जीवन में विष सा घुल गया है। ऊपर वाला तो अमृत बरसा रहा है पर यहाँ निचे इस अमृत से खुदे गड्ढों में पानी भर जाने से दुर्घटनाएं हो रही है। हाथ - पैर टूट रहे है। घर से गाड़ियां निकलना कठिन है। बुजुर्ग लोग सावधानी रखकर साइबर अपराधियों के डिजिटल अरेस्ट से अपने आप को बचा रहे है पर बिना अपराध के इस खुदाई के कारण 'होम अरेस्ट' होने को मजबूर है। समुद्र मंथन में चौदह दिव्य रत्न निकले थे। इस 'अमृत' योजना में भी कालोनियों/सोसायटियों की रहवासियों में से कई रत्न निकल रहे है।हर कोई विशेषज्ञ बनकर अपने ज्ञान का उपयोग ठेकेदार और काम करने वाले मजदूरों को ज्ञान बाँट रहे हैं। कोई सलाह दे रहा है कि गड्ढों की गहराई कम रखी जा रही है। कोई डाले जाने वाले पाइप में कमियां बता रहा है। जो वैज्ञानिक रहे हैं, खुदाई में निकली मिट्टी की गुणवत्ता पर प्रश्न चिन्ह लगा कर योजना के अनुकूल नहीं बता रहे है। कई ऐसे इंजीनियर, वैज्ञानिक, आर्किटेक्ट बिना खोजे बाहर आ रहे है और बिना मांगे सलाह दे रहे है। ऐसे इंजीनियर जो नौकरी में रहते हुए सरकार को चूना लगाते रहे, अपने ऊपर वाले अफसरों/नेताओं को मलाई खिलाते रहे और खुद खुरचन में काम चला कर ईमानदार बनते रहे, वे ठेकेदार और जनप्रतिनिधियों पर भ्रष्टाचार का आरोप लगा रहे है। सरकार तो चाहती है कि इस 'अमृत' का लाभ रहवासियों से लेकर सत्ता और सरकार में बैठे हर उस व्यक्ति को मिले जो इसके 'मंथन' में लगा है, पर इस मंथन में फ़िलहाल तो विष ही निकला हैं, 'अमृत' का इंतजार है।

जगन्नाथ यात्रा

कर्मयोगी

(वरिष्ठ पत्रकार, योग जानकार)

'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आह्वान, साथ दो लाख को अन्नप्रसाद

श्री जगन्नाथ यात्रा पूरी दुनिया में श्रद्धा और समता की ऐसी अकेली अनूठी यात्रा है, जो आस्था और विश्वास के साथ ही सही मायने में समाज में समता के स्थापना के लक्ष्य को भी हकीकत बनाती है। यह रथयात्रा सारे भेद मिटाकर एकता के रंग में रंग देती है। यात्रा में दूर-दूर तक आस्था का जनसैलाब ही नजर आता है। जिसमें श्रद्धालुओं की भागीदारी से जाति-भेद, रंगभेद, ऊंच और नीच का भेद, पद भेद, राज्यों के विभाजन और दुनिया के तमाम भौगोलिक विभेद समाप्त हो जाते हैं। इस बार की रथयात्रा में एक नया नायब आयाम जुड़ा, जिसमें देश-विदेश के साधकों की संस्था 'अक्षर योग केंद्र' ने दो लाख श्रद्धालुओं को प्रसाद/ भोजन देने का लक्ष्य पूरा किया।

भगवान श्री जगन्नाथ की पावन रथयात्रा केवल भारत ही नहीं, बल्कि विश्वभर में बेहद लोकप्रिय है। सही मायने में यह महज आध्यात्मिक यात्रा नहीं है। यह पौराणिक कथानक पर आधारित सिर्फ एक धार्मिक यात्रा भर भी नहीं है। यह रथयात्रा देश को समरसता धारा में बहाकर एकता के सूत्र में पिरो देती है। दुनिया के कोने-कोने से लाखों श्रद्धालु भक्ति के रंग में रंगने हर साल आते हैं। सही मायने में देश दुनिया के श्रद्धालुओं के लिए यह आस्था, संस्कृति और आध्यात्मिक चेतना का महापर्व है। इसी दिव्य अवसर पर हिमालयन सिद्धा अक्षर के मार्गदर्शन में अक्षर योग केंद्र द्वारा एक सप्ताह के अभियान में पुरी में एक विशाल प्रसाद वितरण सेवा का आयोजन किया गया। जिसमें निर्धारित लक्ष्य, दो लाख से अधिक श्रद्धालुओं को भोजन वितरित किया। इस अभियान में भारत के विभिन्न राज्यों से आए सैकड़ों स्वयंसेवकों ने अपनी सेवा दी। वहां तमाम विदेशी श्रद्धालुओं का जमावड़ा लगा रहा। जिसमें जापान, दक्षिण कोरिया, ताइवान, यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका, सिंगापुर, मलेशिया, हांगकांग तथा अन्य देशों से आए अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधि भी इस सेवा का हिस्सा बनें।

दूसरी ओर जापान, दक्षिण कोरिया, ताइवान, यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका, सिंगापुर, मलेशिया, हांगकांग से आए श्रद्धालुओं की इस ऋषि कर्म का उद्देश्य भगवान श्री जगन्नाथ के दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालुओं की निस्वार्थ भाव से सेवा करना था। इस दौरान लगभग 2 लाख श्रद्धालुओं को निःशुल्क प्रसाद, पेयजल, मीठे पेय तथा अन्य आवश्यक जलपान उपलब्ध कराया गया। यह सेवा भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में वर्णित समर्पण और मानवता के मूल्यों को समर्पित एक विनम्र प्रयास रहा। इस प्रसाद वितरण सेवा शिविर के औपचारिक उद्घाटन के पश्चात सेवा कार्य निरंतर संचालित होता रहा। पुलिस के जवान भी सेवा कार्य में लगे रहे। इन अंतरराष्ट्रीय प्रतिभागियों के लिए यह केवल एक सेवा कार्यक्रम नहीं, बल्कि भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत को निकट से अनुभव करने का एक विशेष अवसर था। उन्होंने रथ दर्शन, कीर्तन, भजन, योग साधना, आध्यात्मिक संवाद तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान जैसी विभिन्न गतिविधियों में भाग लेकर भगवान श्री जगन्नाथ की परंपरा और ओडिशा की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को समझा।

इस सेवा अभियान के सफल संचालन के लिए पुरी जिला प्रशासन आवश्यक प्रशासनिक सहयोग एवं समन्वय प्रदान किया, जिससे श्रद्धालुओं की सुविधा, स्थानीय व्यवस्था तथा सेवा कार्य सुचारू रूप से संपन्न हो सके। वहीं पुलिस महानिरीक्षक सेंट्रल रेंज, ओडिशा, डॉ सत्यजीत नायक आयोजन के उद्घाटन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए और श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरण किया।

अक्षर योग केंद्र के संस्थापक हिमालय सिद्ध अक्षर का मानना है कि सेवा ही भारतीय संस्कृति का सबसे बड़ा परिचय है। जब विभिन्न देशों के लोग एक साथ बैठकर प्रसाद वितरण, सेवा और आध्यात्मिक गतिविधियों में भाग लेते हैं, तब यह केवल एक महज धार्मिक आयोजन ही नहीं रह जाता, बल्कि विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का जीवंत संदेश देने वाला उत्सव बन जाता है। इस वर्ष के श्री जगन्नाथ रथयात्रा के अवसर पर आयोजित यह प्रसाद वितरण सेवा भारत की सनातन परंपरा और निस्वार्थ सेवा का परिचायक है। साथ ही वैश्विक आध्यात्मिक एकता का एक प्रेरणादायी उदाहरण बनने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ है। इसके माध्यम से अक्षर योग केंद्र सेवा, करुणा और आध्यात्मिक मूल्यों को समाज तथा विश्व समुदाय तक पहुँचाने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहा है।

शराब ठेकेदार के आदमियों ने बनाया बंधक, उनका कुसूर इतना था कि वे 4 बोतल शराब ले जा रहे थे

सोहागपुर। सोहागपुर पुलिस ने राजा पिता हरिविष्णु कहार, 22 वर्ष, निवासी टावर मोहल्ला, लोहिया वार्ड, पिपरिया की रिपोर्ट की है कि 18/07/26 की शाम को वह अपने मित्र गोली धोबी के साथ मोटर साइकिल से शोभापुर रोड स्थित हनुमान दादा की मढ़िया के पास जा रहा था। तभी एक सफेद रंग की बोलेरो गाड़ी आई। उसमें से 5 लोग उतरे और उसका रास्ता रोक लिया। आरोपियों ने कहा कि तुम लोग शराब की सप्लाई करते हो। राजा ने मना किया तो सभी ने उसे घेर कर जबरन उठाकर ले गए, वीडियो भी बनाया। सोहागपुर पुलिस ने फरियादी राजा पिता हरिविष्णु क़हार निवासी टावर मोहल्ला पिपरिया के द्वारा इस आश्य की प्राथमिकी वलवीर सिंह,गब्बर सिंह,रोहित मिश्रा,राजकुमार एवं शशिकुमार सिंह के ख़िलाफ़ इस दर्ज कराई कि इसके यहाँ मेहमान आए थे। मेहमानों के लिए गत रात्रि शोभापुर कलॉरी से चार वाटल 8 PM की लेकर आपने दोस्त गोलू के साथ वापस जा रहा था। तभी शोभपुर रोड स्थित हनुमान मढ़िया के पास उक्त आरोपीयों ने रास्ता रोक कर कहा गया तू राहुल जसवाल की शराब सप्लाई करता है ।इसने कहा में कोई सप्लाई नहीं करता मेहमानों के लिए शराब लेकर जा रहा हूं इसी बात को लेकर बलवीर सिंह जिला शिवपुरी, गब्बर सिंह जिला शिवपुरी,रोहित मिश्रा जिला मैहर,राजकुमार जिला नरसिंहपुर, शशिकुमार सिंह जिला बक्सर बिहार सभी निवासी हाल पिपरीया के द्वारा गंदी गंदी गाली दी गई जबरदस्ती उठाकर साड़ियां रोड पिपरिया स्थित ऑफिस में ले जा कर अवरुद्ध रखा है फरियदि की रिपोर्ट पर उक्त आरोपीयों के विरूद्ध 126,296,140,351,115,3(5)BNS का क़ायम कर विवेचना में लिया गया है उक्त सभी आरोपियों को पुलिस ने आज माननीय न्यायालय सोहागपुर के समक्ष पेश किया गया जहाँ से सभी आरोपियों को उपजेल पिपरिया भेजा गया है ,अन्य 2 आरोपियों की तलाश की जा रही है शीघ्र गिरफ़्तारी की जाएगी।

अनजान लिंक किलिक पैसे नदारद, पुलिस ने किया मामला दर्ज

सोहागपुर। अनजान आरसीएम लिंक किलिक पैसे नदारद। सोहागपुर पुलिस ने फरियादी मनोज कुमार पिता प्रहलाद सिंह पुर्विया उम्र 40 साल निवासी ग्राम करनपुर के द्वारा इस आश्य की प्राथमिकी मोबाइल धारक 8709512883 के खिलाफ़ दर्ज कराई कि मैं ग्राम करनपुर रहता हूँ । सुभाष वार्ड सोहागपुर में मेरी नेटवर्क मार्केटिंग की किराना दुकान है । दिनांक 05.07.2026 को अपनी दूकान पर था। तभी मेरे पास मोबाईल नंबर 8709512883 से काल आया और मुझसे बोला कि मैं आरसीएम कम्पनी के हेड आफिस से बोल रहा हूँ। उसने आरसीएम कम्पनी संबंधित मेरी सभी डिटेल बताई । उसने मुझसे पूछा कि आपका 6 मासिक कमीशन आया कि नहीं। तब मुझे उस पर भरोसा हो गया कि वह आरसीएम कम्पनी से बोल रहा है। तब वह मुझसे बोला कि मैं आपके व्हाट्सअप मोबाईल नम्बर पर एक लिंक भेज रहा हूँ, उस पर अपनी जानकारी फाइल करो आपका कमीशन आ गया था। और उसने उसके मोबाईल नंबर 8709512883 से व्हाट्सअप मोबाईल नम्बर 9926554194 पर व्हाट्सअप पर आरसीएम संबंधित जानकारियां व लिंक भेजी । जैसे ही उस लिंक पर क्लिक किया। बैंक आफ इण्डिया के खाता से फोन पे के माध्यम से क्रमशः 9917 रुपये,9929 रुपये,9917 रुपये,1500 रुपये कटने के ट्रांजेक्शन मैसेज मोबाईल के मैसेज बाक्स में आए। तो उसे काल करके खाते से कुल 31263 रूपये कटने के बारे में पूछा, तो वह मुझसे बोला कि यह रूपये आपके अभी वापस हो जायेंगे। लेकिन रूपये वापस नहीं आए। तब दिनांक 07.07.2026 को 1930 पर काल करके मोबाईल नंबर-8709512883 के धारक द्वारा धोखाधडी पूर्वक सायबर फ्राड की सूचना दी गई। पुलिस ने धारा 318(4)319(2) बीएनएस का कायम कर विवेचना में लिया गया है।नगर निरीक्षक गिरीश त्रिपाठी ने सभी नागरिकों से आग्रह किया है किसी भी अनजान लिंक पर न जावे सायबर सुरक्षा संबंधी बातों का पालन करें सुरक्षित रहे।

ताप्ती जन्मोत्सव पर ताप्ती तट पर उमड़ा श्रद्धा का सैलाब

लाखों श्रद्धालुओं ने किए मां ताप्ती के दर्शन, 108 मीटर लंबी चुनरी अर्पित

नगर बना धर्ममय, जगह-जगह भंडारे और कड़े सुरक्षा इंतजाम

बैतूल/मुलताई। मां ताप्ती के पावन जन्मोत्सव पर सोमवार को पवित्र नगरी मुलताई स्थित ताप्ती तट श्रद्धालुओं की आस्था से सराबोर हो उठा। अलसुबह से ही श्रद्धालुओं का ताप्ती तट पर पहुंचना शुरू हो गया था। दिनभर दर्शन, पूजन, दुग्धाभिषेक, चुनरी अर्पण, शोभायात्रा, भंडारे और धार्मिक आयोजनों का क्रम चलता रहा। लाखों श्रद्धालुओं ने मां ताप्ती के दर्शन कर पूजा-अर्चना की तथा पवित्र ताप्ती कुंड में स्नान कर पुण्य लाभ अर्जित किया। सुबह 5 बजे से जन्मोत्सव के मुख्य धार्मिक अनुष्ठानों का शुभारंभ विशेष पूजा-अर्चना एवं दुग्धाभिषेक के साथ हुआ। श्रद्धालु हाथों में पूजा की थाली और श्रद्धा-सुमन लिए जय मां ताप्ती के जयघोष के साथ ताप्ती परिक्रमा क्षेत्र पहुंचे। पूरे परिसर में भक्तिमय वातावरण बना रहा और श्रद्धालुओं की लंबी कतारें देर रात तक दर्शन के लिए लगी रहीं।

51 साड़ियों से बनी 108 मीटर लंबी चुनरी मां ताप्ती को अर्पित- ताप्ती सेवा मंडल द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 51 साडयिों से तैयार 108 मीटर लंबी भव्य चुनरी मां ताप्ती को अर्पित की गई। मंडल के श्रद्धालुओं ने चुनरी की भव्य शोभायात्रा निकाली, जो नगर के विभिन्न मार्गों से होती हुई ताप्ती मंदिर पहुंची। मां ताप्ती की शोभा यात्रा में 15 से अधिक झांकियां एवं 15 से अधिक डीजे शामिल थे। मंदिर के मुख्य द्वार पर वैदिक मंत्रोच्चार के बीच विधि-विधान से पूजन-अर्चन कर चुनरी मां ताप्ती को समर्पित की गई।

देवी जागरण और शोभायात्रा रहे आकर्षण का केंद्र- ताप्ती प्रथम पुलिया के समीप ढाबा यूनियन द्वारा भव्य देवी जागरण का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जबलपुर की प्रसिद्ध भजन गायिका पूजा गुलहानी ने अपने मधुर भजनों की शानदार प्रस्तुतियां देकर श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके बाद निकाली गई भव्य शोभायात्रा में 18 फीट ऊंची महाबली हनुमान जी की प्रतिमा विशेष आकर्षण का केंद्र रही। शोभायात्रा में शामिल राजस्थानी लोक नृत्य मंडली तथा ग्राम डिवटिया से आए आदिवासी कलाकारों ने पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत कर श्रद्धालुओं का मन मोह लिया।

150 से अधिक स्थानों पर लगे भंडारे- ताप्ती जन्मोत्सव के अवसर पर संपूर्ण मुलताई नगर धर्ममय वातावरण में रंगा नजर आया। मंदिरों को आकर्षक विद्युत सज्जा एवं फूलों से सजाया गया। नगर के नागपुर रोड, बैतूल रोड, मासौद रोड, बोरदेही रोड सहित विभिन्न प्रमुख मार्गों पर 150 से अधिक भंडारे एवं प्रसादी वितरण केंद्र लगाए गए। वहीं ताप्ती परिक्रमा क्षेत्र में ही 50 से अधिक भंडारे संचालित हुए, जहां हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसादी ग्रहण की।

महाआरती और कन्या पूजन में उमड़ी श्रद्धा

जन्मोत्सव की पूर्व संध्या पर आयोजित मां ताप्ती की भव्य महाआरती में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने सहभागिता कर मां ताप्ती का आशीर्वाद प्राप्त किया। धार्मिक परंपरा के अनुसार कन्या पूजन भी किया गया। श्रद्धालुओं ने दीप प्रज्वलित कर परिवार की सुख-समृद्धि एवं प्रदेश की खुशहाली की कामना की। ताप्ती जन्मोत्सव के दौरान श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को देखते हुए प्रशासन एवं पुलिस द्वारा व्यापक सुरक्षा व्यवस्था की गई। ताप्ती मंदिर के प्रवेश द्वार सहित पूरे परिक्रमा क्षेत्र में पुलिस एवं महिला पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई। श्रद्धालुओं को व्यवस्थित एवं चरणबद्ध तरीके से मंदिर में प्रवेश कराया गया, जिससे दर्शन व्यवस्था सुचारु बनी रही। परिक्रमा मार्ग पर दो पहिया एवं चार पहिया वाहनों के प्रवेश पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया। केवल पैदल श्रद्धालुओं को ही इस मार्ग से आने-जाने की अनुमति दी गई। नगर के विभिन्न स्थानों पर पार्किंग जोन बनाए गए, जहां श्रद्धालुओं ने अपने वाहन खड़े कर पैदल मंदिर पहुंचकर दर्शन किए। मां ताप्ती जन्मोत्सव के दौरान पूरे दिन आस्था, भक्ति और धार्मिक उल्लास का अद्भुत संगम देखने को मिला। ताप्ती तट पर उमड़ी लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया कि मुलताई केवल ताप्ती नदी का उद्गम स्थल ही नहीं, बल्कि सनातन आस्था का एक प्रमुख तीर्थ भी है।

बढ़ते अपराध और जान माल की सुरक्षा को लेकर एकजुट हुए व्यवसायी

शिव शक्ति पेट्रोल पंप की घटना पर कड़ी कार्रवाई की मांग कर पुलिस अधीक्षक को दिया ज्ञापन

बैतूल। रविवार रात्रि में शिव शक्ति पेट्रोल पंप अखतवाडा खेड़ी में हुई मारपीट की घटना पर कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेड्स के तत्वावधान में सोमवार दोपहर एक बजे जिले के समस्त व्यापारी संगठनों के प्रतिनिधियों, व्यापारियों ने एकजुट होकर पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र जैन को शहर में बढ़ते अपराध पर रोक लगाने और व्यवसायियों एवं आम नागरिकों की जान माल की सुरक्षा की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपा। कैट के जिलाध्यक्ष मनोज भार्गव ने बताया कि खेड़ी पेट्रोल पंप की घटना में पंप संचालक हिरेन पटेल द्वारा पुलिस थाने में नामजद एफआईआर दर्ज कराई गई है जिस पर कार्रवाई होनी चाहिए। जिले में इन दिनों व्यवसायी को धमकी देकर हमला करने की घटना बढ़ती जा रही हैं। बीती रात उक्त पेट्रोल पंप पर जिस तरह दर्जन भर नकाबपोश बदमाशों ने कर्मचारियों पर जानलेवा हमला कर तोडफोड की है उससे प्रतीत होता है कि अपराधियों में कानून का कोई भय नहीं है। पुलिस ने मामला दर्ज जरूर किया है किंतु

जब तक अपराधियों को गिरफ्तार करके उन पर गैंगस्टर एक्ट, एनएसए और उनके अवैध निर्माण पर बुलडोजर एक्शन नहीं होगा तब तक उनमें अपराध के प्रति भय भी व्याप्त नहीं होगा। इसके पूर्व में भी शहर में कई बार चोरी, डकैती हुई है किंतु पुलिस विभाग द्वारा आज तक किसी भी अपराधियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई नहीं की गई है। इससे व्यापारी वर्ग में बेहद आक्रोश और भय कायम है। यदि 48 घंटे में उचित कार्रवाई नहीं होती है तो व्यापारी आंदोलन के लिए बाध्य होंगे। ज्ञापन सौंपते समय कैट के जिलाध्यक्ष मनोज भार्गव, सचिव दीपक खुराना, उपाध्यक्ष आलोक मालवीय, कोषाध्यक्ष मनोज मेहता, योगी खंडेलवाल, कोषाध्यक्ष राजेंद्र काबरा, राजेश आहूजा, राजू अग्रवाल, राकेश शर्मा, विवेक मालवीय, जैमिन पटेल, अमित सपरा, कपड़ा व्यापारी एसोसिएशन के संजय पगारिया, राजेश मदान, विवेक जैन, पदम सुराना, मुकेश गुप्ता, अनाज तिलहन संघ के अतुल शाह, उद्योग संघ के अध्यक्ष ब्रज आशीष पांडे, सचिव पीयूष तिवारी, अंबेश बलवापुरी, बैतूल जनरल एवं किराना संघ के अध्यक्ष गजानंद मोटवानी, धर्मेंद्र मेहता, टूटू भार्गव, धीरज हिरानी, बबन आहूजा, जिला औषधि संघ के दीपक सलूजा, सराफा एसोसिएशन के उषभ गोठी, लोकेश पगारिया, अतीत पंवार, अतीत अग्रवाल, लट्टू अग्रवाल, कुशकुंज अरोरा, बलराम मालवीय, प्रतीक शाह आदि व्यापारी मौजूद थे।

कतिया समाज के 4 विद्यार्थियों ने नीट यूजी में लहराया परचम

बैतूल। प्रगतिशील कतिया समाज के चार मेधावी विद्यार्थियों ने नीट यूजी- 2026 परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर समाज का नाम रोशन किया है। विद्यार्थियों की इस उपलब्धि पर समाज के वरिष्ठजनों, सामाजिक प्रतिनिधियों एवं शिक्षकों ने हर्ष व्यक्त करते उन्हें बधाई दी है। सफल विद्यार्थियों में निशा ढाकरे ने 477 अंक, सुश्री संतोषी धारणेकर ने 428 अंक, अभिनव सूर्यवंशी ने 425 अंक तथा आर्यन भोरसे ने 422 अंक प्राप्त किए हैं। इन चारों विद्यार्थियों ने अपनी मेहनत और लगन के बल पर एमबीबीएस में प्रवेश का मार्ग प्रशस्त किया है। इस अवसर पर समाज के प्रतिनिधियों ने कहा कि इन विद्यार्थियों की सफलता का श्रेय उनके माता-पिता के त्याग, शिक्षकों के मार्गदर्शन तथा स्वयं विद्यार्थियों की मेहनत को जाता है। उन्होंने सभी सफल विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए इसे पूरे समाज के लिए गौरव का क्षण बताया। इस अवसर पर समाज के बंधुओं ने यह भी संकल्प लिया कि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले जरूरतमंद विद्यार्थियों को मार्गदर्शन, कोचिंग एवं आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने हेतु प्रगतिशील कतिया समाज संगठन एवं सामाजिक प्रतिनिधिमंडल हरसंभव सहयोग करेगा।

इलेक्ट्रम इंस्टीट्यूट के विद्यार्थियों ने नीट यूजी में किया उत्कृष्ट प्रदर्शन

सफल विद्यार्थियों का इंस्टीट्यूट में किया सम्मान

बैतूल। शहर के प्रसिद्ध कोचिंग संस्थान इलेक्ट्रम इंस्टीट्यूट के लिए इस वर्ष नीट यूजी 2026 का परिणाम बहुत गौरवपूर्ण रहा। संस्थान से 4 विद्यार्थियों ने नीट यूजी 2026 की तैयारी की, जिनमें से 3 विद्यार्थियों ने सफलतापूर्वक परीक्षा उत्तीर्ण (क्वालीफाई) कर संस्थान एवं जिले का गौरव बढ़ाया है। संस्थान की छात्रा मानसी पाटिल ने 424 / 720 अंक प्राप्त कर 89.033 परसेंटाइल अर्जित किया। वहीं अन्वेषा दुबे एवं सुरुचि डोंगरे ने भी नीट यूजी 2026 परीक्षा सफलतापूर्वक क्वालीफाई कर अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। इस उपलब्धि के उपलक्ष्य में आयोजित सफल विद्यार्थी के सम्मान समारोह में वरिष्ठ प्रचारक प्रवीण ढोलके, सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता व समाजसेवी विक्रांतसिंह कुमरे तथा बैतूल जिले के शिक्षाविद हेमराज बारस्कर बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रारंभ में सभी विशिष्ट अतिथियों का श्रीफल, पेन एवं डायरी भेंट कर आत्मीय स्वागत एवं सम्मान किया गया। इसके पश्चात नीट यूजी 2026 में सफल विद्यार्थियों को संस्थान द्वारा सम्मानित किया गया। साथ ही पूर्व में आईआईटी-जेईई परीक्षा में चयनित हुए संस्थान के विद्यार्थियों का भी इस अवसर पर सम्मान कर उनकी उपलब्धियों को सभी को बताया गया। इस अवसर पर संस्थान डायरेक्टर इंजीनियर सुस्मित

बन्सोड, इंजीनियर अंचित पाठक, शैलजा परिहार सहित इलेक्ट्रम इंस्टीट्यूट की समस्त टीम उपस्थित रही। अतिथियों ने विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते कहा कि निरंतर परिश्रम, अनुशासन एवं उचित मार्गदर्शन से प्रत्येक लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि जिले का प्रसिद्ध इलेक्ट्रम इंस्टीट्यूट बैतूल लगातार उत्कृष्ट परिणाम दे रहा है। संस्थान के डायरेक्टर सुष्मित बंसोड़ ने बताया कि गत वर्ष भी संस्थान की 3 छात्राओं का नीट परीक्षा में चयन हुआ था। संस्थान का उद्देश्य ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु उत्कृष्ट मार्गदर्शन देकर उन्हें सफलता के सर्वोच्च शिखर तक पहुँचाना है।

जन अभियान परिषद की पूर्व जिला समन्वयक प्रिया चौधरी का रायसेन स्थानांतरण

एक दशक की सेवाओं के बाद भावपूर्ण विदाई, कार्यकाल को बताया प्रेरणादायी

बैतूल। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद बैतूल की पूर्व जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी के रायसेन स्थानांतरण होने पर विकासखंड आठनेर में सम्मान एवं भावनात्मक वातावरण के बीच भव्य विदाई समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर उन्हें स्मृति-चिह्न एवं सम्मान-पत्र भेंट कर परिषद में उनके एक दशक के उत्कृष्ट, समर्पित एवं प्रेरणादायी सेवाकाल के लिए भावभीनी विदाई दी गई। कार्यक्रम को संबोधित करते आठनेर के विकासखंड समन्वयक मधु चौहान ने कहा कि श्रीमती प्रिया चौधरी के नेतृत्व में जन अभियान परिषद ने कईयों उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित कीं। उनके कार्यकाल में परिषद को प्राप्त शासकीय लक्ष्यों की समय पर सफलतापूर्वक पूर्ति, विभिन्न योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन,उत्कृष्ट प्रशासनिक दक्षता, कुशल नेतृत्व, समन्वय क्षमता तथा टीम भावना ने परिषद को नई पहचान दिलाई। उन्होंने विकासखंड के नवांकुर संस्थाओं, प्रस्फुटन समितियों एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों के साथ सशक्त समन्वय स्थापित कर अनेक जनहितकारी गतिविधियों को सफलतापूर्वक संचालन किया, जो आज भी सभी कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

संभाग समन्वयक कौशलेश तिवारी ने अपने अनुभव साझा करके कहा कि श्रीमती चौधरी ने अपने सरल,सौम्य, विनम्र एवं कर्मठ व्यक्तित्व से सेवा,अनुशासन, पारदर्शिता,उत्तरदायित्व और समर्पण का जो आदर्श स्थापित किया है, वह जन अभियान परिषद परिवार के लिए सदैव अनुकरणीय रहेगा। आठनेर नगर मंडल अध्यक्ष एवं परामर्शदाता गोवर्धन राने कि मैडम का नेतृत्व केवल प्रशासनिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं, कार्यकर्ताओं के प्रति आत्मीय व्यवहार और संगठन को साथ लेकर चलने की कार्यशैली के कारण भी सदैव स्मरणीय रहेगा। इस अवसर पर उपस्थित सभी लोगों ने श्रीमती प्रिया चौधरी के उज्ज्वल भविष्य,उत्तम स्वास्थ्य एवं रायसेन में नवीन दायित्वों के सफल निर्वहन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त करते हुए विश्वास जताया कि वे अपनी कार्यकुशलता, सकारात्मक सोच एवं समर्पित सेवाभाव से वहाँ भी नई उपलब्धियां स्थापित करेंगी। विदाई के भावुक क्षणों में श्रीमती प्रिया चौधरी ने सभी अधिकारियों, कार्यकर्ताओं, नवांकुर संस्थाओं, प्रस्फुटन समितियों तथा परिषद परिवार के प्रत्येक सदस्य के स्नेह, विश्वास, सहयोग एवं आत्मीयता के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि बैतूल में बिताया गया कार्यकाल उनके जीवन की अमूल्य धरोहर रहेगा और यहाँ से मिली सीख, अपनत्व एवं सहयोग को वे सदैव अपने साथ लेकर आगे बढ़ेंगी। समारोह आत्मीयता, सम्मान, भावनात्मक जुड़ाव एवं कृतज्ञता के वातावरण में सम्पन्न हुआ। उपस्थित सभी लोगों ने श्रीमती चौधरी के उत्कृष्ट सेवाकाल को नमन करते हुए उन्हें स्मृति-चिन्ह भेंटकर भावभीनी विदाई दी। कार्यक्रम में मुख्य रूप से नर्मदापुरम संभाग समन्वयक कौशलेश तिवारी, आठनेर थाना प्रभारी नरेंद्र सिंह परिहार, नगर मंडल अध्यक्ष गोवर्धन राने, सतपुड़ा पर्यावरण समिति नवांकुर संस्था अध्यक्ष सतीश ठाकरे, जनपद सदस्य राजू सलामे, सामाजिक कार्यकर्ता धनराज गावंडे, नवांकुर संस्था अध्यक्ष कैलाश आजाद, देवीदास गावंडे, दिनेश माकोड़े, दिनेश साकरे, राधिका बारबपेटे, सहित ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति के पदाधिकारी एवं मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम के छात्र-छात्राएं बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

सोनम वांगचुक के सर्मथन में पेपर लीक,शिक्षा व्यवस्था में सुधार को लेकर छात्रों का प्रर्दशन, भूख हड़ताल

सोहागपुर। दिल्ली के जंतर-मंतर में शिक्षाविद सोनम वांगचुक की भूख-हड़ताल के सर्मथन में नगर के युवा छात्र मुख्य बाजार में मालवीय पैलेस के सामने एक दिवसीय 24 घंटे शांतिपूर्ण भूख हड़ताल पर बैठ गए हैं। इस आन्दोलन से छात्रों का स्पष्ट संदेश है कि च्चसोहागपुर अब जाग चुका है, यह कोई सोता हुआ शहर नहीं है।ज्ज उक्त आंदोलन नगर के जिम्मेदार लोगों के साथ एक च्युवा संवादज स्थापित करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। देश भर में लगातार हो रहे सिस्टमैटिक पेपर लीक एवं मानसिक तनाव से जान गंवाने वाले 22 से अधिक छात्रों को न्याय दिलाने के लिए है।

छात्रों की मांग है कि केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान को उनके पद से तत्काल हटाया जाए और शिक्षा प्रणाली में सख्त व

पारदर्शी सुधार लागू किए जाएं ताकि भविष्य में किसी भी छात्र का भविष्य अंधकारमय न हो। इस आन्दोलन के उपरांत छात्रों का प्रतिनिधि मंडल अनुविभागीय अधिकारी को राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपेगा। इस आंदोलन में अनंत तिवारी, स्वर्ण तिवारी मयंक रघुवंशी, इंजीनियर फैजान खान, अंकित पटेल, सुमित ठाकुर,देवांक सराठे,योगेश रघुवंशी, आयुष पालीवाल, वेदांत सोनी,मयंक दुबे, अमन मालवीय आदि प्रमुख हैं इस आन्दोलन को कांग्रेस नेता पुष्पराजसिंह पटेल, ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष सुधीर ठाकुर, नगर कांग्रेस अध्यक्ष प्रशांत जायसवाल, कांग्रेस के नीरज चौधरी, ऋषभ दीक्षित एवं इरफान खान ने छात्रों की मांगों का समर्थन कर रहे हैं। धरना प्रदर्शन स्थल पर छात्र छात्राओं ने पेपर लीक, शिक्षा प्रणाली में सुधार तथा केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान को पद से इस्तीफा देने की मांग की।

लायंस क्लब बैतूल सिटी ने आगामी सेवा गतिविधियों को लेकर बनाई व्यापक रणनीति

बैतूल। लायंस क्लब बैतूल सिटी की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह के बाद पहली मासिक बैठक रविवार को कोसमी हाईवे स्थित जेवण रेस्टोरेंट में संपन्न हुई। बैठक में क्लब के सभी सदस्यों ने आगामी एक माह की सेवा गतिविधियों को लेकर विस्तार से चर्चा की तथा समाजहित, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य जागरूकता और जनकल्याण से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण सुझाव रखे। अध्यक्ष डॉ. संतोष जायसवाल ने सभी सदस्यों के सुझावों का स्वागत करते हुए उन्हें चरणबद्ध तरीके से अमल में लाने का भरोसा दिलाया। बैठक में लायन निरजा श्रीवास्तव ने कृषि भूमि पर वाटर हार्वेस्टिंग की उपयोगिता बताते हुए किसानों को इसके प्रति जागरूक करने का अभियान चलाने का सुझाव दिया। लायन अलका तातेड़ ने क्लब की आगामी गतिविधियों को और प्रभावी बनाने के लिए विशेष कार्यशालाएं आयोजित करने की आवश्यकता बताई। लायन विवेक शुक्ला ने कोसमी इंडस्ट्रियल एरिया स्थित उद्यान में सघन पौधारोपण का प्रस्ताव रखा, जिसका समर्थन करते हुए लायन एच. एस. रघुवंशी ने लगाए जाने वाले पौधों की सुरक्षा और रखरखाव की पूरी जिम्मेदारी लेने की घोषणा की। लायन राम प्रकाश गुगनानी ने स्थानीय व्यापारियों को पॉलीथिन का विकल्प अपनाने के लिए जागरूक करने का प्रस्ताव रखा। वहीं लायन के. के. वर्मा ने पॉलीथिन खाने से पशुधन को होने वाली गंभीर हानि और मौत के मामलों के प्रति आमजन को जागरूक करने की आवश्यकता पर जोर दिया। पर्यावरणविद् लायन भगवंत बोहरपी ने वन विभाग के सहयोग से स्कूली बच्चों के लिए पर्यावरण संरक्षण विषय पर विशेष कार्यशालाएं आयोजित करने का सुझाव दिया।

15 अगस्त को लायंस उद्यान में होगा ध्वजारोहण- बैठक में लायन विवेक पटेल ने पूर्व में निर्मित शव विश्राम स्थल के आवश्यक जीर्णोद्धार और मरम्मत कार्य को प्राथमिकता देने की बात कही। लायन मनीष ठाकुर ने आगामी 15 अगस्त को लायंस उद्यान में ध्वजारोहण करने तथा वहां लायंस मोनो का बोर्ड लगाने का प्रस्ताव रखा। पास्ट गवर्नर लायन परमजीत सिंह बग्गा ने कोसमी जलाशय के समीप हाईवे पर लायंस क्लब की ओर से आकर्षक सेल्फी पॉइंट विकसित करने का सुझाव दिया।

संक्षिप्त समाचार

जिला पंचायत सीईओ ने स्कूलों का किया निरीक्षण

बच्चों की आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान का किया आकलन

सीहोर,(निप्र)। जिला पंचायत सीईओ श्रीमती सर्जना यादव ने विद्यार्थियों की आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान का आकलन करने के उद्देश्य से बिलकिसगंज के जनजातीय ग्रामों सालीखेड़ा, पाटनी एवं बिलकिसगंज स्थित शासकीय प्राथमिक एवं माध्यमिक शालाओं का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने विद्यार्थियों से आत्मीयता के साथ संवाद किया तथा खेल-खेल में भाषा एवं गणित की आधारभूत अवधारणाओं पर आधारित विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से उनकी सीखने की क्षमता का आकलन किया। बच्चों ने भी उत्साहपूर्वक इन गतिविधियों में भाग लिया। उन्होंने शिक्षकों के साथ चर्चा करते हुए उन्हें निर्देशित किया कि कक्षाओं में अधिक से अधिक गतिविधि-आधारित शिक्षण पद्धति अपनाई जाए, जिससे बच्चों में अध्ययन के प्रति रुचि विकसित हो। उन्होंने कहा कि राज्य शासन द्वारा उपलब्ध कराई गई एफएलएन शिक्षण-सामग्री का प्रभावी एवं नियमित उपयोग सुनिश्चित किया जाए, ताकि प्रत्येक विद्यार्थी भाषा एवं गणित की आधारभूत दक्षताओं को सहज एवं आनंददायक तरीके से अर्जित कर सके। उन्होंने कहा कि प्रारंभिक कक्षाओं में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण एवं मजबूत आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान बच्चों के समग्र शैक्षणिक विकास की नींव है। इस दिशा में शिक्षकों की सक्रिय भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है तथा प्रत्येक विद्यार्थी की नियमित प्रगति का सतत मूल्यांकन एवं आवश्यक शैक्षणिक सहयोग सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

स्टॉप डायरिया अभियान के तहत एफटीके किट से पेयजल परीक्षण का दिया प्रशिक्षण

सीहोर,(निप्र)। जिले में संचालित स्टॉप डायरिया अभियान के अंतर्गत ग्राम पंचायत जहाजपुर के माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों एवं विद्यालय स्टाफ को फील्ड टेस्ट किट (एफटीके) के माध्यम से पेयजल की गुणवत्ता जांच करने का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान दूषित पेयजल से होने वाली डायरिया सहित अन्य जलजनित बीमारियों की जानकारी देते हुए उनसे बचाव के उपाय बताए गए। विद्यार्थियों को स्वच्छ पेयजल के उपयोग, नियमित हाथ धोने, व्यक्तिगत एवं आसपास की स्वच्छता बनाए रखने तथा सुरक्षित पेयजल के महत्व के बारे में जागरूक किया गया। साथ ही एफटीके किट के माध्यम से पेयजल की प्राथमिक जांच करने का व्यवहारिक प्रदर्शन भी किया गया। अभियान का उद्देश्य आमजन एवं विद्यार्थियों में स्वच्छ पेयजल, स्वच्छता तथा जलजनित बीमारियों की रोकथाम के प्रति जागरूकता बढ़ाना है, ताकि वर्षाकाल में डायरिया सहित अन्य संक्रामक बीमारियों पर प्रभावी नियंत्रण रखा जा सके।

खाद्य विभाग एवं नागरिक आपूर्ति निगम के अधिकारियों-कर्मचारियों ने किया पौधरोपण

सीहोर ,(निप्र)। पर्यावरण संरक्षण एवं हरित वातावरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से खाद्य विभाग एवं नागरिक आपूर्ति निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा सीहोर के पचामा स्थित तिलहन संघ के गोदाम परिसर में संयुक्त रूप से पौधरोपण किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रजातियों के 50 पौधे रोपे गए तथा उनके संरक्षण का भी संकल्प लिया गया। पौधरोपण कार्यक्रम में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के बीच अधिक से अधिक पौधे लगाना और उनका संरक्षण करना समय की आवश्यकता है। उन्होंने सभी नागरिकों से अपने आसपास हरियाली बढ़ाने तथा पौधों की नियमित देखभाल करने की अपील की। इस अवसर पर कनिष्ट आपूर्ति अधिकारी श्री आकाश चंदेल सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की समय पर पहचान पर दिया गया जोर

शिक्षकों को विद्यार्थियों की स्क्रीनिंग की प्रक्रिया से अवगत

विदिशा,(निप्र)। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डाइट विदिशा में आयोजित अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन (ईसीसीई) प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान जिले के सभी विकासखंडों से आए 66 शिक्षकों को प्रशस्त ऐप के उपयोग एवं विद्यार्थियों की स्क्रीनिंग प्रक्रिया का विस्तृत ओरिएंटेशन प्रदान किया गया। प्रशिक्षण का उद्देश्य कक्षा 1 से 8 तक अध्ययनरत विद्यार्थियों की प्रभावी स्क्रीनिंग कर विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की समय पर पहचान सुनिश्चित करना तथा उन्हें आवश्यक शैक्षणिक एवं सहयोगात्मक सेवाओं से जोड़ना रहा।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिला शिक्षा केंद्र, विदिशा की सहायक परियोजना समन्वयक श्रीमती ज्योति केदारे तथा ग्यारसपुर विकासखंड के एमआरसी श्री रुपेश मालवीय ने शिक्षकों को प्रशस्त ऐप की उपयोगिता, उद्देश्य एवं संचालन संबंधी विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि राज्य शिक्षा केन्द्र के निर्देशानुसार सभी शासकीय विद्यालयों में कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों की स्क्रीनिंग प्रशस्त ऐप के माध्यम से की जानी है, जिससे दिव्यांगता अथवा विशेष शैक्षणिक आवश्यकता वाले बच्चों की प्रारंभिक स्तर पर पहचान कर उनके लिए आवश्यक सहायता, समावेशी शिक्षा एवं अन्य सुविधाएं समय पर उपलब्ध कराई जा सकें।

प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों को प्रशस्त ऐप पर विद्यार्थियों की स्क्रीनिंग की संपूर्ण प्रक्रिया का चरणबद्ध व्यावहारिक प्रदर्शन भी कराया गया। साथ ही ऐप के माध्यम से जानकारी दर्ज करने, स्क्रीनिंग रिपोर्ट तैयार करने तथा निर्धारित दिशा-निर्देशों के अनुरूप कार्य करने की विस्तृत जानकारी दी गई। प्रतिभागी शिक्षकों ने प्रशिक्षण को अत्यंत उपयोगी एवं व्यवहारिक बताते हुए अपने-अपने विद्यालयों में निर्धारित समय-सीमा के भीतर विद्यार्थियों की स्क्रीनिंग का कार्य गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण करने का संकल्प लिया। प्रशिक्षण में बताया गया कि समावेशी शिक्षा की अवधारणा को सशक्त बनाने के लिए विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शीघ्र पहचान अत्यंत आवश्यक है। ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों की क्षमता वृद्धि के साथ-साथ प्रत्येक बच्चे तक गुणवत्तापूर्ण एवं समान शिक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। डाइट द्वारा आयोजित यह पहल जिले में समावेशी एवं बाल-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है।

विभागीय योजनाओं की प्रगति की समीक्षा

■ वन स्टॉप सेंटर, शिशु गृह एवं आंगनवाड़ी का निरीक्षण

विदिशा,(निप्र)। महिला एवं बाल विकास विभाग, भोपाल संभाग के संभागीय संयुक्त संचालक श्री हरिकिशन शर्मा ने शुक्रवार को विदिशा जिले के भ्रमण के दौरान वन स्टॉप सेंटर, यशोदा एडॉप्शन सेंटर (शिशु गृह), सक्षम आंगनवाड़ी केंद्र जीवाजीपुर तथा जिला महिला एवं बाल विकास कार्यालय का निरीक्षण किया। उन्होंने विभिन्न विभागीय योजनाओं एवं संस्थानों की व्यवस्थाओं का बारीकी से अवलोकन करते हुए अधिकारियों को गुणवत्तापूर्ण सेवाएं उपलब्ध कराने, योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन और समयबद्ध लक्ष्य पूर्ति के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण की शुरुआत वन स्टॉप सेंटर से हुई, जहां श्री शर्मा ने केंद्र में रह रही अंतर्वासिनियों से आत्मीय संवाद कर उनकी समस्याओं एवं सुविधाओं की जानकारी ली। उन्होंने केंद्र में उपलब्ध सुरक्षा, आवास, परामर्श एवं अन्य व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। साथ ही 181 महिला हेल्पलाइन की कार्यप्रणाली एवं तकनीकी व्यवस्थाओं का अवलोकन किया। निरीक्षण के दौरान संचालित दो काउंसलिंग प्रकरणों में वे स्वयं उपस्थित रहे तथा दोनों परिवारों के बीच आपसी संवाद और सौहार्दपूर्ण समाधान का प्रयास करते हुए प्रभावी काउंसलिंग प्रक्रिया की सराहना की। इसके बाद उन्होंने यशोदा एडॉप्शन सेंटर (शिशु गृह) का निरीक्षण कर बच्चों की सुरक्षा, स्वास्थ्य, पोषण एवं देखभाल संबंधी व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान सामाजिक कार्यकर्ता श्री शुभम गुप्ता से दत्तक ग्रहण प्रक्रिया, संस्थान के संचालन एवं बच्चों के पुनर्वास संबंधी व्यवस्थाओं पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने शिशु गृह में निवासरत बच्ची के स्वास्थ्य की जानकारी प्राप्त करते हुए उसकी लीगल फ्री प्रक्रिया नियमानुसार शीघ्र पूर्ण कराने के निर्देश दिए। साथ ही परिसर में नियमित साफ-सफाई बनाए रखने, बच्चों के लिए सुरक्षित, स्वच्छ एवं पारिवारिक वातावरण सुनिश्चित करने तथा सभी व्यवस्थाओं को उच्च गुणवत्ता के साथ संचालित करने पर विशेष जोर दिया। संभागीय संयुक्त संचालक ने इसके पश्चात सक्षम आंगनवाड़ी केंद्र जीवाजीपुर का औचक निरीक्षण किया। यहां उन्होंने पोषण वाटिका, रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम, पूरक पोषण आहार वितरण, प्रारंभिक बाल शिक्षा तथा केंद्र की अन्य गतिविधियों का अवलोकन किया। उन्होंने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को केंद्र को मॉडल आंगनवाड़ी के रूप में विकसित करने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन दिया तथा परिसर में वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया। भ्रमण के दौरान उन्होंने जिला महिला एवं बाल विकास कार्यालय का भी निरीक्षण किया, जहां जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती विनीता कांसवा ने पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया। कार्यालय की व्यवस्थाओं एवं विभागीय कार्यों की समीक्षा करते हुए उन्होंने अभिलेखों के सुव्यवस्थित संधारण तथा योजनाओं के प्रभावी संचालन पर बल दिया।

इसके उपरांत जिला पंचायत सभा कक्ष में जिले के सभी परियोजना अधिकारियों एवं पर्यवेक्षकों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में लाड़ली लक्ष्मी योजना, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, पोषण अभियान, आंगनवाड़ी सेवाओं सहित विभाग की अन्य प्रमुख योजनाओं की प्रगति की विस्तार से समीक्षा की गई। श्री शर्मा ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्रत्येक पात्र हितग्राही तक योजनाओं का लाभ समय पर पहुंचे, सेवाओं की गुणवत्ता में निरंतर सुधार हो तथा सभी योजनाओं के निर्धारित लक्ष्यों की समयबद्ध पूर्ति सुनिश्चित की जाए। बैठक में परियोजना अधिकारी श्री ब्रजेन्द्र प्रताप सिंह, श्री परितोष सोनकर, श्रीमती नेहा जायसवाल, वन स्टॉप सेंटर की प्रशासक श्रीमती कृतिका व्यास, श्री संतोष रघुवंशी, श्री मुकेश ताम्रकार सहित विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। संभागीय संयुक्त संचालक ने सभी अधिकारियों से समन्वय एवं संवेदनशीलता के साथ कार्य करते हुए महिला एवं बाल कल्याण योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने का आह्वान किया।

जनगणना-2027 अंतर्गत जिला जनगणना हस्तपुस्तिका के लिए प्रशिक्षण प्रारंभ

बैतूल,(निप्र)। जनगणना-2027 के अंतर्गत जिला जनगणना हस्तपुस्तिका तैयार किए जाने के उद्देश्य से कलेक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी डॉ. सौरभ संजय सोनवणे के निर्देशन तथा अपर कलेक्टर एवं जिला जनगणना अधिकारी श्रीमती वंदना जाट के मार्गदर्शन में ग्राम एवं नगर निर्देशिका संबंधी आंकड़ों के संकलन, संचयन तथा डीसीएचबी पोर्टल संचालन एवं उपयोग संबंधी अलग-अलग चार्जों का एक दिवसीय प्रशिक्षण 17 जुलाई से प्रारंभ है । जिला योजना अधिकारी एवं अतिरिक्त जिला जनगणना अधिकारी श्री नरेंद्र कुमार गौतम ने बताया कि यह प्रशिक्षण आगामी 28 जुलाई 2026 तक पीएम श्री शासकीय एमएलबी कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल में निर्धारित विभिन्न बैचों में आयोजित किया जा रहा है। प्रशिक्षण में जनगणना कार्य निदेशालय, मध्यप्रदेश भोपाल से आए प्रशिक्षक श्री भरतलाल गौर एवं सुश्री शालिनी वर्मा द्वारा जिले के समस्त ग्रामीण एवं नगरीय चार्ज अधिकारियों तथा उनके द्वारा नामित क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।

कलेक्टर ने किया आष्टा सिविल अस्पताल एवं नवीन कृषि उपज मंडी का निरीक्षण

मंडी में किसानों और व्यापारियों को मिलें बेहतर सुविधाएं

अस्पताल में आने वाले मरीजों को दी जाएं त्वरित और बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं - कलेक्टर

स्वास्थ्य सेवाओं एवं निर्माण कार्यों की समीक्षा कर दिए आवश्यक निर्देश

सीहोर ,(निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने आष्टा सिविल अस्पताल एवं आष्टा की नवीन कृषि उपज मंडी का निरीक्षण किया और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। आष्टा सिविल अस्पताल के निरीक्षण के दौरान उन्होंने अस्पताल के सभी वार्डों, ओपीडी, दवा वितरण केंद्र, प्रसूति कक्ष, आपातकालीन सेवाओं, जांच सुविधाओं तथा साफ-सफाई की व्यवस्था का निरीक्षण किया। कलेक्टर ने अस्पताल में भर्ती मरीजों को उपलब्ध कराई जा रही स्वास्थ्य सेवाओं, चिकित्सकों एवं स्वास्थ्य कर्मियों की उपलब्धता, दवाओं के स्टॉक तथा अन्य व्यवस्थाओं की जानकारी ली। उन्होंने अस्पताल परिसर में स्वच्छता बनाए रखने, मरीजों को समय पर उपचार उपलब्ध कराने तथा शासन की स्वास्थ्य योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। सीबीएमओ डॉ. अमित माथुर ने अस्पताल की व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी दी। कलेक्टर श्री बालागुरू के. नवीन कृषि उपज मंडी का निरीक्षण किया। कृषि उपज मंडी के कार्यालय अधीक्षक अरविंद झवर ने मंडी परिसर की व्यवस्थाओं से अवगत कराते हुए बताया कि मंडी में पेयजल एवं विद्युत आपूर्ति की स्थायी व्यवस्था के साथ-साथ दुकानों का निर्माण शीघ्र कराया जाना आवश्यक है। इस पर कलेक्टर ने मंडी परिसर में चल रहे निर्माण एवं विकास कार्यों का बारीकी से निरीक्षण किया तथा निर्मित एवं निर्माणाधीन भवनों, व्यापारिक सुविधाओं, किसानों के लिए उपलब्ध व्यवस्थाओं, सड़क, शेड, पेयजल, विद्युत एवं अन्य आधारभूत सुविधाओं की जानकारी ली। साथ ही निर्माण कार्यों की प्रगति की भी समीक्षा की। कलेक्टर ने निर्माण कार्यों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने के निर्देश देते हुए कहा कि सभी कार्य यथाशीघ्र पूर्ण किए जाएं तथा निर्माण में किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए। उन्होंने किसानों एवं व्यापारियों की सुविधा को प्राथमिकता देते हुए मंडी परिसर में आवश्यक मूलभूत सुविधाओं को शीघ्र विकसित करने के निर्देश दिए। साथ ही विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए मध्य प्रदेश विद्युत मंडल के अधिकारियों तथा पेयजल व्यवस्था के लिए नगर पालिका के अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

यूनिसेफ के सहयोग से डाइट बागरुल में तीन दिवसीय ईसीसीई प्रशिक्षण सफलतापूर्वक संपन्न

हरदा,(निप्र)। मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केंद्र, भोपाल द्वारा यूनिसेफ के सहयोग से सत्र 2026-27 हेतु पूर्व-प्राथमिक शिक्षा (ईसीसीई-अर्ली चाइल्डहूड केयर एण्ड एजुकेशन) विषय पर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट), बागरुल, जिला हरदा में आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शनिवार को समापन हुआ। प्रशिक्षण में जिले के विभिन्न सीएम राइज विद्यालयों, मॉडल स्कूलों एवं बाल वाटिकाओं से जुड़े शिक्षकों ने सहभागिता की। प्रशिक्षण के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप 3 से 6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के समग्र विकास, खेल-आधारित शिक्षण, गतिविधि आधारित अधिगम, भाषा एवं संज्ञानात्मक विकास तथा बाल-केंद्रित शिक्षण पद्धतियों पर विस्तृत मार्गदर्शन दिया गया। प्रशिक्षण का संचालन मास्टर ट्रेनर श्रीमती अर्चना भैंसारे एवं श्री नीरज बिल्लौरे द्वारा किया गया। प्रथम दिवस पर प्रतिभागियों का प्री-टेस्ट लेकर ईसीसीई की अवधारणा, उद्देश्य एवं अधिगम-विकास के पाँच डोमेन पर चर्चा की गई।

नर्मदापुरम में 6 घोड़े और धर्मध्वजा के साथ निकली रथयात्रा

नर्मदापुरम,(निप्र)। नर्मदापुरम में आषाढ़ शुक्ल द्वितीया पर गुरुवार को नर्मदापुरम में भगवान श्री जगन्नाथ की दो भव्य रथयात्राएं श्रद्धा और उत्साह के साथ निकाली गईं। पहली रथयात्रा डोंगरवाड़ा स्थित श्री जगन्नाथ मंदिर से निकली, जबकि दूसरी शाम 6:30 बजे शहर के प्राचीन श्री जगदीश मंदिर से प्रारंभ हुई। दोनों यात्राओं में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भगवान के रथ को अपने हाथों से खींचा और जय जगन्नाथ के जयघोष से पूरा शहर भक्तिमय हो उठा। श्री जगदीश मंदिर से निकली रथयात्रा में भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा रथ पर विराजमान रहे। सबसे आगे श्रद्धालु धर्मध्वजा लेकर चल रहे थे, जबकि छह सजे-धजे घोड़े आकर्षण का केंद्र बने। भजन, ढोल-नगाड़ों और जयकारों के बीच श्रद्धालु पूरे उत्साह से रथयात्रा में शामिल हुए। रथयात्रा जगदीश मंदिर से सेंट्रल बैंक, सराफा बाजार, मोरछली चौक और इंदिरा चौक होते हुए जनकपुरी पहुंची।

विधायक ने जल जीवन मिशन के प्रचार रथ को दिखाई हरी झंडी

ग्रामीणों में सुरक्षित पेयजल के प्रति जागरूकता का होगा व्यापक प्रसार

विदिशा,(निप्र)। जल जीवन मिशन के अंतर्गत शुक्रवार को विकासखंड विदिशा में योजना के व्यापक जन-जागरूकता एवं प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से प्रचार रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। क्षेत्रीय विधायक श्री मुकेश टंडन ने अपने निज निवास से प्रचार रथ को रवाना करते हुए कहा कि जल जीवन मिशन का उद्देश्य प्रत्येक ग्रामीण परिवार तक सुरक्षित एवं स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करना है। इसके लिए जनभागीदारी और जागरूकता अत्यंत आवश्यक है। प्रचार रथ के माध्यम से विकासखंड के

विभिन्न ग्रामों में भ्रमण कर ग्रामीणों को जल जीवन मिशन की प्रमुख गतिविधियों, हर घर नल से जल उपलब्ध कराने की व्यवस्था, पेयजल स्त्रोतों के संरक्षण, जल की गुणवत्ता, जल के विवेकपूर्ण उपयोग तथा जल संरक्षण के महत्व की जानकारी दी जाएगी। साथ ही लोगों को सुरक्षित पेयजल अपनाने एवं जल स्त्रोतों के संरक्षण के लिए प्रेरित किया जाएगा।

कार्यक्रम में बताया गया कि जन-जागरूकता अभियान के माध्यम से ग्रामीणों को जल जीवन मिशन के उद्देश्यों, योजनाओं एवं उनके लाभों से अवगत कराया जाएगा, जिससे योजना का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित हो सके। यह अभियान ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ एवं सुरक्षित पेयजल के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करने के साथ-साथ जल संरक्षण को जनआंदोलन का स्वरूप देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों, संबंधित विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों सहित स्थानीय नागरिकों की उपस्थिति रही। सभी ने जल संरक्षण एवं सुरक्षित पेयजल के महत्व का संदेश जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया।

विशेष लोक अदालत में 45 प्रकरणों का हुआ राजीनामे से निराकरण

1.23 करोड़ रुपये से अधिक की समझौता राशि

विदिशा,(निप्र)। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री शेख सलीम के मार्गदर्शन में आज शनिवार को 138 एन.आई. एक्ट (परक्राम्य लिखत अधिनियम) के अंतर्गत विशेष लोक अदालत का सफल आयोजन किया गया। व्यवहार न्यायाधीश वरिष्ठ खंड एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव श्री नितेन्द्र सिंह तोमर द्वारा प्रदान की गई जानकारी तदानुसार लोक अदालत का उद्देश्य चेक बाउंस से संबंधित मामलों का आपसी सहमति एवं समझौते के आधार पर त्वरित और सौहार्दपूर्ण निराकरण कर पक्षकारों को शीघ्र न्याय उपलब्ध कराना था।

विशेष लोक अदालत के सफल संचालन के लिए जिला एवं तहसील स्तर पर कुल 09 खंडपीठों का गठन किया गया था। इन खंडपीठों में न्यायालयों में लंबित तथा प्रीलिटीगेशन स्तर के मामलों की सुनवाई करते हुए पक्षकारों के बीच आपसी सहमति से समझौते कराए गए। लोक अदालत के दौरान संबंधित न्यायिक अधिकारी, अधिवक्तागण, बैंक प्रतिनिधि तथा पक्षकारों की सक्रिय उपस्थिति रही। सभी के सहयोग एवं सकारात्मक प्रयासों से बड़ी संख्या में प्रकरणों का सफलतापूर्वक निराकरण संभव हो सका।

विशेष लोक अदालत में न्यायालयों में लंबित एवं प्रीलिटीगेशन के कुल 45 प्रकरणों का आपसी राजीनामे के आधार पर निराकरण किया गया। इन मामलों में कुल 1 करोड़ 23 लाख 33 हजार 682 रुपये की समझौता राशि निर्धारित हुई, जिससे पक्षकारों को लंबे समय तक न्यायालयी प्रक्रिया से गुजरने की आवश्यकता नहीं रही। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने बताया कि लोक अदालतें न्याय प्राप्ति का सरल, सस्ता एवं प्रभावी माध्यम हैं। इनके माध्यम से पक्षकारों का समय, धन और श्रम बचता है तथा विवादों का सौहार्दपूर्ण एवं त्वरित समाधान संभव हो पाता है। प्राधिकरण ने नागरिकों से भविष्य में भी लोक अदालतों का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की है।

'एक पेड़ बेटी के नाम' अभियान के तहत हुआ पौधरोपण

हरदा ,(निप्र)। महिला एवं बाल विकास विभाग, जिला हरदा द्वारा संचालित 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' अभियान के अंतर्गत 'एक पेड़ बेटी के नाम' अभियान के तहत शुक्रवार को किशोर न्याय बोर्ड परिसर में पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में किशोर न्याय बोर्ड के प्रधान न्यायाधीश श्री संजीव राहंगडाले, बाल कल्याण समिति की सदस्य श्रीमती शिखा केशवरे, श्री प्रमोद पुरविया एवं श्रीमती स्वाति पाण्डेय ने पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ बालिकाओं के सम्मान और सशक्तिकरण का संदेश दिया।

यह विश्व कप का अंत नहीं, एक स्वर्णिम युग का सूर्यास्त है

क्रिस्टियानो रोनाल्डो और नेमार जूनियर ने अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल से विदाई के संकेत दे दिए हैं। फिर भी रोनाल्डो के प्रशंसक आज भी मुस्कुराकर कहते हैं कि उनकी 'जैविक उम्र' अभी भी 28 वर्ष की है। यह अतिश्योक्ति नहीं, बल्कि उस खिलाड़ी के प्रति प्रेम का प्रमाण है जिसने उम्र को कई बार चुनौती दी। अगला विश्व कप पुर्तगाल की धरती पर होगा। क्या वास्तव में रोनाल्डो वहाँ फिर दिखाई देंगे? शायद नहीं। लेकिन फुटबॉल की सबसे खूबसूरत बात यही है कि वह असंभव पर भी विश्वास करना सिखाती है।

स्मृति शेष

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

विश्व कप 2026 का परदा गिर चुका है। स्टेडियमों की रोशनी मंद पड़ गई है, लाखों कण्ठों की गूंज इतिहास के पन्नों में दर्ज हो चुकी है और विजेता का ताज स्पेन के सिर पर सजा है। लेकिन इस विश्व कप की सबसे बड़ी पहचान केवल एक नई चैंपियन टीम नहीं, बल्कि एक पूरे युग की विदाई है। यह वह विश्व कप है जहाँ फुटबॉल की सबसे चमकदार पीढ़ी ने आखिरी बार विश्व मंच पर अपने कदमों के निशान छोड़े। लियोनेल मेसी, क्रिस्टियानो रोनाल्डो, लुका मोड्रिच, नेमार जूनियर, मैनुअल नोयर, रॉबर्ट लेवान्डोव्स्की, लुइससुआरेज़, एंजेल डी मारिया, वर्जिल वैन डाइक, केविन डी ब्रूइने, मोहम्मद सलाह और सादियो माने जैसे दिग्गज अब विश्व कप के इतिहास का हिस्सा बन चुके हैं। इन खिलाड़ियों ने केवल रिकॉर्ड नहीं बनाए, बल्कि उन्होंने करोड़ों लोगों के बचपन, युवावस्था और सपनों को आकार दिया। आने वाले वर्षों में नई पीढ़ियाँ शायद उनसे बेहतर आँकड़े बना दें, लेकिन फुटबॉल केवल आँकड़ों का खेल नहीं है; वह भावनाओं का महासागर है, और इन खिलाड़ियों ने उसी महासागर में अमिट लहरें पैदा की हैं।

क्रिस्टियानो रोनाल्डो और नेमार जूनियर ने अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल से विदाई के संकेत दे दिए हैं। फिर भी रोनाल्डो के प्रशंसक आज भी मुस्कुराकर कहते हैं कि उनकी 'जैविक उम्र' अभी भी 28 वर्ष की है। यह अतिश्योक्ति नहीं, बल्कि उस खिलाड़ी के प्रति प्रेम का प्रमाण है जिसने उम्र को कई बार चुनौती दी। अगला विश्व कप पुर्तगाल की धरती पर होगा। क्या वास्तव में रोनाल्डो वहाँ फिर दिखाई देंगे? शायद नहीं। लेकिन फुटबॉल की सबसे खूबसूरत बात यही है कि वह असंभव पर भी विश्वास करना सिखाती है।

यदि इस विश्व कप को एक वाक्य में समेटना हो तो वह होगा–'स्पेन ने फुटबॉल नहीं खेली, फुटबॉल की परिभाषा बदल दी।' विश्व कप के 93 वर्षों के इतिहास में अनेक महान विजेता हुए, कई अपराजित अभियान भी दर्ज हुए, लेकिन जिस तरह स्पेन ने पूरे टूर्नामेंट में एक भी हार स्वीकार नहीं की और पूरे अभियान में केवल एकमात्र गोल अपने विरुद्ध होने दिया, वह आधुनिक फुटबॉल की अनुपम मिसाल बन गया। उनका खेल केवल पासिंग नहीं था, वह सामूहिक चेतना का प्रदर्शन था; केवल आक्रमण नहीं था, बल्कि अनुशासन का जीवंत उदाहरण था। प्रत्येक खिलाड़ी अपनी भूमिका निभा रहा था, मानो पूरी टीम एक ही आत्मा बनकर मैदान में उतरी हो। यही कारण है कि स्पेन केवल विश्व विजेता नहीं बना, बल्कि उसने आने वाले वर्षों के लिए फुटबॉल का नया मानक भी स्थापित कर दिया।

लेकिन स्पेन की इस विजयगाथा का सबसे उज्ज्वल अध्याय यदि किसी एक खिलाड़ी के नाम लिखा जाएगा, तो वह है–उनाई सिमोन। फुटबॉल की दुनिया अक्सर गोल करने वालों को देवता बना देती है, लेकिन गोल बचाने वाले प्रहरी इतिहास के हाशिए पर छूट जाते हैं। उनाई सिमोन ने इस अन्याय को अपनी प्रतिभा से तोड़ दिया। उनकी प्रत्येक बचत केवल एक शॉट रोकना नहीं थी, बल्कि पूरे स्पेन के सपनों को टूटने से बचाना था। जब विपक्षी आक्रमणकारी बिजली की गति से बढ़ते थे, तब सिमोन पर्वत की तरह अडिग खड़े रहते थे। उनके दस्तानों ने जितने गोल रोके, उससे कहीं अधिक उन्होंने अपनी टीम का आत्मविश्वास बचाया। वर्षों की तपस्या, अथक परिश्रम और लोहे जैसी मानसिक दृढ़ता ने अंततः उन्हें विश्व फुटबॉल के अमर नायकों की श्रेणी में ला खड़ा किया। ऐसे क्षण पर हिंदी फिल्म 'साहेब' बरबस याद आती है, जिसमें एक गोलकीपर के संघर्ष और उसके महत्व को अत्यंत मार्मिक ढंग से चित्रित किया गया था। फिल्म का संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है–मैदान में सबसे अधिक ताली भले स्ट्राइकर को मिले, लेकिन कई बार पूरी जीत उस व्यक्ति की होती है जो गोलपोस्ट के सामने अकेला खड़ा रहता है। स्पेन की विजय पर यदि किसी एक चेहरे की सबसे गहरी छाप रहेगी, तो वह उनाई सिमोन का चेहरा होगा।

विश्व कप जितना प्रतिभा का उत्सव रहा है, उतना ही वह विवादों की छाया से भी अछूता नहीं रहा। वर्षों से फुटबॉल जगत के एक बड़े वर्ग में यह प्रश्न बार-बार उठता रहा है कि क्या फीफा के कुछ निर्णयों में लोकप्रिय और प्रभावशाली टीमों को अनजाने या कभी-कभी कथित रूप से अधिक लाभ मिलता रहा है। विशेषकर अर्जेंटीना से जुड़े मुकाबलों के बाद अनेक विश्लेषकों, पूर्व खिलाड़ियों और प्रशंसकों ने रेफरी के कुछ निर्णयों पर सवाल खड़े किए हैं। यह कहना उचित नहीं होगा कि इन आरोपों का निर्णायक प्रमाण उपलब्ध है, लेकिन यह भी उतना ही सत्य है कि जब किसी संस्था पर निष्पक्षता को लेकर बार-बार प्रश्न उठने लगें, तो केवल सफाई देना पर्याप्त नहीं होता; विश्वास अर्जित करना पड़ता है। खेल का सबसे बड़ा पुरस्कार ट्रॉफी नहीं, बल्कि विश्वसनीयता है। यदि करोड़ों दर्शकों के मन में यह शंका जन्म लेने लगे कि किसी टीम के लिए नियमों की व्याख्या अलग और अन्य टीमों के लिए अलग है, तो यह केवल एक देश की जीत या हार का प्रश्न नहीं रह जाता, बल्कि पूरे खेल की आत्मा पर आघात बन जाता है। फीफा के लिए यह आत्ममंथन का विषय होना चाहिए कि भविष्य के विश्व कपों में निर्णय इतने पारदर्शी हों कि किसी भी प्रकार के पक्षपात की गुंजाइश ही समाप्त हो जाए।

अर्जेंटीना का फुटबॉल इतिहास जितना गौरवशाली है, उतना ही विवादास्पद अध्याय भी अपने भीतर समेटे हुए है। विरोधी टीमें वर्षों से यह आरोप लगाती रही हैं कि अर्जेंटीना ने कई अवसरों पर आक्रामकता और खेल भावना की सीमा के बीच की रेखा को धुंधला किया। सामरिक फाउल, समय नष्ट करना, रेफरी पर दबाव बनाना और मानसिक खेल–ये आरोप बार-बार चर्चा में आते रहे हैं। इस बहस का सबसे चर्चित प्रतीक 1986 विश्व कप का 'हैंड ऑफ गॉड' प्रकरण है। डिएगो माराडोना के हाथ से किया गया गोल रेफरी की नजर से बच गया और इतिहास का हिस्सा बन गया। बाद में स्वयं माराडोना ने उसे 'भगवान का हाथ' कहकर अमर कर दिया। फुटबॉल प्रेमियों के लिए यह घटना आज भी दो विरोधी भावनाओं का प्रतीक है–एक ओर प्रतिभा का विस्मय, दूसरी ओर निष्पक्षता पर प्रश्नचिह्न। यह भी सत्य है कि उस समय VAR जैसी तकनीक उपलब्ध नहीं थी, इसलिए उस निर्णय को आज की कसौटी पर नहीं परखा जा सकता। फिर भी इस घटना ने दशकों तक यह बहस जीवित रखी कि महान खिलाड़ी भी नियमों से ऊपर नहीं होने चाहिए। इतिहास का सम्मान तभी सार्थक है जब उससे सीख लेकर भविष्य को अधिक न्यायपूर्ण बनाया जाए।

विश्व कप 2026 ने हमें यह भी सिखाया कि समय किसी के लिए नहीं रुकता। जिन खिलाड़ियों को कभी 'भविष्य' कहा जाता था, वे आज 'इतिहास' बन चुके हैं। लेकिन इतिहास केवल स्मृतियों का संग्रह नहीं होता; वह प्रेरणा का स्रोत भी होता है। मेसी का जादू, रोनाल्डो का अनुशासन, मोड्रिच की विनम्रता, नेमार की कल्पनाशीलता, नोयर की निर्भीकता, लेवान्डोव्स्की की घातक फिनिशिंग और सलाह की गति आने वाली पीढ़ियों के लिए पाठशाला बनेंगी।

विश्व कप समाप्त हो गया है, लेकिन फुटबॉल का सफर कभी समाप्त नहीं होता। ट्रॉफियाँ संग्रहालयों में रख दी जाती हैं, पदक अलमारियों में सजा दिए जाते हैं, लेकिन महान खिलाड़ियों की कहानियाँ लोगों के दिलों में जीवित रहती हैं। स्पेन ने इतिहास जीत लिया, उनाई सिमोन ने सम्मान जीत लिया और विदा होते सितारों ने अमरत्व। यही विश्व कप की सबसे बड़ी विरासत है- कुछ आँसू, कुछ मुस्कानें, कुछ बहसें और अनगिनत यादें। समय आगे बढ़ जाएगा, नए नायक जन्म लेंगे, नई ट्रॉफियाँ उठेंगी, लेकिन 2026 का विश्व कप हमेशा उस टूर्नामेंट के रूप में याद किया जाएगा जहाँ एक युग ने अंतिम बार दुनिया को अपना जादू दिखाया और फिर चुपचाप इतिहास की किताब में उतर गया।

भूमि अधिग्रहण, मुआवजे को लेकर किसानों का भोपाल कूच रोका गया

आंसू गैस और वॉटर कैनन चली, किसान सड़क पर धरने पर बैठे

इंदौर। पश्चिमी रिंग रोड परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण और मुआवजे को लेकर सोमवार को इंदौर में बड़ा टकराव देखने को मिला। 39 गांवों के किसान ट्रैक्टरों और चार पहिया वाहनों के काफिले के साथ भोपाल कूच के लिए निकले थे। किसानों का उद्देश्य मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को चार गुना मुआवजे की मांग का ज्ञापन सौंपना था। लेकिन, शिप्रा थाना क्षेत्र के बरलाई गांव के पास पुलिस ने काफिला रोक दिया।

इसके बाद मौके पर माहौल तनावपूर्ण हो गया। हालात बिगड़ने पर पुलिस ने आंसू गैस के गोले छोड़े, वॉटर कैनन का इस्तेमाल किया और हल्का बल प्रयोग भी किया। इस दौरान कई किसानों को हिरासत में लिया गया। किसानों का आरोप है कि पश्चिमी रिंग रोड परियोजना के लिए उनकी उपजाऊ जमीन का अधिग्रहण मौजूदा बाजार मूल्य से काफी कम दरों पर किया जा रहा है। उनका आरोप है कि मुख्यमंत्री के चार गुना मुआवजे की घोषणा के बावजूद जमीन अधिग्रहण और अवॉर्ड की प्रक्रिया पहले ही पूरी कर ली गई, यह किसानों के साथ अन्याय है। किसानों ने गाइडलाइन दरों में वृद्धि और चार गुना मुआवजा लागू करने की मांग दोहराई।

सुबह से ही 39 गांवों के किसान 100 से अधिक ट्रैक्टरों और सैकड़ों वाहनों के साथ इंदौर पहुंचे। बरलाई गांव के पास पुलिस ने बैरिकेडिंग कर काफिले को रोक दिया। अधिकारियों ने किसानों को समझाने का प्रयास किया, लेकिन वे भोपाल जाने की जिद पर अड़े रहे। देखते ही देखते पुलिस और किसानों के बीच धक्का-मुक्की शुरू हो गई। स्थिति नियंत्रण से बाहर होती देख पुलिस ने पहले रेड चिली आंसू गैस के गोले दागे, फिर वॉटर कैनन चलाया। इसके बावजूद प्रदर्शन जारी रहने पर हल्का बल प्रयोग किया गया। कार्रवाई के बाद नाराज किसान सड़क पर ही धरने पर बैठ गए। आंदोलन का नेतृत्व कर रहे ऋषिराज सिसोदिया ने कहा कि जब तक किसानों को न्यायसंगत मुआवजा नहीं मिलेगा, तब तक आंदोलन जारी रहेगा और जरूरत पड़ी तो इसे प्रदेशव्यापी स्वरूप दिया जाएगा।

दतिया उपचुनाव

कांग्रेस कभी राजा-महाराजाओं से आगे नहीं बढ़ सकती

जीतू पटवारी के सामने चिल्लाया युवक तो हाथ जोड़कर आगे बढ़े

दतिया (नप्र)। मध्य प्रदेश के दतिया उपचुनाव में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी को अजीबोगरीब स्थिति का सामना करना पड़ा है। वह कांग्रेस प्रत्याशी घनश्याम सिंह के समर्थन में चुनाव प्रचार के लिए पहुंचे थे। प्रचार के दौरान एक युवक उनसे सवाल-जवाब करने लगा। इस दौरान युवक के सवालों का जवाब देना उनके सामने मुश्किल हो गया है।

जिगना गांव में प्रचार करने पहुंचे थे जीतू पटवारी- दतिया विधानसभा उपचुनाव प्रचार के दौरान रविवार की शाम जीतू पटवारी जिगना गांव पहुंचे थे। जिगना गांव में वह जनसभा के लिए जा रहे थे तो उन्हें एक युवक ने टोका। जीतू पटवारी अभिवादन करते हुए आगे बढ़ रहे थे, तभी युवक ने जोर से चिल्लाते हुए कहा कि कांग्रेस कभी राजा-महाराजाओं से आगे नहीं बढ़ सकती है। ये सच्चाई है।

युवक ने चिल्लाते हुए कहा कि जिसके नाम के आगे कुंवर और अंत में राजा हो, वह राजवाड़ा देखे। यह लोकतंत्र नहीं है। हालांकि युवक को चिल्लाता देखकर भी जीतू पटवारी नहीं रुके। वह सीधे मंच की ओर चले गए।

युवक करता रहा सवाल

वहीं, जीतू पटवारी जब मंच पर पहुंचकर लोगों को संबोधित करना शुरू किया तो भी युवक उनसे सवाल पूछता रहा है। इस पर जीतू पटवारी कहते हैं कि आप मेरे से बात कर सकते हैं लेकिन मेरे अधिकार पर लड़ नहीं सकते हैं। उन्हें (राजेंद्र भारती) हाईकोर्ट के चक्कर क्यों लगाने पड़े क्योंकि वह मुजरिम थे। युवक ने जीतू पटवारी को लताड़े हुए कहा कि अगर आप भारतीय संविधान की बात करते हो तो उसी तौर-तरीके से अपनी बात रखो।

हालांकि जीतू पटवारी के साथ बहस करने वाला युवक कौन है, इसकी पहचान नहीं हो सकी है। सोशल मीडिया पर उनके साथ सवाल-जवाब का यह वीडियो अब वायरल हो रहा है। इससे पहले भी जीतू पटवारी का वीडियो सामने आया था, जिसमें उन्होंने बीजेपी प्रत्याशी को अपने मंच पर बुला लिया था। कांग्रेस के मंच से ही बीजेपी प्रत्याशी आशुतोष तिवारी अपने लिए वोट मांगने लगे थे।

गौरतलब है कि दतिया ने कांग्रेस ने घनश्याम सिंह को प्रत्याशी बनाया है। घनश्याम सिंह राजपरिवार से आते हैं। 2023 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने राजेंद्र भारती को उम्मीदवार बनाया था। मगर बैंक फ्रॉड के मामले में उन्हें सजा हो गई और विधायकी चली गई। इसके बाद दतिया में उपचुनाव हो रहे हैं।

बांधवगढ़ में भूख से कमजोर हुए तेंदुए को वन विभाग ने बचाया

दांत घिसने से नहीं कर पा रहा था शिकार

उमरिया (नप्र)। जिले के प्रसिद्ध बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व की मगधी रेंज से वन विभाग की टीम ने एक कमजोर नर तेंदुए को सफलता पूर्वक रेस्क्यू किया है। नियमित गश्ती के दौरान रोहनिया बीट में वनकर्मियों को यह तेंदुआ असहाय हालत में मिला था। वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर रविवार को विशेष अभियान चलाकर तेंदुए को बिना किसी अतिरिक्त जोखिम के सुरक्षित रेस्क्यू कर इलाज के लिए भेजा गया।

रेस्क्यू के बाद बांधवगढ़ के वन्यजीव स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. तोमर ने तेंदुए का स्वास्थ्य परीक्षण किया। जांच में तेंदुए की उम्र लगभग 10 वर्ष आंकी गई। परीक्षण में पाया गया कि तेंदुए का निचला दाहिना कैनाइन (शिकारी) दांत पूरी तरह घिस चुका है, जबकि बाकी दांत भी काफी घिसे हुए थे। मुख्य दांत घिस जाने के कारण वह लंबे समय से शिकार नहीं कर पा रहा था, जिससे वह शारीरिक रूप से काफी कमजोर हो गया था।

वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में चला रेस्क्यू

इस पूरे रेस्क्यू ऑपरेशन के दौरान बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व के क्षेत्र संचालक अनुपम सहाय और मगधी वन परिक्षेत्र अधिकारी सचिन सिंह समेत वन अमला मौके पर मौजूद रहा। टीम ने पूरे तालमेल के साथ वैज्ञानिक तरीके से तेंदुए को रेस्क्यू किया।

पार्क के अंदर सुरक्षित स्थान पर चल रहा इलाज

क्षेत्र संचालक अनुपम सहाय ने बताया, तेंदुए को पार्क के भीतर ही एक सुरक्षित स्थान पर रखा गया है, जहां विशेषज्ञ चिकित्सकों की देखरेख में उसका उपचार जारी है। जंगल में किसी भी बीमार या घायल वन्यजीव की सुरक्षा और देखभाल हमारी पहली प्राथमिकता है।

बांधवगढ़ में वाइल्डलाइफ मॉनिटरिंग

बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व अपने बाघों और वन्यजीवों की सघन निगरानी के लिए जाना जाता है। रोहनिया और मगधी रेंज जैसे इलाकों में रोजाना पैदल गश्ती की जाती है। इसी सतर्कता का नतीजा रहा कि समय रहते इस बुजुर्ग तेंदुए की शारीरिक स्थिति भांप ली गई और उसे भूखा मरने से पहले सुरक्षित रेस्क्यू कर लिया गया।

भोपाल में ई-बसों का ट्रायल शुरू

बैरागढ़ से तीन रूट पर दौड़ी; अगले 5 दिन तक चलेगी

भोपाल (नप्र)। भोपाल में ई-बसों का ट्रायल रन शुरू हो गया है। सोमवार सुबह से बैरागढ़ स्थित डिपो से ई-बसें निकली और 3 रूट पर दौड़ने लगी। अगले 5 दिन तक बसें सड़कों पर दौड़ेंगी। अगस्त में आम लोगों के लिए बसें चलने लगेगी। एक दिन पहले रविवार को जगदीशपुर में हुई कैबिनेट में इन्हीं 3 ई-बसों के जरिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, मंत्री और सीनियर अधिकारी पहुंचे थे। ट्रायल के दौरान बसों के संचालन, रूट की व्यवहारिकता, चार्जिंग व्यवस्था और तकनीकी खामियों की जांच की जा रही है। यह ड्राय रन होने से यात्रियों के लिए सफर की मनाही है। हालांकि, पार्षदों को बैठाकर ट्रायल रन में शामिल किया जाएगा।

ऐसे होगा संचालन- ट्रायल के दौरान बसों का संचालन दो शिफ्ट में किया जा रहा है। पहली शिफ्ट सुबह 8 से दोपहर 12 बजे तक रही। दूसरी शिफ्ट दोपहर 2 से शाम 6 बजे तक रहेगी।

पुराने भोपाल से कोलार तक जुड़ेगा रूट- इलेक्ट्रिक बसें बैरागढ़ डिपो से पुराने भोपाल होते हुए बोर्ड ऑफिस तक ले जाया जा रहा है। यहां से बसें भोपाल रेलवे स्टेशन (प्लेटफॉर्म नंबर-1) और कोलार के बैरागढ़ चीचली रूट तक चलेंगी। ट्रायल के दौरान इन मार्गों पर बस संचालन में आने वाली दिक्कतों और यातायात दबाव का आकलन किया जा रहा है।

राजनीति में अनिश्चितता, बयानबाज़ी में स्थिरता

मध्य प्रदेश की राजनीति इन दिनों अजीब दौर से गुजर रही है, यहां अनिश्चितता ही सबसे बड़ी निश्चितता बन गई है। कोई अपने बीते संघर्षों की कहानी सुना रहा है, तो कोई भविष्य की चिंता को 'संतोष' की चादर से ढकने की कोशिश में लगा है। पूर्व मुख्यमंत्री और अब केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने हाल ही में अपने संस्मरणों का पिटारा खोलते हुए बताया कि एक समय ऐसा भी आया जब उन्हें लगा कि उनका राजनीतिक कॅरियर समाप्ति की ओर है। तभी दिल्ली से 'आत्मीयता भरा फोन' आया और उन्हें याद दिलाया गया कि वे सिर्फ मुख्यमंत्री नहीं, 'अपने' शिवराज हैं। राजनीति में यह 'अपनेपन' का एहसास बड़ा दिलचस्प होता है, जब तक फोन आता है, तब तक आत्मीयता, और फोन न आए तो 'अनिश्चितता'। दूसरी ओर, पूर्व मंत्री नरोत्तम मिश्रा ने दतिया उपचुनाव में टिकट कटने के बाद जो संतोष का दर्शन दिया, वह भी कम अद्भुत नहीं। उन्होंने बड़े सहज भाव से कहा- पार्टी ने छह बार विधायक बनाया, 15 साल मंत्री रखा, अब और क्या चाहिए? यानी राजनीति में अब 'टिकट कटना' भी एक तरह की उपलब्धि बनती जा रही है–जैसे कोई कहे, 'बहुत खेल लिए, अब दर्शक दीर्घा में बैठकर तालियां बजाते हैं।'

मोहन का मंत्रालय
आशीष चौधरी

पुराना टेप, नई ठिठोली

विधानसभा के पावस सत्र की शुरुआत भी कम मनोरंजक नहीं रही। कभी बीजेपी के दिग्गज रहे और अब कांग्रेस के विधायक बने भंवर सिंह शेखावत जब किसानों की समस्याओं पर बोल रहे थे, तो संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने तंज कसते हुए कह दिया– 'पुराना टेप बज रहा है।' अब राजनीति में 'पुराना टेप' कहना भी बड़ा जोखिम भरा है, क्योंकि यहां हर नेता के पास अपने-अपने 'रिकॉर्ड' सुरक्षित रहते हैं। विजयवर्गीय ने तो यहां तक कह दिया कि यह वही कैसेट है जो अटक कर बार-बार हमें तुम से 'प्यार ...प्यार ...प्यार...' गाती रहती है। सदन ठहाकों से गूंज उठा, लेकिन शेखावत ने भी पलटवार में याद दिला दिया–किसानों की समस्या पुरानी है, और सरकार भी। यानी राजनीति में गाने चाहे पुराने हों, लेकिन 'सुर' अब भी वही हैं–बस गायक बदलते रहते हैं।

रिटायरमेंट संकट का सबसे सुरक्षित कवच

सरकारी गलियारों में एक और दिलचस्प कहानी घूम रही है। एक वरिष्ठ आईएएस अधिकारी पर केंद्रीय योजना में लापरवाही के आरोप लगे, लेकिन उनका 'रिटायरमेंट' पास आ गया और मामला ठंडे बस्ते में चला गया। राजनीति और नौकरशाही में रिटायरमेंट अब सिर्फ सेवा का अंत नहीं, बल्कि कई बार जवाबदेही से मुक्ति का उत्सव भी बन जाता है। मंत्री पर कार्रवाई हो जाती है, विभाग छिन जाता है, लेकिन अधिकारी 'सम्मानपूर्वक विदाई' की ओर बढ़ते रहते हैं। इसे कहते हैं– 'टाइमिंग का कमाल'।

70 पार का इशारा या विदाई का इश्तिहार?

सरकार के एक वरिष्ठ मंत्री ने भाषण के दौरान अचानक अपनी उम्र का जिक्र कर दिया। अब राजनीति में कोई नेता अपनी उम्र यूं ही नहीं बताता–यह अक्सर 'संकेतों की भाषा' होती है। मध्य प्रदेश की राजनीति में 70 की उम्र पार नेताओं की संख्या कम नहीं है। सवाल यह है कि आगामी विधानसभा चुनाव में पार्टी उन्हें 'अनुभव' के नाम पर आगे रखेगी या 'युवा जोश' के नाम पर किनारे करेगी? सूत्र बताते हैं कि मंत्री का यह बयान सिर्फ व्यक्तिगत भाव नहीं था, बल्कि एक सामूहिक संदेश था–उन सभी नेताओं के लिए, जो उम्र के इस पड़ाव पर खड़े होकर टिकट की अनिश्चितता से जूझ रहे हैं।